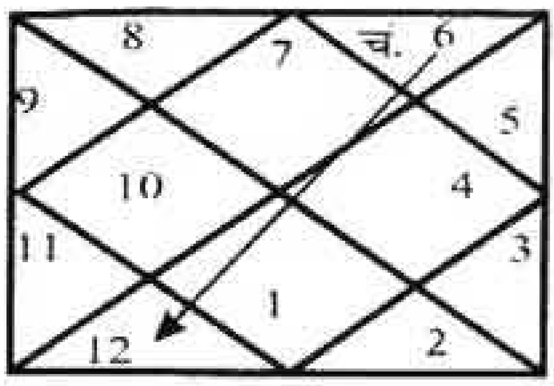


राशि अपनी शत्रु राशि में होगा। ऐसा जातक प्राय: नेत्र रोगी होता है, खासकर बांयी आंख कमजोर होगी। 'राजभंग योग' के कारण जातक मान-प्रतिष्ठा, नौकरी-व्यवसाय, पिता राजनीति, शासन व कोर्ट-कचहरी द्वार कष्ट-अपमान व परेशानियों का अनुभव करता है।

दृष्टि—द्वादश चंद्रमा की दृष्टि छठे भाव (मीन राशि) पर होगी। फलत: जातक रोग व शत्रु पक्ष से पीड़ित रहेगा।

निशानी—व्यक्ति चतुर होने पर भी सदा चिन्तित रहता है, पर यात्राओं में धन अर्जित करने में कुशल होता है। विदेश यात्रा करता है।

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक शासन से, राजनीति से सम्बन्धित कार्यों में कष्ट पाता है।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. तुलालग्न के द्वादश स्थान में चंद्र के साथ गुरु यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर यह दोनों शुभ ग्रह चतुर्थ भाव, षष्टम स्थान एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे तथा 'पराक्रमभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि भी करेंगे फलत: गजकेसरी योग की यहां ज्यादा सार्थकता नहीं है। फिर भी सुख में वृद्धि होगी। शत्रुओं का नाश होगा तथा जातक का दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा। जातक को संघर्ष के बाद सफलताएं मिलती रहेंगी जो कि सफल जीवन के लिए बहुत जरूरी है।
2. चंद्र के साथ सूर्य होने से तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति द्वादश स्थान में होने के कारण जातक का जन्म आश्विनी कृष्ण अमावस्या सुबह 8 बजे के लगभग होगा। सूर्य+चंद्र की कन्या राशिगत द्वादश स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। चंद्रमा बारहवें होने से 'राजभंग योग' तथा सूर्य का बारहवां होने से 'लाभभंग योग' की सृष्टि होती है। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। जातक को राज्य (सरकारी नौकरी) की प्राप्ति हेतु एवं व्यापार-व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति हेतु जीवन भर संघर्ष करना पड़ेगा।
3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो इस युति के कारण पारिवारिक सुखों में हानि होगी।

4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो यहां बुध उच्च का होगा। जातक का भाग्य यात्राओं से चमकेगा। ट्रांसपोर्ट, ट्रेवल ऐजेन्सी व कोरियर के व्यवसाय में लाभ होगा।

5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो जातक के अन्य स्त्रियों के साथ यौन सम्बन्ध, कभी लाभ, कभी हानि की स्थिति रहेगी। शुक्र यहां नीच का होने से गुप्त रोगों की शल्य चिकित्सा भी सम्भव है।

6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो जातक को शिक्षा एवं सन्तान सुख में बाधा महसूस होगी।

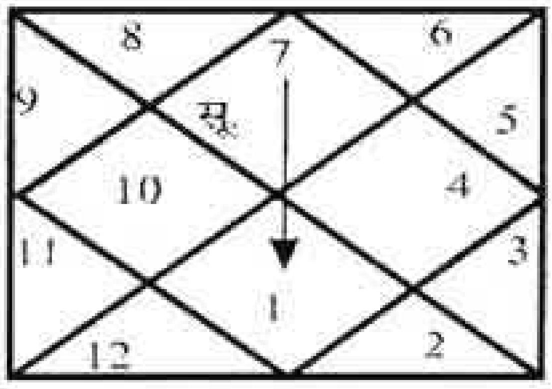
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो यहां यह युति शुभ है। जातक ऊर्जावान होगा व देश-विदेश में ख्याति अर्जित करेगा।

8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो जातक ईर्ष्यालु व झगड़ालू स्वभाव का होगा।

❑❑❑

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में



तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलप्रद है। लग्नस्थ सूर्य यहां तुला राशि में है। तुला राशि सूर्य की नीच राशि है। यहां सूर्य 10 अंशों तक परम नीच का होता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार तुलालग्न में यदि सूर्य, बुध और शुक्र लग्नस्थ हो तो जातक भाग्यशाली व धनवान होता है। यहां सूर्य अपनी राशि से तीसरे स्थान पर है अत: जातक पराक्रमी होगा, पर थोड़ा रूखा एवं उष्ण स्वभाव का होगा तुला राशिगत सूर्य की दृष्टि सातवें भाव (मेष राशि) पर होगी जो कि उसकी उच्च राशि है फलत: जातक का ससुराल सम्पन्न व प्रतिष्ठित होगा। जातक स्वयं प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा।

निशानी–जातक की देह पर कम बाल होंगे।

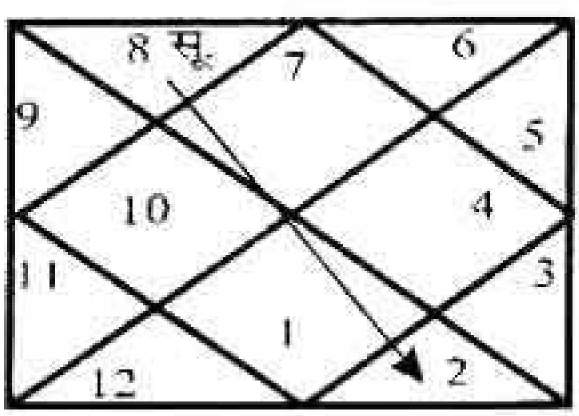
दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा लाभकारी व उन्नतिदायक साबित होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। प्रथम स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां नीच का है। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। जहां सूर्य उच्च राशि स्थित है। फलत: जातक बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होगा। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। बुध के लग्न में स्थित होने में 'कुलदीपक योग' बना। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। इस कारण अपनी जाति, कुटुम्ब, परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

2. तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान में होने पर जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को प्रात: 6 से 8 बजे के मध्य होगा। सूर्य+चंद्र की तुला राशिगत प्रथम स्थान में यह युति वस्तुत: दशमेश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है, जबकि लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से सूर्य अशुभ फलदायक है। सूर्य लग्न में नीच राशि का भी है जातक को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी। फिर भी जातक पराक्रमी होगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।
3. **सूर्य + मंगल**–लाभेश सूर्य के साथ धनेश, सप्तमेश मंगल, ससुराल से लाभ की प्राप्ति, व्यापार से लाभ की प्राप्ति कराने में सहायक है।
4. **सूर्य + बृहस्पति**–लाभेश सूर्य की षष्टेश (पापी) बृहस्पति के साथ युति कष्टदायक है।
5. **सूर्य + शुक्र**–यहां 'नीचभंग राजयोग' बना। क्योंकि शुक्र स्वगृही है। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक बुद्धिमान होगा एवं उच्चविद्या प्राप्त करेगा।
6. **सूर्य + शनि**–यहां 'नीचभंग राजयोग' बना। क्योंकि शनि उच्च का है, ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। यहां शनि राजयोग कारक होने से यह युति बहुत लाभप्रद है।
7. **सूर्य + राहु**–राहु सूर्य के तेज को नष्ट करता है। जातक निरंकुश होगा।
8. **सूर्य + केतु**–केतु के साथ सूर्य निर्बल होगा।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में



तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। तुलालग्न के द्वितीय स्थान में सूर्य वृश्चिक राशि में है। वृश्चिक राशि सूर्य की मित्र राशि है। सूर्य लाभेश होकर धन स्थान में होने से धन संग्रह में सहायक है। ऐसा जातक सब कार्य में सिद्धि पाने वाला धर्मात्मा व सुखी होता है।

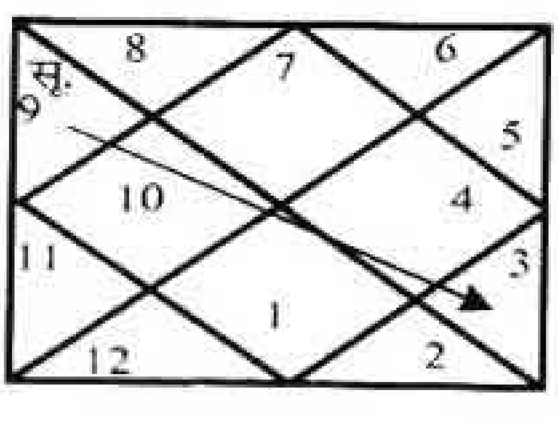
दृष्टि–सूर्य की दृष्टि अष्टम भाव (वृष राशि) पर होने से जातक निरोगी होगा एवं कर्मशील होगा। कार्य करने में भरपूर विश्वास रखेगा।

दशा–सूर्य की दशा जातक को धनवान बनाएगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। द्वितीय स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिशाली व धनवान होगा। जातक में रोग व शत्रु से लड़ने की शक्ति होगी। जातक भाग्यशाली भी होगा तथा समाज के लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्तियों में जातक का नाम होगा।
2. तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वितीय स्थान में होने पर जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व प्रात: 5 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की वृश्चिक राशिगत द्वितीय स्थान में यह युति वस्तुत: दशमेश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है, जबकि लग्नेश शुक्र का शत्रु होने के कारण सूर्य प्रतिकूल है। चंद्रमा यहां नीच का होगा। ये दोनों ग्रह यहां धन हानि देने वाले हैं। अष्टम स्थान (वृष राशि) पर इनकी दृष्टि जातक के जीवन में रोग उत्पन्न कराने वाली है तथा आयु के लिए अनिष्ट सूचक है।
3. **सूर्य + मंगल**–मंगल यहां स्वगृही होगा। फलत: जातक को ससुराल से धन लाभ होगा। जातक को व्यापार से लाभ होगा। जातक धनी होगा।
4. **सूर्य + बृहस्पति**–जातक पराक्रमी होगा पर धीमी गति से कमाएगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–जातक धनी होगा एवं संघर्षशील रहेगा।
6. **सूर्य + शनि**–जातक बहुत पैसे वाला होगा पर भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य + राहु**–धन की स्थिति कष्टदायक होगी।
8. **सूर्य + केतु**–धन को लेकर संघर्ष बना रहेगा।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में



तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। तुलालग्न के तृतीय स्थान में सूर्य धनु का होगा। यह इसकी मित्र राशि है। ऐसे व्यक्ति परिश्रमी एवं निर्भीक होते हैं। यहां सूर्य की स्थिति अपनी सिंह राशि से पंचम

स्थान पर होने से जातक को धन, पद, प्रतिष्ठा, वीरता, पराक्रम एवं उत्तम भवन, मित्रों की प्राप्ति कराता है। पाराशर ऋषि कहते हैं-'धनी भ्रातृसुखोपेत: शूलरोगभय क्व्चित्' ऐसे जातक को भाईयों का सुख रहता है। जातक धनी होता है पर कभी-कभी शूल रोग से पीड़ित रहता है।

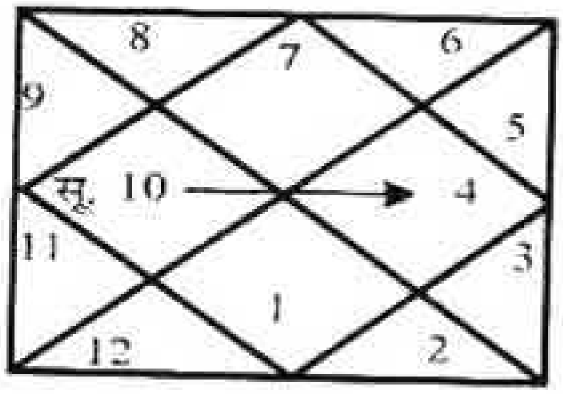
दृष्टि–धनु राशिगत सूर्य की दृष्टि भाग्य स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु में होगा।

दशा–सूर्य की दशा उन्नतिदायक रहेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**-भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। तृतीय स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह नवम भाव को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान, पराक्रमी एवं भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा। जातक को जीवन में परिजनों व मित्रों का सहयोग मिलता रहेगा। मित्रों के सहयोग से जातक का भाग्योदय होगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **सूर्य + चंद्र**-तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति तृतीय स्थान में होने पर जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व रात्रि 3 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की धनु राशिगत तृतीय स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है, जबकि शुक्र का शत्रु होने के कारण सूर्य प्रतिकूल है। ये दोनों अग्नि संज्ञक राशि में होने से तृतीय स्थान के शुभ फल को नष्ट करेंगे पर इनकी दृष्टि भाग्य स्थान पर शुभ है। ऐसे जातक को भाई-बहन दोनों का सुख रहेगा।
3. **सूर्य + मंगल**–मित्रों से, भाईयों की मदद से बिगड़े कार्य सुधरेंगे।
4. **सूर्य + बृहस्पति**–जातक को बड़े भाई का सुख मिलेगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–मित्रों से लाभ रहेगा।
6. **सूर्य + शनि**–जातक के मित्र सम्पन्न होंगे। पुत्र उत्पत्ति के बाद जातक का पराक्रम बढ़ेगा। छोटे-बड़े भाईयों की मृत्यु के लिए ग्रह स्थिति जिम्मेदार है।
7. **सूर्य + राहु**–भाईयों से धोखा होगा। राज्यपक्ष से भी धोखा होगा।
8. **सूर्य + केतु**–मित्र दगा देंगे। बड़े भाई की मृत्यु हेतु यह स्थिति जिम्मेदार है।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में



तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। चतुर्थ स्थान में सूर्य मकर राशि में होने से शत्रुक्षेत्री होगा। इस स्थान में सूर्य अपनी राशि में छठे स्थान पर होने से सुखों में कमी कराएगा। ऐसे जातक को माता के सुख में कमी व भूमि सुख में विवाद की स्थिति रहती है। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

दृष्टि–मकर राशिगत सूर्य की दृष्टि राज्य स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलत: जातक को साधारण नौकरी मिलेगी।

निशानी–जातक को उच्च रक्तचाप होगा या किराए के मकान में रहेगा।

दशा–सूर्य की दशा संघर्षमय रहेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

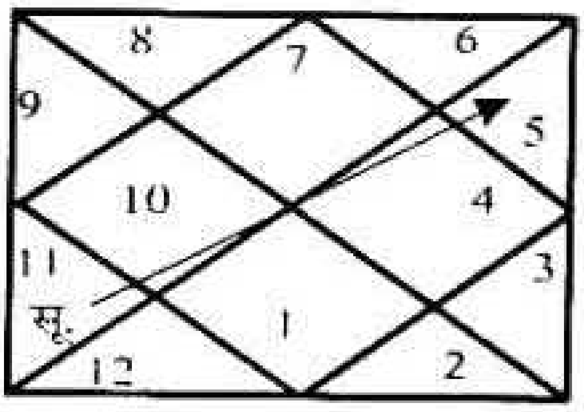
1. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। चतुर्थ स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां पर शत्रुक्षेत्री होगा। बुध केन्द्र में होने से 'कुलदीपक योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिशाली होगा। उसे माता की संपत्ति मिलेगी। उसे उत्तम वाहन सुख, उत्तम मकान का सुख भी मिलेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति चतुर्थ स्थान में होने पर जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि 12 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की मकर राशिगत चतुर्थ स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है, पर सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होने से अशुभ फलदायक है। ऐसे जातक को माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी। भले ही वह सम्पत्ति ज्यादा मात्रा में न हो। ऐसे जातक के जीवन में वाहन दुर्घटना के द्वारा विकलांग होने का भय रहता है।

3. **सूर्य + मंगल**–यहां मंगल उच्च का होने से सूर्य बलवान होकर 'राजयोग' बनायेगा। 'रूचक योग' के कारण जातक धनवान होगा। राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

4. **सूर्य + बृहस्पति**–षष्टेश गुरु यहां नीच का होगा। फलत: अशुभ फलों में वृद्धि होगी।
5. **सूर्य + शुक्र**–लग्नेश केन्द्र में होने से 'कुलदीपक योग' बनेगा परन्तु शुभ ग्रह के साथ होने से सुख प्राप्ति हेतु संघर्ष की स्थिति रहेगी।
6. **सूर्य + शनि**–शनि यहां स्वगृही होगा। 'शश योग' बनाएगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य भोगेगा, पर वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
7. **सूर्य + राहु**–जातक मस्तिष्क रोगी, एकान्तवासी, पैतृक सम्पत्ति से हीन होगा।
8. **सूर्य + केतु**–जातक को पिता का सुख कम मिलेगा। सिर दर्द की शिकायत रहेगी।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में



तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। यहां पंचमस्थ सूर्य कुंभ राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। परन्तु अपनी सिंह राशि से सातवें स्थान पर होकर अपने ही घर लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक को धन, पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, मकान व संतान का सुख मिलेगा। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसे जातक के पुत्र सुखी एवं विद्वान होते हैं। जातक स्वयं सुशील, धर्मात्मा एवं सुखी होता है।

निशानी–पुत्र सन्तति जरूर होगी।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

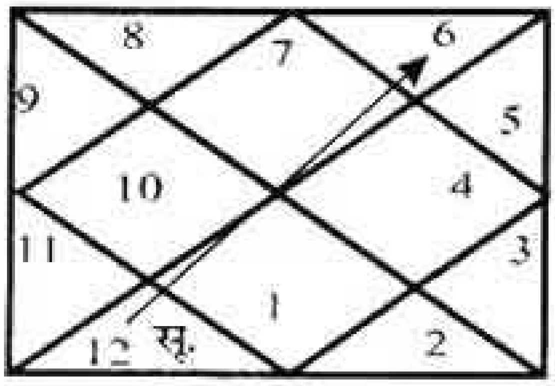
सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। पंचम स्थान में कुम्भ राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां पर शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान को देखेंगे। जो कि कन्या सन्तति की अधिकता रहेगी पर सूर्य की कृपा से एक पुत्र भी होगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति पंचम स्थान में होने पर जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को रात्रि 10 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की कुंभ राशिगत पंचम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है, जबकि

सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होने से अशुभ फलदायक है। ऐसे जातक सन्तति का क्षरण होता है या मृत सन्तति हाथ लगती है।

3. **सूर्य + मंगल**–मंगल साथ होने से गुप्त शत्रु पीड़ा पंहुचाएंगे।
4. **सूर्य + बृहस्पति**–एकाध पुत्र सन्तति की अकाल मृत्यु सम्भव है।
5. **सूर्य + शुक्र**–प्रथम सन्तति के बाद उन्नति होगी।
6. **सूर्य + शनि**–जातक को पुत्र व कन्या दोनों सन्तति होंगी।
7. **सूर्य + राहु**–भृगुसूत्र के अनुसार -''सर्पशापात् सुत: क्षय'' सर्पदोष से पुत्र सन्तति नष्ट होगी।
8. **सूर्य + केतु**–भृगुसूत्र के अनुसार - ''सर्पशापात् सुत: क्षय'' सर्पदोष से पुत्र सन्तति नष्ट होगी।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति षष्ट्म स्थान में



तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। यहां छठे स्थान में सूर्य मीन राशि का होगा। अपनी मित्र राशि में होगा। फिर भी 'लाभभंग योग' के कारण जीवन में उन्नति, लाभ की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

दृष्टि–मीन राशिगत सूर्य की दृष्टि व्यय भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलत: रोग में रुपया खर्च होगा। यदि जातक को कोई रोग नहीं है तो ईर्ष्या, राग-द्वेष के कारण, अहम् की प्राप्ति हेतु रुपया खर्च करेगा।

निशानी–ऋषि पाराशर के अनुसार 'लभ्ययाप्रश्च भवेतु दीर्घ प्रथमें मरण स्त्रिय:' जातक की स्त्री का मरण उसके समक्ष होगा अथवा जातक शत्रुओं से पीड़ित रहेगा। स्व जाति में शत्रुओं की बाहुल्यता रहेगी।

दशा–सूर्य की दशा अनिष्ट सूचक नहीं होगी। परन्तु जातक को जमीन-जायदाद का लाभ कराएगी।

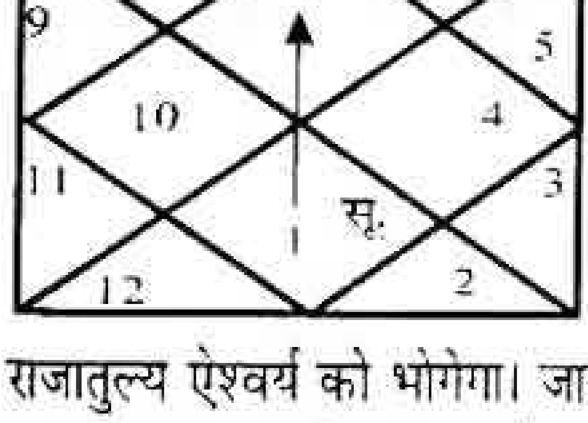
सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**-भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। छठे स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को देख रहे हैं। फलत: जातक बुद्धिशाली होगा व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। सूर्य छठे

जाने से 'लाभभंग योग' तथ बुध के छठे जाने से 'भाग्यभंग योग' बना। फलत: यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। व्यापार में लाभ के प्रति जातक शंकित रहेगा। व्ययेश छठे जाने से विमल योग बना इस योग के कारण जातक समाज का लब्ध व्यक्ति होगा।

2. **सूर्य + चंद्र**-तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति छठे स्थान में होने पर जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को रात्रि 8 बजे के आस पास होगा। सूर्य+चंद्र की मीन राशिगत षष्टम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। चंद्रमा खड्डे में जाने से 'राजभंग योग' तथा सूर्य के खड्डे में जाने से 'लाभभंग योग' बना। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। जातक को राज्य प्राप्ति (सरकारी नौकरी) एवं व्यापार-व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **सूर्य + मंगल**–धन व गृहस्थ सुख में लगातार कमी रहेगी।
4. **सूर्य + बृहस्पति**–पराक्रम भंग होगा। मित्रों व रिश्तेदारों से धोखा मिलेगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
6. **सूर्य + शनि**–पुत्र सन्तति में बाधा। भौतिक सुख में लगातार बाधा मिलेगी।
7. **सूर्य + राहु**–लाभ प्राप्ति में रुकावट, रोग में वृद्धि व राज्यसुख मिलेगा।
8. **सूर्य + केतु**–व्यापार में हानि सम्भव।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में



तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। यहां सूर्य सप्तम भाव में मित्र राशि में बैठकर उच्च का होगा। यहां सूर्य दस अंशों तक परमोच्च का होगा। फलत: कुण्डली में 'रविकृतभंग योग' बना। फलत: जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक महान बुद्धिमान, ज्ञानी एवं दार्शनिक होगा। ऐसा जातक ससुराल से लाभ पाने वाला, विवाह के पश्चात् उन्नति को प्राप्त करता है।

दृष्टि–सप्तमस्थ सूर्य की दृष्टि लग्न भाव (तुला राशि) पर होगी फलत: जातक अपने स्वयं के पराक्रम व पुरुषार्थ से उन्नति प्राप्त करेगा, अपने आगे बढ़ने का मार्ग स्वयं बनाएगा पर स्वार्थी व लम्पट होगा।

निशानी–'भोजसंहिता' के अनुसार-''कामीजनो भार्याविशानुग:'' ऐसा जातक

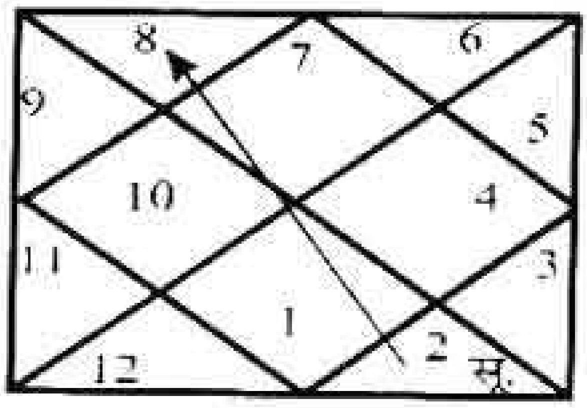
अति कामी होगा। कामाग्नि तृप्त नहीं होगी। जातक सदैव पत्नी की आज्ञा (वश) में रहेगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। जातक उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। सप्तम स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुतः लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर सूर्य उच्च का होगा तथा दोनों ग्रह लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिशाली व भाग्यशाली होगा। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। 'कुलदीपक योग' एवं 'रविगत राजयोग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा एवं सरकारी क्षेत्र में उच्च पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति करेगा।
2. तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति सप्तम स्थान में होने पर जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को सूर्यास्त के समय होगा। सूर्य+चंद्र की मेष राशिगत सप्तम स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां उच्च का है अतः 'रविकृत योग' बना रहा है। चंद्रमा राज्येश होकर उच्चाभिलाषी है। जातक महत्वाकांक्षी होगा एवं राजातुल्य ऐश्वर्य व राजलक्ष्मी को भोगेगा।
3. **सूर्य + मंगल**–सूर्य के साथ मंगल होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। इससे अधिक और क्या? ऐसा जातक अति घमण्डी एवं अमानवीय व्यवहार से ओत प्रोत रहेगा।
4. **सूर्य + बृहस्पति**–षष्टेश गुरु की सूर्य से युति के कारण जातक को गुप्त रोग एवं गुप्त शत्रु पीड़ा पहुंचाएंगे।
5. **सूर्य + शुक्र**–शुक्र के कारण 'कुलदीपक योग', 'लग्नाधिपति योग' बनेगा। जातक जाति व समाज में नामचीन व्यक्ति, एक सफल व्यक्ति होगा, परन्तु अति कामुकता के कारण उसे गुप्त रोग रहेगा।
6. **सूर्य + शनि**–यहां 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि होगी। जातक निश्चय ही धनी एवं बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा पर पत्नी के लिए समर्पित नहीं होगा।
7. **सूर्य + राहु**–ऐसा जातक अपने जीवन साथी के प्रति अव्यवहारिक होगा। अमानवीय दृष्टिकोण रहेगा।
8. **सूर्य + केतु**–जीवन साथी से विचार नहीं मिलेंगे।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में



तुलालग्न में सूर्य लाभेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। यहां सूर्य वृष राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। यह 'लाभभंग योग' बनाएगा। सूर्य की दृष्टि धन भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। ऐसा जातक दुर्बल, रुग्ण व रोगी होगा। व्यापार में लाभ की कमी एवं हृदय में उत्साह की कमी रहेगी। प्रत्येक कार्य में हानि की सम्भावना अधिक रहेगी।

निशानी–पाराशर ऋषि के अनुसार 'तस्य आयुश्च भवेतु दीर्घ प्रथमे मरणं स्त्रिय:' जातक की स्त्री का मरण उसके समक्ष होगा। जातक स्वयं दीर्घजीवी होगा।

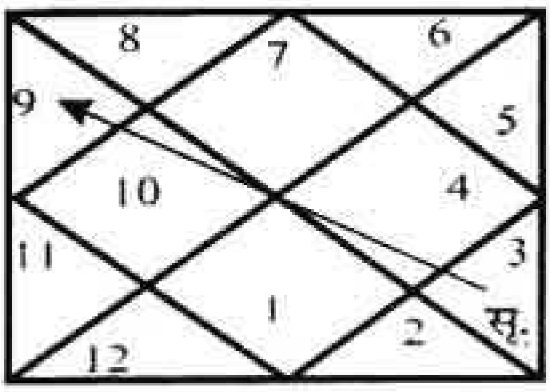
दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा अशुभ फल देगी। बचाव अनिवार्य है।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। अष्टम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह 'धन भाव' को देखेंगे। सूर्य आठवें जाने से 'लाभभंग योग' तथा बुध आठवें जाने से 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि होगी। फलत: यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिशाली होगा। भाग्यशाली भी होगा परन्तु भाग्योदय हेतु संघर्ष बहुत करना पड़ेगा। व्यापार-व्यवसाय में लाभ के प्रति भी जातक आशंकित रहेगा। व्ययेश आठवें जाने से 'विमल योग' बना अत: जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति अष्टम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को सायंकाल 4 बजे के लगभग होगा। सूर्य+चंद्र की वृष राशिगत अष्टम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। सूर्य के खड्डे में गिरने से 'राजभंग योग' बना। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। हालांकि चंद्रमा यहां उच्च का होगा। जातक को राज्य (सरकारी नौकरी) प्राप्ति एवं व्यापार-व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति हेतु जीवन भर संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **सूर्य + मंगल**–पत्नी से उग्र विवाद, तलाक (बिछोह), मुकदमा बाजी की सम्भावना रहेगी।

4. **सूर्य + बृहस्पति**–'हर्ष योग' के कारण दुर्घटना से बचाव सम्भव पर दुर्घटना जरूर होगी।
5. **सूर्य + शुक्र**–पैर में चोट, रोग, कष्ट की प्राप्ति सम्भव है।
6. **सूर्य + शनि**–पैर में चोट, वाहन दुर्घटना सम्भव।
7. **सूर्य + राहु**–अचानक दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **सूर्य + केतु**–लड़ाई-झगड़े से मृत्यु संभव है।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में



तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। यहां नवमस्थ सूर्य मिथुन राशि में होकर तृतीय स्थान (धनु राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। सूर्य यहां अपनी सिंह राशि से एकादश स्थान को प्राप्त होकर त्रिकोण में स्थित होने से अत्यन्त शुभ फलदायक हो गया है। ऐसे जातक को निश्चय ही धन, विद्या, बुद्धि सौभाग्य एवं पराक्रम वृद्धि का सुख प्राप्त होगा।

पाराशर ऋषि के अनुसार-'लाभेशे भाग्यभवस्थे भाग्यवान् जायते नर:' लाभेश भाग्य स्थान में होने से जातक धनवान एवं भाग्यशाली होगा।

निशानी–जातक का भाग्योदय 22 व 24 वर्ष के मध्य होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा जातक का भाग्योदय तीव्रगति से करायेगी।

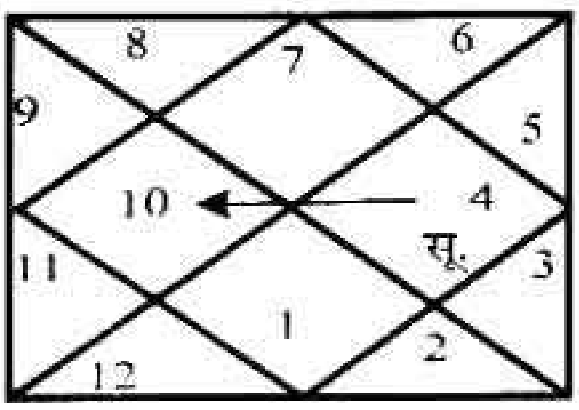
सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। नवम स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिशाली, भाग्यशाली एसं महान पराक्रमी होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी तथा मित्रों एवं परिजनों का सहयोग समय-समय मिलता रहेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **सूर्य + चंद्र**–तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति नवम स्थान में होने पर जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 बजे के आस पास होगा। सूर्य+चंद्र की मिथुन राशिगत नवम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश

सूर्य के साथ युति कहलायेगी। राज्येश चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। सुखेश सूर्य का भाग्य स्थान में बैठना शुभ है। जातक के भाग्योदय को लेकर संघर्ष की स्थिति रहेगी। फिर भी चंद्रमा पराक्रमी व धनी होगा।

3. **सूर्य + मंगल** -व्यापार में अद्वितीय लाभ होगा।
4. **सूर्य + बृहस्पति** - पराक्रम बढ़ेगा, मित्र लाभ देंगे।
5. **सूर्य + शुक्र** -भाग्योदय तीव्रगति से होगा। व्यापार में लाभ होगा।
6. **सूर्य + शनि** -जीवन में सभी प्रसार के भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।
6. **सूर्य + राहु** -पिता के सुख में कमी रहेगी।
7. **सूर्य + केतु** - पिता के सुख में न्यूनता रहेगी।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में



तुलालग्न में सूर्य लाभेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। यहां पर दशम स्थान में सूर्य कर्क राशि का होगा। जातक को धन, यश, पद-प्रतिष्ठा की बराबर प्राप्ति होगी। जातक राजमान्य होगा। राजनीति क्षेत्र में उसका हस्तक्षेप रहेगा। ऐसा जातक सत्य वक्ता एवं जितेन्द्रिय होगा।

दृष्टि–कर्कस्थ सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (मकर राशि) पर होगी फलत: जातक का घर का मकान एवं निजी वाहन होगा। सूर्य के साथ शुभ ग्रह हो तो जातक नौकर-चाकर से युक्त होकर अनेक भवनों का स्वामी होगा।

निशानी–जातक प्राय: मातृभक्त एवं पितृद्वेषी होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में उन्नति होगी। नौकरी लगेगी। सुख की प्राप्ति होगी।

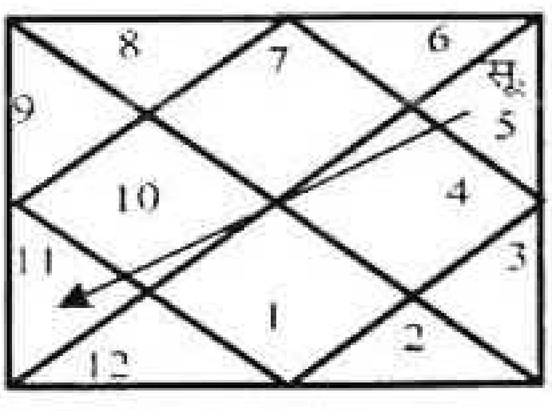
सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**-भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। दशम स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख भाव को देखेंगे। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलत: जातक बुद्धिशाली होगा। राज्य पक्ष, सरकारी क्षेत्र में उसका दबदबा, वर्चस्व होगा जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। 'कुलदीपक

योग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **सूर्य + चंद्र**—तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति दशम स्थान में होने पर जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को दिन के 2 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की कर्क राशिगत दशम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। चंद्रमा यहां स्वगृही होकर 'चंद्रकृत राजयोग' बनाएगा। सूर्य केन्द्रवर्ती होकर स्वगृहाभिलाषी होगा। ऐसा जातक राजातुल्य प्रतापी एवं ऐश्वर्यवान होगा।
3. **सूर्य + मंगल**—व्यापार में अद्वितीय लाभ होगा।
4. **सूर्य + बृहस्पति**—यहां बृहस्पति उच्च का होगा। 'हंस योग' 'पद्मसिंहासन योग' के कारण जातक अनेक भवन, एकाधिक वाहनों एवं नौकरों का स्वामी होकर राजा तुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त करेगा।
5. **सूर्य + शुक्र**—परिश्रम व पुरुषार्थ से धन की प्राप्ति होगी। पिता की सम्पत्ति भी मिलेगी।
6. **सूर्य + शनि**—वाहन सुख मिलेगा। पुत्र सुख मिलेगा। पुत्र पराक्रमी होगा।
7. **सूर्य + राहु**—राज्य से दण्ड मिलेगा। नौकरी छूटेगी।
8. **सूर्य + केतु**—नौकरी में अवनति। व्यापार में नुकसान सम्भव।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में



तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। यहां पर एकादश स्थान में सूर्य स्वगृही होकर सिंह राशि का होगा। सूर्य यहां अंशों तक मूल त्रिकोण का होकर उच्च जैसा फल देगा। ऐसा जातक धन, स्त्री, पुत्र-पौत्र, वाहन, नौकरी एवं व्यापार से युक्त समृद्धिशाली, ऐश्वर्यशाली जीवन का यापन करता है। ऐसा जातक पण्डित-विद्वान व सुखी होगा। 22 वर्ष की आयु के पश्चात उसे दिन-प्रतिदिन हर कार्य में सफलता मिलती जाएगी।

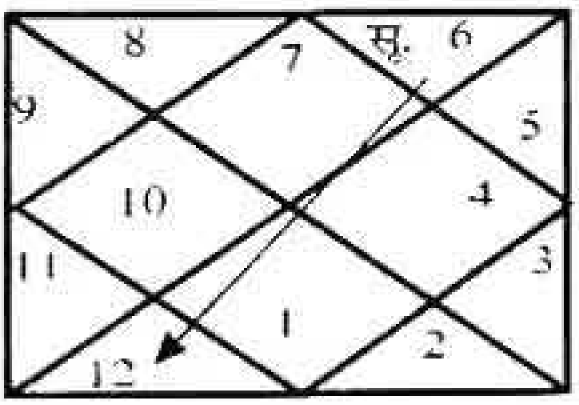
दृष्टि—एकादशस्थ सूर्य की दृष्टि पंचम भाव (कुंभ राशि) पर होगी फलत: जातक स्वयं शिक्षित होगा। संतान भी सुशिक्षित होगी।

निशानी—जातक राष्ट्रभक्त होगा। पुत्र-पौत्र से युक्त होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**-भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। एकादश स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां सूर्य स्वगृही होगा तथा दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव पर होगी। फलत: जातक बुद्धिशाली व शिक्षिता होगा। जातक की सन्तति भी शिक्षित होगी। जातक व्यापार में रुचि लेगा तथा उसकी आमदनी के जरिए एक से अधिक होंगे। जातक भाग्यशाली होगा।
2. **सूर्य + चंद्र**-तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति एकादश स्थान में होने के कारण जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को सुबह 10 बजे के लगभग होगा। सूर्य+चंद्र की सिंह राशिगत एकादश स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। यहां सूर्य स्वगृही होकर 'रविकृत राजयोग' बनाएगा। उत्तम सन्तति देगा। जातक राजातुल्य प्रतापी एवं ऐश्वर्यवान होगा।
3. **सूर्य + मंगल** -यदि यहां मंगल हो तो व्यक्ति अदम्य साहसी होगा। धर्म व न्याय के लिए मर मिटेगा।
4. **सूर्य + बृहस्पति** -बड़े भाई का सुख मिलेगा। बुजुर्गों की सलाह से लाभ।
5. **सूर्य + शुक्र**-व्यापार में लाभ पुरुषार्थ-परिश्रम से लाभ होगा।
6. **सूर्य + शनि** -भौतिक सुख, सम्पन्नता में वृद्धि, व्यापार से लाभ, सन्तति शिक्षित होगी।
7. **सूर्य + राहु** -विद्या एवं व्यापार में रुकावट।
8. **सूर्य + केतु** -व्यापार में बदलाव होता रहेगा।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में



तुलालग्न में सूर्य लाभेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। यहां द्वादश स्थान में सूर्य कन्या राशि में होकर नीचाभिलाषी होगा। सूर्य अपनी राशि (सिंह) में दूसरे स्थान पर होने के कारण धन का खर्च शुभकार्य, परोपकार, धार्मिक क्रिया-कलाप में होगा। जातक विदेशी सम्बन्ध एवं विदेशी व्यापार के माध्यम से ज्यादा धन कमाने में सक्षम होगा।

दृष्टि—कन्या राशिगत सूर्य की दृष्टि छठे स्थान (मीन राशि) पर होगी। फलत: ऐसा जातक अपने शत्रुओं व रोगों का नाश करने में पूर्ण सक्षम होगा।

निशानी—सपने सच आएंगे।

दशा—सूर्य की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल एवं आध्यात्मिक लाभ देगी।

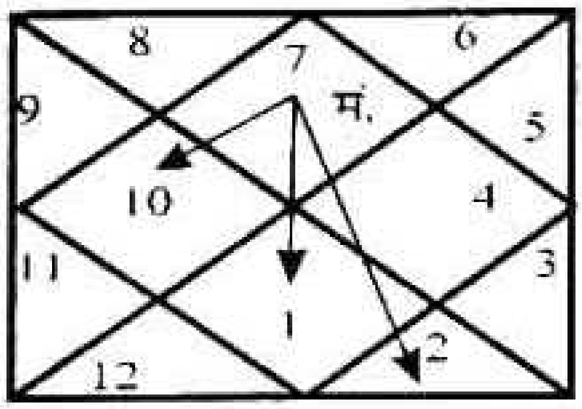
सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। द्वादश स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। बुध बारहवें जाने से 'भाग्यभंग योग' तथा सूर्य के कारण 'लाभभंग योग' बना। अत: जातक एक बार ऊपर चढ़कर नीचे गिरेगा। खर्च अधिक करेगा। तीर्थाटन, धार्मिक यात्राओं में रुपया खर्च करेगा। व्ययेश स्वगृही होकर बारहवें होगा जातक परोपकारी, दानी एवं समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **सूर्य + चंद्र**—तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वादश स्थान में होने पर जातक का जन्म आश्विनी कृष्ण अमावस्या को सुबह 8 बजे के लगभग होगा। सूर्य+चंद्र की कन्या राशिगत द्वादश स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। चंद्रमा बारहवें में होने से 'राजभंग योग' तथा सूर्य बारहवां होने से 'लाभभंग योग' की सृष्टि होती है। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। जातक को राज्य (सरकारी नौकरी) की प्राप्ति हेतु एवं व्यापार-व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति हेतु जीवन भर संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **सूर्य + मंगल**—प्रखर वक्ता, जातक का स्वभाव खर्चीला होगा।
4. **सूर्य + बृहस्पति**—जातक महाविद्वान, ज्योतिषी होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**—विद्वान होगा पर परिश्रम का लाभ नहीं। 'लग्नभंग योग' बनेगा।
6. **सूर्य + शनि**—अस्पष्टभाषी, जुआरी व विद्या व्यसनी होगा।
7. **सूर्य + राहु**—वाणी में स्खलन, यात्रा में नुकसान होगा या चोरी होगी।
8. **सूर्य + केतु**—यात्रा में धन लाभ एवं खर्च दोनों होंगे।

❑❑❑

तुलालग्न में मंगल की स्थिति

तुलालग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में



तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां लग्नस्थ मंगल तुला राशि में है यह मंगल की शत्रु राशि है। जातक का स्वभाव कर्मठ, क्रोधी एवं उत्साही होगा। जातक की जबान का शब्द पत्थर की लकीर होगा। जातक वीर एवं निर्भीक होगा। उसके पास जमीन-जायदाद, धन-सम्पत्ति की कमी नहीं होगी।

दृष्टि–लग्नस्थ मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (मकर राशि), सप्तम भाव (मेष राशि) एवं अष्टम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक को वाहन का सुख, पत्नी एवं दीर्घ आयु का सुख मिलेगा।

निशानी–जातक पुत्रवान होगा। आप अकेला भाई न होगा। बड़ा भाई जरूर होगा पर बड़े भाई का सुख किस्मत में ज्यादा नहीं रहेगा।

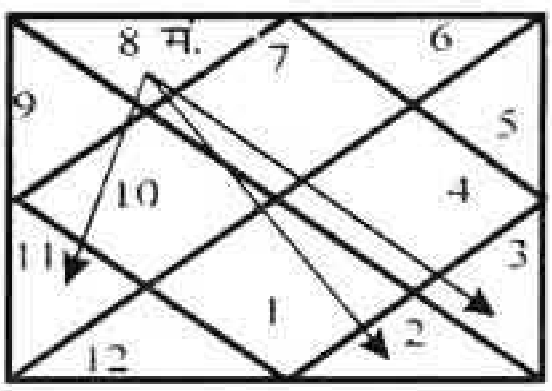
दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक धनवान होगा। उसका व्यक्तित्व निखरेगा। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चंद्र**–चंद्रमा की युति के कारण 'लक्ष्मी योग' बनेगा। जातक महाधनी होगा। पत्नी सुदंर होगी।
2. **मंगल + सूर्य**–सूर्य यहां नीच का होते हुए विपरीत राजयोग बनाएगा। जातक राजा का सेनापति होगा अथवा उसके समकक्ष पद को धारण करेगा।

3. **मंगल + बुध**–भाग्येश व धनेश की युति व्यक्ति के सौभाग्य में अपूर्व वृद्धि करेगी।
4. **मंगल + बृहस्पति**–धनेश व तृतीयेश की युति भाईयों व मित्रों से धन दिलाएगी।
5. **मंगल + शुक्र**–यहां स्वगृही शुक्र 'मालव्य योग' एवं अन्य राजयोग बनाएगा। जातक की व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राजनैतिक उन्नति होगी।
6. **मंगल + शनि**–यहां उच्च का शनि 'शश योग' एवं अन्य राजयोग बनाएगा। जातक की व्यक्तिगत सामाजिक एवं राजनैतिक उन्नति होगी।
7. **मंगल + राहु**–जातक जिद्दी व हठी होगा। परन्तु राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
8. **मंगल + केतु**–जातक क्रोधी होगा।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में



तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां द्वितीय स्थान में मंगल वृश्चिक राशि का होकर स्वगृही होगा। ऐसे जातक का जन्म पिता के लिए शुभ होता है। जातक के जन्म के बाद पिता की तरक्की होती है। विवाह के बाद जातक की तरक्की होती है। जातक को स्त्री द्वारा धन लाभ होता है। जातक दीर्घसूत्री होता है। जातक की वाणी स्पष्ट, तेज व प्रखर होती है जमीन-जायदाद में धन लाभ होता है। जातक समाज का धनी व्यक्ति होता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ मंगल की दृष्टि पंचम भाव (कुंभ राशि), अष्टम भाव (वृष राशि) एवं भाग्य भवन (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक को विद्या लाभ, सन्तान लाभ, दीर्घायु के साथ भाग्य में उन्नति होगी।

निशानी–जातक गुप्त विद्याओं का जानकार होता है।

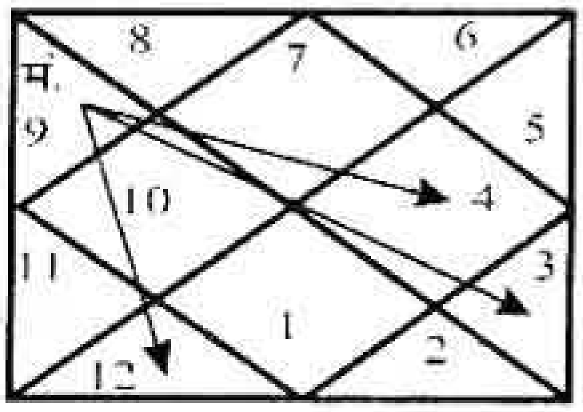
दशा–मंगल की दशा अन्तर्दशा में जातक धनाढ्य होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चंद्र**–चंद्र के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक महाधनी होगा।
2. **मंगल + सूर्य**–जातक को व्यापार में नौकरी से अतिरिक्त आय होगी।
3. **मंगल + बुध**–जातक धनी व भाग्यशाली होगा।

4. **मंगल + बृहस्पति**–भाईयों से धन लाभ होगा।
5. **मंगल + शुक्र**–परिश्रम का यथेष्ट पुरस्कार मिलेगा।
6. **मंगल + शनि**–जातक को शिक्षा व सन्तान से धन मिलेगा।
7. **मंगल + राहु**–जितना कमाएगा खर्च होता चला जाएगा।
8. **मंगल + केतु**–धन आएगा पर बरकत कम होगी।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में



तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां तृतीय स्थान में मंगल धनु राशि पर होगा। यह मंगल की मित्र राशि है। ऐसे जातक के छोटे-बड़े भाई-बहन जरूर होंगे। प्राय: जातक की किस्मत चमकती है। जातक को कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी ऐसा जातक नीतिवान एवं सिद्धान्तवादी होगा। जातक के बहुत यत्न से एक पुत्र जीवित रह सकता है। मंगल की यह स्थिति प्राय: सन्तति सम्बन्धी कष्ट का संकेत देती है।

दृष्टि–तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि छठे स्थान (मीन राशि), भाग्य स्थान (मिथुन राशि) एवं राज्य स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलत: जातक रोग और शत्रु पर विजय प्राप्त करने में सक्षम होगा। जातक सौभाग्यशाली होगा तथा उसका राजनीति में भी हस्तक्षेप रहेगा।

निशानी–जातक के तीन भाई होंगे।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक का वास्तविक पराक्रम बढ़ेगा।

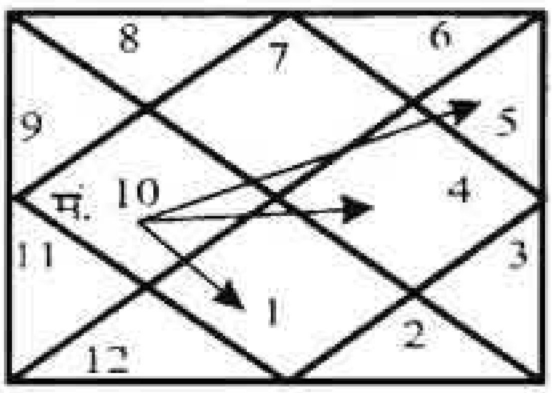
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चंद्र**–जातक धनी होगा। राजनीति व प्रशासन में उसका हस्तक्षेप रहेगा।
2. **मंगल + सूर्य**–जातक सरकारी क्षेत्र में प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
3. **मंगल + बुध**–जातक बुद्धिमान तथा परम सौभाग्यशाली होगा।
4. **मंगल + बृहस्पति**–जातक को बड़े भाई का सुख होगा।
5. **मंगल + शुक्र**–जातक मित्रों की मदद से आगे बढ़ेगा। व्यापार वर्गीय होगा।
6. **मंगल + शनि**–जातक को छोटे भाई का सुख नहीं होगा।

7. **मंगल + राहु**–भृगुसूत्र के अनुसार 'राहु केतु युते वैश्या संगम' जातक अन्य स्त्रियों से शारीरिक सम्बन्ध रखता है।

8. **मंगल + केतु**–भृगुसूत्र के अनुसार 'राहु केतु युते वैश्या संगम' जातक पर स्त्री गामी होता है।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में



तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां चतुर्थ भावगत मंगल मकर राशि में है मकर राशि में मंगल उच्च का होता है तथा 28 अंशों में परमोच्च का होता है। फलत: कुण्डली में 'रूचक योग' बनता है। मंगल यहां दिग्बली होने से जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली, वैभव सम्पन्न एवं बड़ी भूमि व सम्पत्ति पाता है। जातक चार पहिए के वाहन का स्वामी होता है। दो मंजिला मकान एवं नौकर-चाकर के सुख से परिपूर्ण जीवन जीता है।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत मंगल की दृष्टि सप्तम भाव (मेष राशि), दशम भाव (कर्क राशि), तथा लाभ भाव (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी। राज्य (सरकार) में उसका वर्चस्व होगा तथा व्यापार में उसे बराबर लाभ मिलता रहेगा।

निशानी–ऐसे जातक अपने काम में दूसरों का हस्तक्षेप हर्गिज बर्दाश्त नहीं करेंगे। मंगल यहां 'मांगलिक योग' बनाएगा जो कहीं न कहीं जीवन साथी के साथ मनमुटाव की स्थिति उत्पन्न करेगा।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक भूमि, भवन एवं वाहन सुख की प्राप्ति करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

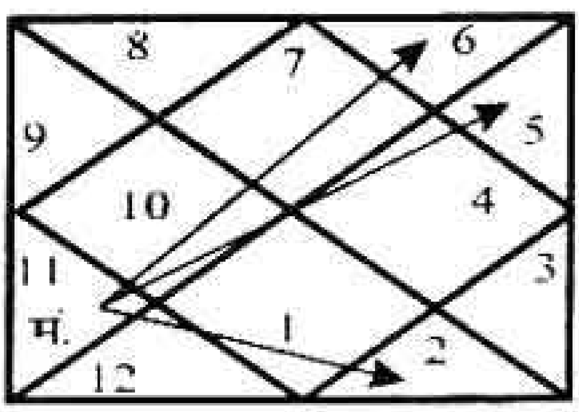
1. **मंगल + चंद्र**–चंद्र की युति से 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। जातक अत्यधिक धनी व्यक्ति होगा। सरकार से धन मिलेगा। पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

2. **मंगल + सूर्य**–सूर्य की युति से जातक महान तेजस्वी व्यक्ति होगा एवं व्यापार में लाभ अर्जित करेगा।

3. **मंगल + बुध**–बुध की युति जातक को 'महाभाग्यशाली' बनाएगी। जातक बुद्धिबल से कुल का नाम रोशन करेगा।

4. **मंगल + बृहस्पति**–गुरु के कारण 'नीचभंग राजयोग', 'केसरी योग', 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक कुल श्रेष्ठ पूजनीय व्यक्ति होगा।
5. **मंगल + शुक्र**–शुक्र के कारण जातक परिश्रम से धन अर्जित करेगा। खूब रुपया कमाएगा।
6. **मंगल + शनि**–शनि के कारण 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक निश्चय ही राजा या राजा से किसी भी प्रकार से कम न होगा।
7. **मंगल + राहु**–राहु यहां सुख में बाधक है। माता व भाईयों में विक्षेप करेगा।
8. **मंगल + केतु**–केतु भी मातृसुख में बाधक है। वाहन से दुर्घटना सम्भव है।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में



तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां पंचम स्थान में मंगल कुंभ राशि का होगा। जो इसकी शत्रु राशि है। फिर भी ऐसा जातक धनी होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार जातक का पुत्र भी धनी होगा। जातक के बाप-दादा धनी होंगे। जातक को स्त्री सुख, पुत्र सुख की प्राप्त होगी। परन्तु मंगल के कारण गर्भपात होंगे तथा एक-दो सन्तानों की अकाल, अपरिपकव मृत्यु सम्भव है।

दृष्टि–पंचमस्थ मंगल की दृष्टि अष्टम भाव (वृष राशि), लाभ स्थान (सिंह राशि) एवं व्यय भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक की आयु दीर्घ होगी। उसे व्यापार में लाभ होगा। जातक का धन शुभ कार्य में खर्च होगा।

निशानी–जातक के नर सन्तति जरूर होगी।

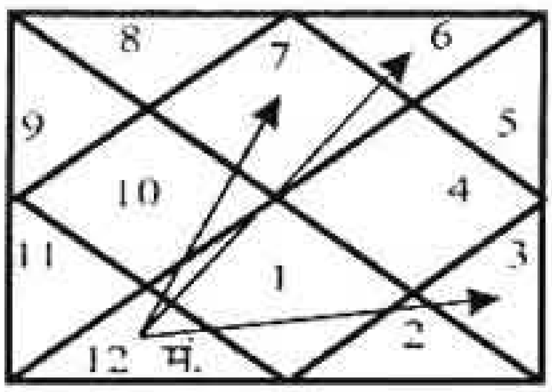
दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक को पुत्र व धन का लाभ होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चंद्र**–जातक को पुत्र-पुत्री दोनों होंगे।
2. **मंगल + सूर्य**–जातक के पुत्र तेजस्वी होंगे।
3. **मंगल + बुध**–जातक को पुत्र-पुत्री दोनों होंगे।
4. **मंगल + बृहस्पति**–भाग्यवान सन्तति उत्पन्न होगी। पुत्र अधिक होंगे।
5. **मंगल + शुक्र**–कन्या सन्तति अधिक, पुत्र भी होंगे।

6. **मंगल + शनि**–शनि यहां स्वगृही होने के कारण 'राजयोग' बनेगा। जातक को धन, पद, प्रतिष्ठा व अधिकारों की प्राप्ति होगी।
7. **मंगल + राहु**–एकाध पुत्र सन्तति का गर्भपात सम्भव है।
8. **मंगल + केतु**–गर्भस्राव अवश्य होगा।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति षष्ट्म स्थान में



तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां छठे स्थान में मंगल मीन राशि का होगा। मीन इसकी मित्र राशि है। मंगल की यह स्थिति 'धनहीन योग' एवं 'विवाहभंग योग' की सृष्टि करती है। ऐसा जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होता है, परन्तु धन प्राप्ति एवं गृहस्थ सुख की प्राप्ति हेतु यह स्थिति कष्टदायक है।

दृष्टि–षष्टस्थ मंगल की दृष्टि भाग्य भाव (मिथुन राशि), व्यय भाव (कन्या राशि) एवं लग्न भाव (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक सौभाग्यशाली होगा। उन्नति प्राप्त करेगा। एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।

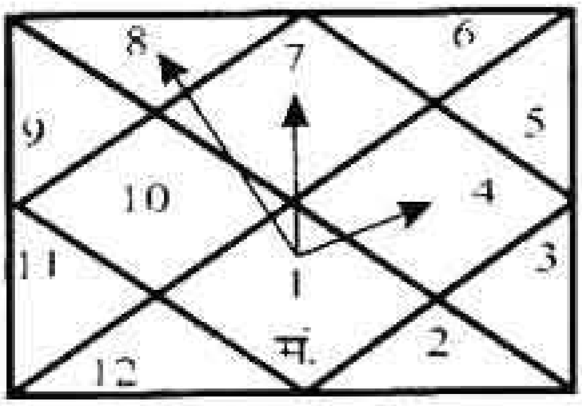
निशानी–जातक विलम्ब से तरस कर ली गई संतान होगा।

दशा–मंगल की दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चंद्र**–राजपक्ष कमजोर रहेगा।
2. **मंगल + सूर्य**–राजा से आर्थिक दण्ड मिलेगा।
3. **मंगल + बुध**–भाग्य में लगातार रुकावटें आएंगी।
4. **मंगल + बृहस्पति**–गुरु यहां स्वगृही होगा। भाईयों से खटपट रहेगी।
5. **मंगल + शुक्र**–शुक्र यहां नीच का रहेगा। परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
6. **मंगल + शनि**–सन्तति की चिन्ता रहेगी।
7. **मंगल + राहु**–शत्रु परेशान करेंगे।
8. **मंगल + केतु**–शत्रु गुप्त चिन्ता देंगे।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में



तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां सप्तम स्थान में स्थित मंगल मेष राशि का होकर स्वगृही होगा। फलत: 'रूचक योग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक राजातुल्य, ऐश्वर्यशाली, धनवान एवं भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक सुंदर पतली देह का स्वामी होगा। जातक क्रोधी तथा कामुक होगा। जातक भाईयों से मुक्त होगा तथ जातक के स्वयं का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। ससुराल से लाभ की प्राप्ति होगी। यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' भी बनाती है। फलत: सुख में व्यवधान पड़ता है। विलम्ब विवाह सम्भव है।

दृष्टि–सप्तमस्थ मंगल की दृष्टि राज्य स्थान (कर्क राशि), लग्न स्थान (तुला राशि) एवं धन स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ने वाला, धनी तथा राजनीति में प्रवीण होगा।

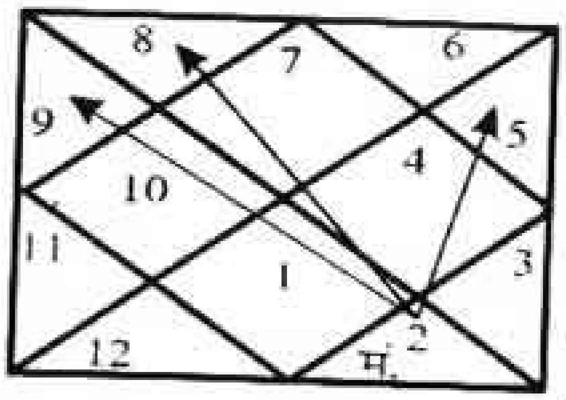
निशानी–जीवनसाथी से असंतोष एवं उच्च रक्तचाप की बीमारी सम्भव है।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक धनी होगा। उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा। उसे पद व प्रतिष्ठा मिलेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चंद्र**–जातक महाधनी होगा। लक्ष्मी प्रसन्न रहेगी।
2. **मंगल + बुध**–सूर्य के कारण 'रविकृत राजयोग', 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक राजा के समान वैभवशाली, पराक्रमी होगा। उसके पास धन की कमी नहीं रहेगी।
3. **मंगल + बुध**–जातक परम भाग्यशाली होगा।
4. **मंगल + बृहस्पति**–भाईयों व परिजनों से लाभ संभव है।
5. **मंगल + शुक्र**–मेहनत का मीठा फल मिलेगा।
6. **मंगल + शनि**–शनि के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक निश्चय ही राजा के समान वैभवशाली, पराक्रमी होगा। शनि के साथ 'शिश्नचुम्बन योग'
7. **मंगल + राहु**–गृहस्थ सुख में कलह ज्यादा रहेगी। अहं का टकराव होगा।
8. **मंगल + केतु**–गृहस्थी में विवाद रहेगा।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में



तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां अष्टम स्थान में मंगल वृष राशि का होगा। वृष मंगल की शत्रु राशि है। मंगल की इस स्थिति से 'धनहीन योग', 'विवाहभंग योग' एवं कुण्डली 'मांगलिक दोष' से युक्त होगी। ऐसा जातक शत्रु को जीतने वाला मेहनती व पराक्रमी होगा। परन्तु धन की कमी, गृहस्थ सुख में कमी बराबर अखरती रहेगी। परन्तु जातक निर्भीक व साहसी होगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ भाव (सिंह राशि), धन भाव (वृश्चिक राशि) एवं पराक्रम भाव (धनु राशि) पर होगी।

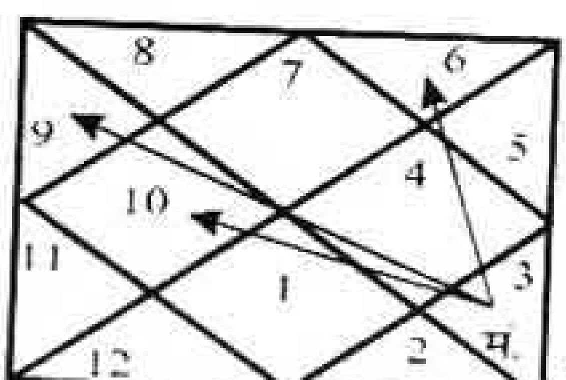
निशानी–जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चंद्र**–राज्यपक्ष कमजोर होगा।
2. **मंगल + सूर्य**–राजा से दण्डित होने के योग हैं।
3. **मंगल + बुध**–भाग्य में पग-पग पर रुकावट महसूस करेंगे।
4. **मंगल + बृहस्पति**–भाईयों से मनमुटाव रहेगा।
5. **मंगल + शुक्र**–गुप्त बीमारी, रक्त विकार, वीर्यदोष सम्भव।
6. **मंगल + शनि**–सन्तति की बीमारी से जातक चित्रित रहेगा।
7. **मंगल + राहु**–आयु में रुकावट, दुर्घटना से अंग भंग सम्भव।
8. **मंगल + केतु**–लम्बी बीमारी रहेगी। रक्तविकार सम्भव।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में



तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां नवम स्थान में मंगल मिथुन राशि में होगा। मिथुन मंगल की मित्र राशि है। जातक स्वाभिमानी होगा। युद्ध के

मैदान में, कोर्ट-कचहरी में बुद्धिबल से शत्रु को परास्त करता हुआ विजय श्री का वरण करेगा। ऐसा जातक भाईयों, कुटम्बी-परिजनों के साथ रहना पसन्द करेगा।

दृष्टि—नवम स्थान गत मंगल की दृष्टि व्यय भाव (कन्या राशि) पराक्रम स्थान (धनुराशि) एवं चतुर्थभाव (मकर राशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी होगा। जीवन में वाहन सुख एवं सभी प्रकार के भौतिक सुखों को प्राप्त करने वाला, खर्चीले स्वभाव का होगा।

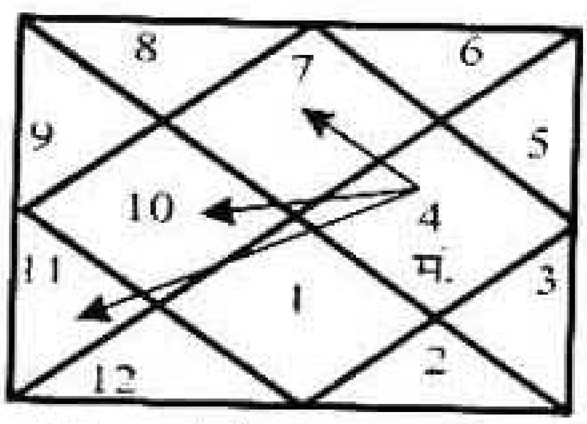
निशानी—ऐसा जातक अपनी किस्मत आप जगायेगा।

दशा—मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। जातक को धन, स्त्री सुख इत्यादि की प्राप्ति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल + चंद्र**—जातक महाधनी होगा।
2. **मंगल + सूर्य**—जातक को राजकीय सम्मान मिलेगा।
3. **मंगल + बुध**—जातक करोड़पति होगा।
4. **मंगल + बृहस्पति**—भाईयों से लाभ रहेगा।
5. **मंगल + शुक्र**—मेहनत की मीठी रोटी मिलेगी।
6. **मंगल + शनि**—जातक शिक्षित होगा। सभ्य होगा।
7. **मंगल + राहु**—भाग्य में ठोकरें बहुत आयेंगी।
8. **मंगल + केतु**—भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में



तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां दशम स्थान में मंगल नीच राशि (कर्क) में होगा। कर्क के अंशों में मंगल परम नीच का होगा। मंगल यहां दिग्बली है। दिग्बली मंगल 'कुलदीपक योग' की सृष्टि भी करेगा। ऐसा जातक मैकेनिक व टैक्नीकल, इंजिनिरिंग, ठेकेदारी, निर्माण कार्य में दक्ष होगा। जातक बड़ी जमीन-जायदाद का स्वामी होगा। जातक फौजी कार्य, साहस के कार्य में रुचि रखेगा।

दृष्टि—दसमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न स्थान (तुला राशि), चतुर्थ स्थान (मकर राशि) एवं पंचम भाव (कुंभ राशि) पर होगी। ऐसे जातक को अपने परिश्रम-पुरुषार्थ

का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा। जातक को उत्तम, वाहन भवन की प्राप्ति होगी। जातक विद्यावान होगा।

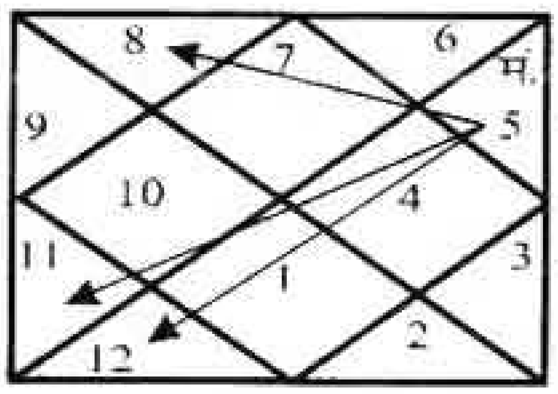
निशानी–जातक के जन्म से माता-पिता एवं पूरे परिवार की उन्नति होगी।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक उन्नति को प्राप्त करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चंद्र**–चंद्रमा यहां स्वगृही होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। 'पद्मसिंहासन योग' भी बनेगा। जातक महाधनी होगा।
2. **मंगल + सूर्य**–जातक का राज्य में वर्चस्व रहेगा।
3. **मंगल + बुध**–जातक भाग्यशली होगा। धनवान होगा।
4. **मंगल + बृहस्पति**–बृहस्पति उच्च का होकर 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **मंगल + शुक्र**–जातक उत्तम वाहन से युक्त होगा।
6. **मंगल + शनि**–जातक एकाधिक मकानों का स्वामी होगा।
7. **मंगल + राहु**–पिता की सम्पत्ति में विवाद, भाईयों में झगड़ा होगा।
8. **मंगल + केतु**–पैतृक सम्पत्ति विवादात्मक होगी।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में



तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां एकादश स्थान में मंगल सिंह राशि में होगा। सिंह राशि मंगल की मित्र राशि है। जातक धनवान होगा। यहां मंगल बहुत श्रेष्ठ फल देगा। जातक अपने पराक्रम से पुरुषार्थ से उत्तम धन एवं उत्तम विद्या को अर्जित करेगा। जातक गुरुभक्त होगा। अपने बड़े-बुढ्ढों व बुजुर्गों का सम्मान करागा। अपने ऊपर किये गये एहसान को भूलेगा नहीं। जातक कृतज्ञ, व्यवहारिक होगा। एवं कुछ रौबीले स्वभाव का होगा।

दृष्टि–एकादश स्थान में स्थित मंगल की दृष्टि धन स्थान जो कि मंगल का स्वगृह है (वृश्चिक राशि), पंचम स्थान (कुंभ राशि) एवं षष्ट्म स्थान (मीन राशि)

पर होगी। फलत: जातक धन सम्बन्धी उत्तम लाभ अर्जित करेगा। जातक विद्या सम्बन्धी लाभ, उच्च शैक्षणिक डिग्री मिलेगी। जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

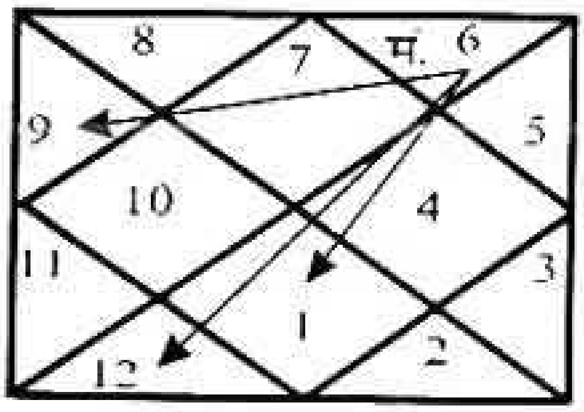
निशानी–जातक का चरम भाग्योदय 28 से 32 वर्ष के बीच होगा।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक उन्नति पथ पर आगे बढ़ेगा, धन अर्जित करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चंद्र**–
2. **मंगल + सूर्य**–यहां पर यदि सूर्य हो तो स्वगृही होगा फलत: 'रविकृत राजयोग' बनेगा। जातक खूब धन, यश व पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।
3. **मंगल + बुध**–जातक उद्योगपति होगा।
4. **मंगल + बृहस्पति**–जातक का उद्योग दिक्कतों से परिपूर्ण होगा।
5. **मंगल + शुक्र**–जातक को व्यापार से लाभ होगा।
6. **मंगल + शनि**–जातक सफल उद्योगपति होगा।
7. **मंगल + राहु**–उद्योग फैक्ट्री में ग्रहण लगा रहेगा।
8. **मंगल + केतु**–व्यापार में संघर्ष रहेगा।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में



तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां द्वादश स्थान में मंगल कन्या राशि में होगा। कन्या मंगल की मित्र राशि है। मंगल की इस स्थिति में कुण्डली में 'धनहीन योग', 'विवाहभंग योग' एवं 'मांगलिक योग' बनेगा। निश्चय ही जातक को धन प्राप्ति हेतु, जीवनसाथी के चयन हेतु, विवाह के बाद सुखी दाम्पत्य सुख हेतु कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत मंगल की दृष्टि पराक्रम स्थान (धनु राशि), षष्टम भाव (मीन राशि) एवं सप्तम भाव स्वयं के घर (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा, दीर्घ आयु वाला होगा। पत्नी पक्ष में खटपट रहेगी। समझौता वादी दृष्टिकोण से ही जीवन सुखी रहेगा।

निशानी—जातक प्राय: धूर्त, स्वार्थी, रिश्वतखोर, पराये धन पर नजर रखने वाला होता है।

दशा—मंगल की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

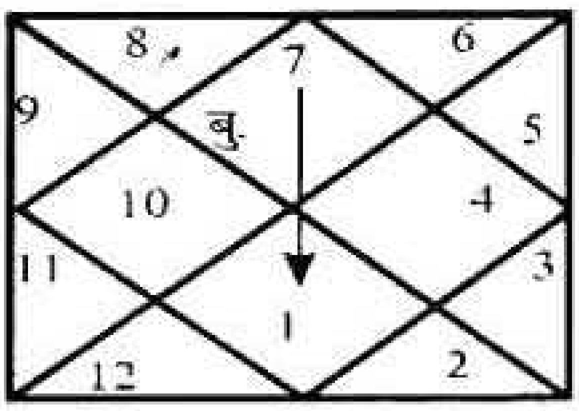
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चंद्र**—धन प्राप्ति होगी पर खर्च प्रबल रहेगा।
2. **मंगल + सूर्य**—राज्यपक्ष से मदद टूटेगी। नौकरी छूटेगी।
3. **मंगल + बुध**—भाग्य में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
4. **मंगल + बृहस्पति**—भाईयों में विवाद होगा। कोर्ट केस सम्भव।
5. **मंगल + शुक्र**—परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
6. **मंगल + शनि**—विद्या में रुकावट, संतान में बाधा।
7. **मंगल + राहु**—'पापयुते दाम्भिक' जातक महा घमण्डी होगा।
8. **मंगल + केतु**—'पापयुते दाम्भिक' जातक घमण्डी होगा।

❑❑❑

तुलालग्न में बुध की स्थिति

तुलालग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में



तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक है एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहां लग्नस्थ बुध तुला राशि में है जो इसकी मित्र राशि है। ऐसा जातक गोरे रंग का, विनम्र, सौम्य एवं मृदु स्वभाव का व्यक्ति होता है। ऐसा जातक भाग्यवान, राजमान्य, विद्वान एवं लोकपूज्य होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ बुध की दृष्टि सप्तम भाव (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक का जीवन साथी सुंदर व सौभाग्यशाली होगा।

निशानी–जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

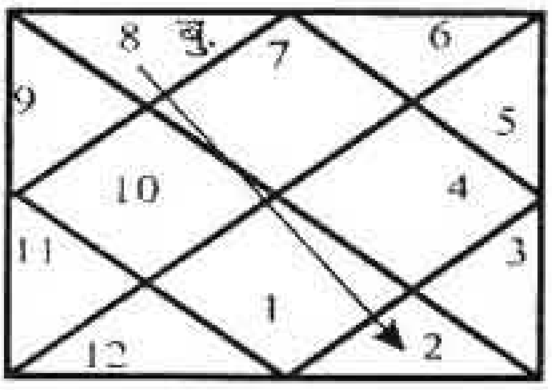
दशा–बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। जातक का बौद्धिक विकास व उन्नति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसहिंता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। प्रथम स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां नीच का है। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। जहां सूर्य की उच्च राशि स्थित है। फलत: जातक बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होगा। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। बुध के लग्न में स्थित होने में 'कुलदीपक योग' बना। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। इस कारण अपनी जाति, कुटुम्ब, परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

2. **बुध + चंद्र**–जातक का जीवन साथी सुंदर होगा।
3. **बुध + मंगल**–धनेश व भाग्येश की युति लग्न स्थान में जातक को सौभाग्यशाली बना देगी।
4. **बुध + गुरु**–जातक को मित्रों से लाभ होगा। मित्र भाग्यशाली होगा।
5. **बुध + शुक्र**–जातक शान्ति प्रिय एवं सहज जिन्दगी जीने वाला परन्तु 'मालव्य योग' के कारण राजा का प्रिय व्यक्ति होगा। राजनीति में महत्वपूर्ण पद प्राप्त करेगा।
6. **बुध + शनि**–यहां शनि उच्च का होने से 'शश योग' बनेगा। जातक राजा होगा। महान राजनीतिज्ञ होगा। जातक का जीवन ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **बुध + राहु**–राहु व्यक्ति को हठी बनाएगा। ऐसा जातक व्यापार बदलता रहेगा।
8. **बुध + केतु**–जातक का दिमाग बदलता रहेगा।

तुलालग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में



तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक है एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहां द्वितीय स्थान में बुध वृश्चिक राशि का होगा। ऐसा जातक वाक्पटु होगा। इसके मुख और वाणी में आकर्षण रहेगा। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसे जातक महापण्डित, लोकप्रिय, धनी एवं पुत्र-पौत्रादि से युक्त सुखी इंसान होते हैं।

दृष्टि–द्वितीयस्थ बुध की दृष्टि अष्टम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः ऐसे जातक ऋण व रोगों का नाश करने में सक्षम होते हैं।

निशानी–ऐसे जातक अपने वाक्चातुर्य के द्वारा दूसरों को प्रभावित करने में कुशल होते हैं।

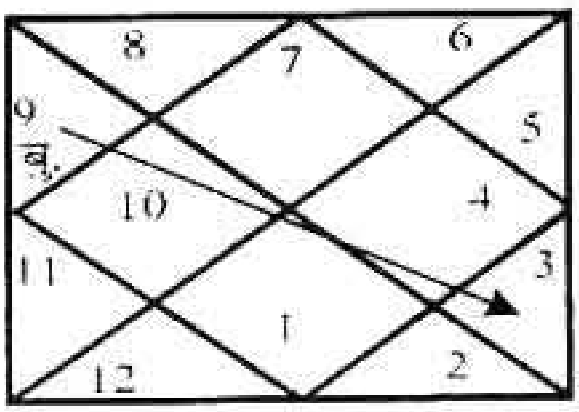
दशा–बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक धनवान होगा। उसका भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसहिंता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। द्वितीय स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव को देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिशाली व धनवान होगा। जातक में रोग व शत्रु से लड़ने की शक्ति होगी। जातक भाग्यशाली होगा तथा समाज के लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति में जातक का नाम होगा।

2. **बुध + चंद्र**–चंद्रमा यहां नीच का होगा। धन हेतु स्थिति संघर्षशील रहेगी।
3. **बुध + मंगल**–मंगल की युति से जातक का भाग्योदय 28 एवं 32 वर्ष की आयु के मध्य होगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक के ज्ञान में आध्यात्मिक वृद्धि होगी।
5. **बुध + शुक्र**–जातक अपने पुरुषार्थ में खूब धन कमाएगा।
6. **बुध + शनि**–जातक धनवान होगा। ऊंचे भवन का स्वामी होगा।
7. **बुध + राहु**–जातक की वाणी दूषित होगी।
8. **बुध + केतु**–जातक की बुद्धि कपटी एवं मायावी होती है।

तुलालग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में



तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहां तृतीयस्थ बुध धनु राशि में है। यह बुध की राशि है। तृतीयेश बुध भाई-बहन का सुख देता है। ऐसा जातक धनी व गुणी होता है। उसे मित्रों का सहयोग भी पग-पग पर मिलता रहेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ बुध की दृष्टि भाग्य भवन (मिथुन राशि) पर है जो कि उसके स्वयं का स्वगृह है। फलत: जातक को धर्म, भाग्य, पिता के सुखों में वृद्धि होगी।

निशानी–जातक परद्वेषी व स्वार्थी होता है।

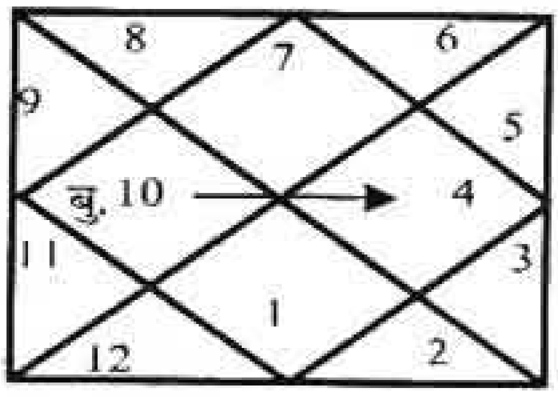
दशा–बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा, पराक्रम बढ़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। तृतीय स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह नवम भाव को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान, पराक्रमी एवं भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा। जातक को परिजनों व मित्रों का सहयोग जीवन में मिलता रहेगा। मित्रों के सहयोग से जातक का भाग्योदय होगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–चंद्रमा की युति से बहनें अधिक होंगी।
3. **बुध + मंगल**–मंगल से मित्रों द्वारा धन मिलेगा।

4. **बुध + गुरु**–गुरु यहां स्वगृही होगा। जातक का भाग्योदय परिजनों व मित्रों द्वारा होगा।
5. **बुध + शुक्र**–शुक्र की युति के कारण जातक स्वयं पराक्रमी होगा।
6. **बुध + शनि**–शनि की युति से जातक को शिक्षा व भूमि से लाभ होगा।
7. **बुध + राहु**–राहु पराक्रम भंग करेगा।
8. **बुध + केतु**–केतु कपट मित्र उत्पन्न करेगा।

तुलालग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में



तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहां चतुर्थ स्थान में बुध मकर राशि का होगा जो कि इसकी मित्र राशि है। ऐसे जातक को माता-पिता, जमीन-जायदाद, का पूर्ण सुख मिलता है। 'कुलदीपक योग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम रोशन करता है। उसे पैतृक सम्पत्ति एवं नौकर-वाहन इत्यादि का सुख मिलता है।

दृष्टि–चतुर्थ भावस्थ बुध की दृष्टि दशम भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक को प्रथम नौकरी, उसके बाद व्यापार में लाभ होगा।

निशानी–वाहन व नौकरों के रख-रखाव में खर्चा होता रहेगा।

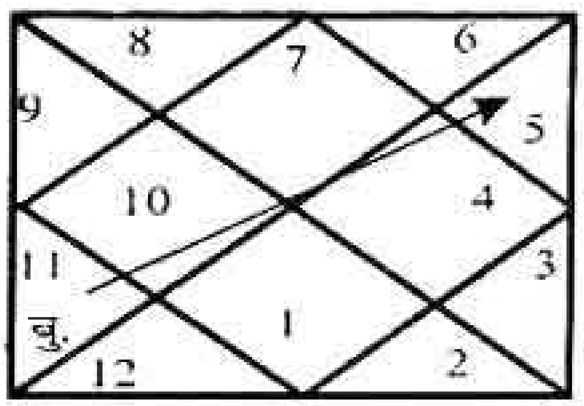
दशा–बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसहिंता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। चतुर्थ स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। बुध केन्द्र में होने से 'कुलदीपक योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव को देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिशाली होगा। उसे माता की संपत्ति मिलेगी। उसे उत्तम वाहन सुख, उत्तम मकान का सुख भी मिलेगा। जातक समाज का लब्ध एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–जातक को माता की संपत्ति मिलेगी।

3. **बुध + मंगल**—जातक का भाग्य पग-पग पर साथ देगा। 'रूचक योग' के कारण जातक राजा या राजपुरुष से कम नहीं होगा।
4. **बुध + गुरु**—गुरु यहां नीच का होगा, पर केंद्रस्थ होने से जातक को जीवन में सफलताएं मिलती रहेगी।
5. **बुध + शुक्र**—शुक्र लग्नेश होकर केंद्र में 'कुलदीपक योग' बनाएगा। जातक यशस्वी होगा। धनवान होगा।
6. **बुध + शनि**—शनि स्वगृही होने के कारण 'शश योग' बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
7. **बुध + राहु**—माता-पिता के सुख में कमी रहेगी।
8. **बुध + केतु**—जीवन में संघर्ष अधिक होगा।

तुलालग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में



तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहां पंचमस्थ बुध कुंभ राशि का होगा। जो कि उसकी मित्र राशि है। बुध को यहां पंचम एवं नवम दोनों भाव का बल मिलता है। जातक विद्या, बुद्धि व धर्म के मामले में अग्रगण्य सम्मानित व्यक्ति होता है उसे शैक्षणिक डिग्री मिलती है। जातक की सन्तति आज्ञाकारी व शिक्षित होती है। कम्प्यूटर कार्यों से जातक को लाभ होगा।

दृष्टि—पंचम भावस्थ बुध की दृष्टि लाभ स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलत: जातक व्यापार-व्यवसाय में धन अर्जित करेगा।

निशानी—जातक पुत्र के लिए तीर्थ, व्रत व खर्च करने वाला होता है। जातक के दो कन्या होती हैं।

दशा—बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक को शैक्षणिक उपाधि, कीर्ति, यश की प्राप्ति होगी। जातक के व्यापार-व्यवसाय में उन्नति होगी।

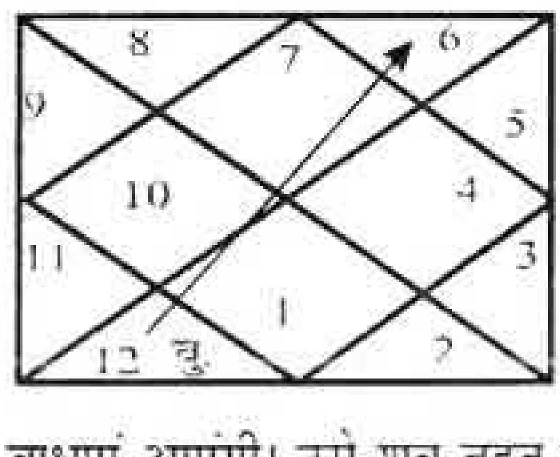
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**-भोजसहिंता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। पंचम स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ

स्थान को देखेंगे जो कि सूर्य का स्वयं का घर है। फलत: जातक बुद्धिशाली, शिक्षित होगा। जातक की सन्तति भी शिक्षित होगी। जातक को कन्या सन्तति की अधिकता रहेगी, पर सूर्य की कृपा से एक पुत्र भी होगा। जातक समाज का लब्ध एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**–कन्या सन्तति की बाहुल्यता रहेगी।
3. **बुध + मंगल**–बौद्धिक चातुर्य बढ़ेगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक धर्मगुरु व महान दार्शनिक होगा।
5. **बुध + शुक्र**–तीव्र बुद्धि, कन्या सन्तति की बाहुल्यता रहेगी।
6. **बुध + शनि**–जातक दूरदर्शिता से परिपूर्ण होगा, भाग्योदय शीघातिशीघ्र होगा।
7. **बुध + राहु**–जातक विपरीत बात कहने वाला, पुत्र सन्तति में बाधा पाता है। 'सर्पशापात युत: क्षय' होता है।
8. **बुध + केतु**–जातक की विद्या में हल्की रुकावट आती है। गर्भपात का भय रहता है।

तुलालग्न में बुध की स्थिति षष्ट्म स्थान में



तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहां छठे स्थान में बुध मीन राशि का होगा। जो कि इसकी शत्रु राशि है। बुध यहां नीच का है जातक के गृहस्थ सुख में बाधाएं आएंगी। यहां 'भाग्यभंग योग' बनने से जातक की उन्नति में बहुत बाधाएं आएंगी। उसे शत्रु बहुत परेशान करेंगे। विद्या कई बार कुण्ठित रहेगी। यहां 'सरल योग' के कारण जातक शत्रुओं को परास्त करने में समर्थ होगा।

दृष्टि–षष्टम बुध की दृष्टि व्यय भाव (कन्या राशि) पर होगी जो कि उसके स्वयं का स्वगृह है। फलत: जातक परोपकार, धर्मकार्य में रुपया खर्च करेगा।

निशानी–जातक परस्त्री गामी होता है।

दशा–बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। खर्च भी प्रबल होगा पर मिले-जुले परिणाम प्राप्त होंगे।

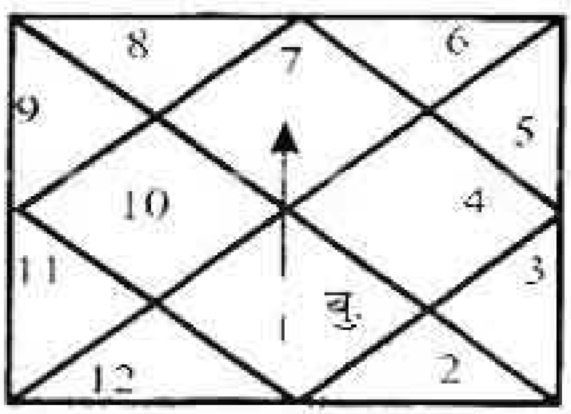
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसहिंता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। षष्ट्म स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध

के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को देख रहे हैं, फलत: जातक बुद्धिशाली होगा। जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। सूर्य छठे जाने से 'लाभभंग योग' तथा बुध के छठे जाने से 'भाग्यभंग योग' बना। फलत: यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। व्यापार में लाभ के प्रति जातक शंकित रहेगा। व्ययेश छठे जाने से 'विमल योग' बना इस योग के कारण जातक समाज का लब्ध एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**–जातक की आय अनैतिक संसाधनों से होगी।
3. **बुध + मंगल**–जातक का आर्थिक पतन होगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक का 'पराक्रम भंग' होगा।
5. **बुध + शुक्र**–शुक्र के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य, वैभव का स्वामी होगा पर जीवन का उन्नति मार्ग कंटकपूर्ण होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक का पतन होगा। संतान प्राप्ति में बाधाएं आएंगी। विद्या में रुकावटें आएंगी।
7. **बुध + राहु**–जातक पर शत्रुओं का प्रकोप रहेगा।
8. **बुध + केतु**–जातक को बौद्धिक परशानी रहेगी।

तुलालग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में



तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहां सप्तमस्थ बुध मेष राशि का होगा। ऐसा जातक हठी, क्रोधी, निर्लज्ज व स्वेच्छाचारी होगा। जातक को ससुराल व स्त्रीकुल से धनलाभ होगा। जातक का जीवन साथी भाग्यशाली होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ बुध की दृष्टि लग्न स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा।

निशानी–स्त्री सुख में बीमारी या अन्य कारणों से कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहती है।

दशा–बुध की दशा-अन्तर्दशा में भाग्योदय होगा। उन्नति के नये मार्ग खुलेंगे।

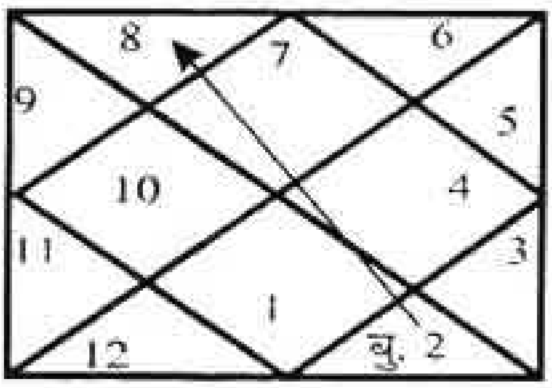
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। सप्तम स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध

के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर सूर्य उच्च का होगा तथा दोनों ग्रह लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिशाली व भाग्यशाली होगा। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। 'कुलदीपक योग' एवं 'रविगत राजयोग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा एवं सरकारी क्षेत्र में उच्चपद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति करेगा।

2. **बुध + चंद्र**–जातक की पत्नी सुंदर होगी। पेट का ऑपरेशन होगा।
3. **बुध + मंगल**–यहां 'रूचक योग' के कारण जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य धन को भोगेगा।
4. **बुध + गुरु**–पेट की बीमारी सम्भव है।
5. **बुध + शुक्र**–जातक निर्दयी व सेक्सी होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक परम भाग्यशाली होगा।
7. **बुध + राहु**–जातक की प्रवृत्ति आपराधिक होगी।
8. **बुध + केतु**–जातक स्वेच्छाचारी होगा।

तुलालग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में



तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहां अष्टमस्थ होने से बुध वृष राशि का होगा। जो कि इसकी मित्र राशि है पर यहां 'भाग्यभंग योग' के कारण जातक के भाग्योदय में देरी होगी। भाग्योदय हेतु थोड़ा संघर्ष करना पड़ेगा। परन्तु व्ययेश का अष्टम स्थान में जाना 'सरल योग' के कारण शुभ माना गया है। जातक को संघर्ष के बाद सफलता निश्चित रूप से मिलेगी।

दृष्टि–अष्टमस्थ बुध की दृष्टि धन भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक को धन की कमी नहीं रहेगी।

निशानी–जातक को खर्च की अधिकता के कारण कर्ज लेना पड़ेगा।

दशा–बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय तो होगा परन्तु संघर्ष से मुक्ति नहीं मिलेगी। जातक को यह दशा मिश्रित फलकारी होगी।

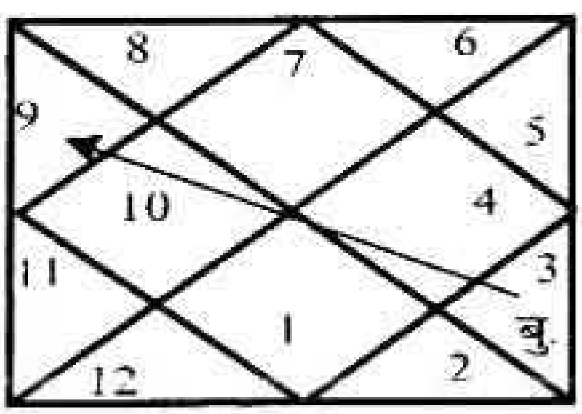
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसहिंता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। अष्टम

स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव को देखेंगे सूर्य के आठवें जाने से 'लाभभंग योग' तथा बुध आठवें जाने से 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि होगी। फलत: यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिशाली होगा। भाग्यशाली भी होगा परन्तु भाग्योदय हेतु संघर्ष बहुत करना पड़ेगा। व्यापार-व्यवसाय में लाभ के प्रति भी जातक आशंकित रहेगा। व्ययेश आठवें जाने से 'विमल योग' बना अत: जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**–रोग के कारण शल्य चिकित्सा होगी।
3. **बुध + मंगल**–धन की कमी सताती रहेगी।
4. **बुध + गुरु**–गुप्त बीमारी होगी।
5. **बुध + शुक्र**–जातक सांसारिक सुख एवं वासनाओं से ग्रसित होगा।
6. **बुध + शनि**–पुत्र को लेकर चिन्ता होगी।
7. **बुध + राहु**–गुप्त बीमारियां होंगी।
8. **बुध + केतु**–लम्बी बीमारी सम्भव है।

तुलालग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में



तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक है एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहा नवम भावस्थ बुध मिथुन राशि में स्वगृही होगा। ऐसा जातक महान, सौभाग्यशाली व भाग्यवान होगा। ऐसा जातक शालीन व विनम्र होता है। अपनी व्यवहार कुशलता के कारण मित्रों व समाज में जातक की अच्छी छवि होती है। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यवान, न्यायप्रिय एवं बुद्धिशाली होता है।

दृष्टि–नवम भावस्थ बुध की दृष्टि तृतीय भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक को मित्रों व सहोदरों से लाभ होगा।

निशानी–जातक सदैव आशावादी एव रचनात्मक कार्यो में रुचि लेगा।

दशा–बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक का जबरदस्त भाग्योदय होगा।

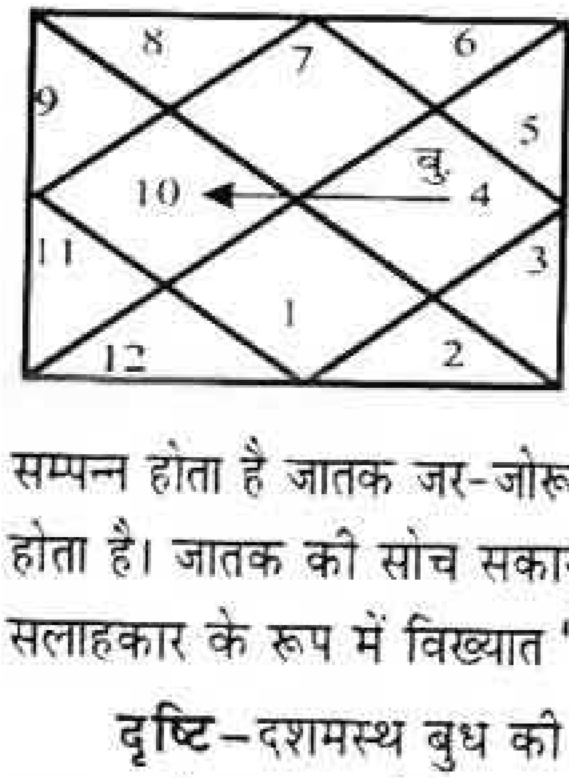
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसहिंता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। नवम स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के

साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान को देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिशाली, भाग्यशाली एवं महान पराक्रमी होगा। जातक को पिता की संपत्ति मिलेगी तथा मित्रों एवं परिजनों का सहयोग समय-समय पर मिलता रहेगा। जातक समाज का लब्ध एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। योग घटित होने के समय सूर्य की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी। बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

2. **बुध + चंद्र**–पिता (पैतृक) की संपत्ति मिलेगी।
3. **बुध + मंगल**–जातक महाधनी होगा।
4. **बुध + गुरु**–भाईयों व परिजनों की मदद बहुत रहेगी।
5. **बुध + शुक्र**–परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक व्यापारी होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक शिक्षित होगा व विदेशी भाषा पढ़ेगा।
7. **बुध + राहु**–भाग्योदय में रुकावट, बना काम बिगड़ेगा।
8. **बुध + केतु**–भाग्योदय में संघर्ष महसूस होगा।

तुलालग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में



तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहां दशम स्थान में बुध कर्क राशि में होगा। जो इसकी शत्रु राशि है। ऐसे जातक की प्रतिष्ठा अपनी जाति व समाज में बहुत होती है। जातक आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक दृष्टि से सुख सम्पन्न होता है जातक जर-जोरू, जमीन-जायदाद, व पैतृक संपत्ति के पक्ष में सुखी होता है। जातक की सोच सकारात्मक होती है। बुद्धि प्रौढ़ होती है। जातक अच्छे सलाहकार के रूप में विख्यात 'कुलदीपक' होता है।

दृष्टि–दशमस्थ बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव (मकर राशि पर होगी। फलतः जातक को वाहन व नौकर-चाकर का पूर्णसुख होगा।

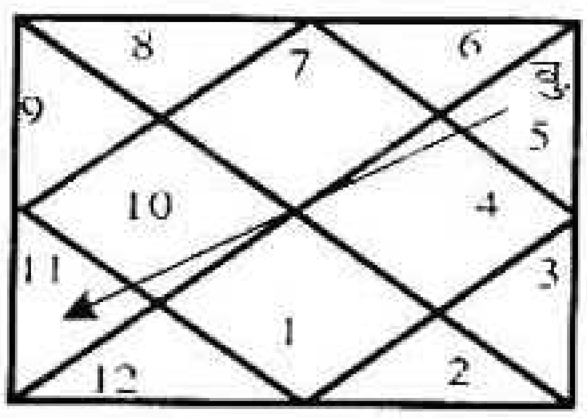
निशानी–जातक को पिता का सुख स्वल्प होता है। जातक लोकमान्य होता है।

दशा–बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। उसे उत्तम नौकरी की प्राप्ति होगी। उसका व्यापार-व्यवसाय बढ़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध-

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। दशम स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख भाव को देखेंगे। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलत: जातक बुद्धिशाली होगा। राज्य पक्ष, सरकारी क्षेत्र में उसका दबदबा, वर्चस्व होगा जातक को माता की संपत्ति मिलेगी। 'कुलदीपक योग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक समाज का लब्ध एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**—जातक को अच्छी नौकरी, अच्छा वाहन मिलेगा।
3. **बुध + मंगल**—जातक धनी होगा। मंगल यहां दिग्बली होगा।
4. **बुध + गुरु**—मित्रों से लाभ होगा। 'हंस योग' के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा।
5. **बुध + शुक्र**—जातक सम्पन्न होगा। उसके पास एकाधिक वाहन होंगे।
6. **बुध + शनि**—जातक के पास बड़ी गाड़ी व बड़ा बंगला होगा।
7. **बुध + राहु**—राज्यपथ में रुकावट।
8. **बुध + केतु**—वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

तुलालग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में



तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहां एकादश स्थान में बुध सिंह राशि में होगा जो इसकी मित्र राशि है। ऐसे जातक उत्तम लेखक, साहित्यकार, सम्पादक व प्रकाशक होते हैं। जातक संवेदनशील होता है तथा लोगों के मनोभावों को समझने की संवेदना, योग्यता रखता है। जातक गुरुजनों का भक्त एवं पुण्यात्मा होता है।

दृष्टि—एकादश भाव में स्थित बुध की दृष्टि पंचम भाव (कुंभ राशि) पर होगी। फलत: जातक को शैक्षणिक डिग्री मिलेगी। जातक विद्या-बुद्धि, पद-प्रतिष्ठा, स्त्री व संतान से सुखी होता है।

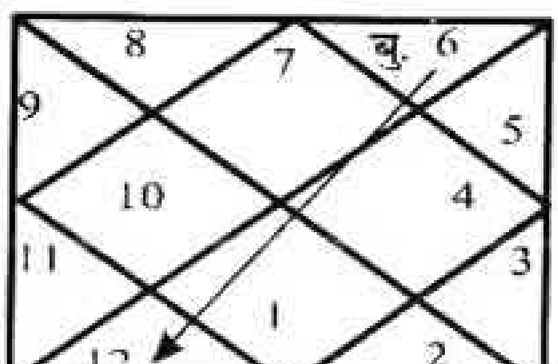
निशानी—जातक को दूसरों का धन मिलता है। यात्राएं जातक के लिए लाभप्रद होंगी।

दशा–बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसहिंता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। एकादश स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां सूर्य स्वगृही होगा तथा यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को देखेंगे, फलतः जातक बुद्धिशाली होगा व शिक्षित होगा। जातक की सन्तति भी शिक्षित होगी। जातक व्यापार में रुचि लेगा तथा उसकी आमदनी के जरिए एक से अधिक होंगे। जातक भाग्यशाली होगा।
2. **बुध + चंद्र**–व्यापार में लाभ होगा।
3. **बुध + मंगल**–व्यापार में धन लाभ, पत्नी के नाम वाले धंधे में लाभ होगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक के पुत्र जरूर होगा।
5. **बुध + शुक्र**–कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।
6. **बुध + शनि**–कन्या व पुत्र दोनों के योग।
7. **बुध + राहु**–लाभ में व्यवधान।
8. **बुध + केतु**–व्यापार में घाटा होगा।

तुलालग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में



तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक है एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहां द्वादश स्थान में बुध अपनी स्वराशि कन्या में होगा। जो इसकी उच्च राशि है। जहां अंशों तक बुध परमोच्च कहलाता है। जातक महान दानी होता है। परोपकारी एवं पुण्यात्मा होता है। 'भाग्यभंग योग' के कारण जातक मेहमान नवाज होता है। अतिथियों के आदर-सत्कार एवं यारबाजी, दोस्ती निभाने में खूब रुपया खर्च करता है। द्वादशेश का द्वादश में होना 'सरल योग' बनाता है। जिससे जातक विदेश में Export-Import के कार्य में धन कमाने में विशेष सफलता प्राप्त करता है।

दृष्टि–द्वादशस्थ बुध की दृष्टि छठे भाव (मीन राशि) पर होगी फलतः जातक रोग व शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः सक्षम होता है।

दशा–बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। खूब धन आएगा पर खर्च भी होता रहेगा।

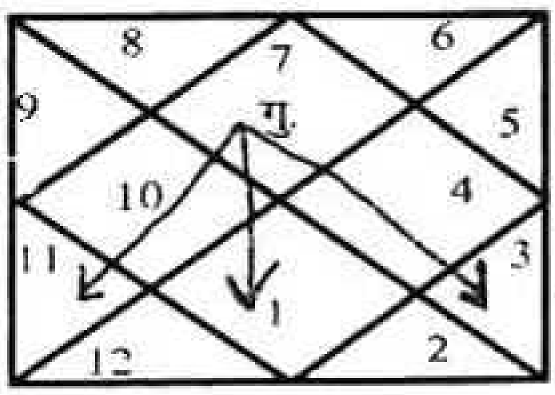
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसहिंता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। द्वादश स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। बुध बारहवें जाने से 'भाग्यभंग योग' तथा सूर्य के कारण 'लाभभंग योग' योग बना। अत: जातक एक बार ऊपर चढ़कर नीचे गिरेगा। खर्च अधिक होगा। तीर्थाटन, धार्मिक यात्राओं में रुपया खर्च करेगा। व्ययेश स्वगृही होकर बारहवें होने से जातक परोपकारी दानी एवं समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–चंद्र यहां शत्रु राशि में अपने पुत्र परन्तु प्रच्छन्न शत्रु के साथ स्थित होने से उद्विग्न रहेगा।
3. **बुध + मंगल**–मंगल भंग होने से जातक सट्टेबाज होगा। जुआ में जातक की रुचि रहेगी।
4. **बुध + गुरु**–गुरु साथ होने से 'पराक्रमभंग योग' होगा। जातक के चलते कार्य में रुकावटें बहुत आएंगी।
5. **बुध + शुक्र**–शुक्र साथ होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक को शैय्या सुख मिलेगा। पर स्त्रियों से यौन संपर्क रहेगा।
6. **बुध + शनि**–यहां शनि साथ होने से 'विद्याभंग योग' एवं 'सुखहीन योग' क्रमश: बनेंगे। जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
7. **बुध + राहु**–तीर्थ यात्रा में चोरी, बौद्धिक परेशानी रहेगी।
8. **बुध + केतु**–तीर्थ यात्रा में धन खर्च होगा।

❑❑❑

तुलालग्न में गुरु की स्थिति

तुलालग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में



तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां लग्नस्थ बृहस्पति तुला राशि में होगा जो इसकी शत्रु राशि है। ऐसा जातक धर्म न्याय व नैतिक आचरणों से परिपूर्ण जीवन को जीयेगा। लग्नस्थ बृहस्पति 'केसरी योग' एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि करेगा। जातक अपने परिवार कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जीवन मे कोई काम अटका हुआ नहीं रहेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ बृहस्पति की दृष्टि पंचम भाव (कुंभ राशि), सप्तम भाव (मेष राशि) एवं नवम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। इसके कारण स्वस्थ देह, स्त्री सुख, संतान सुख की प्राप्ति होगी।

निशानी–जातक अपने सम्बन्धियों से ईर्ष्या रखता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में जातक को विद्या सुख, स्त्री सुख, संतान सुख की प्राप्ति होगी।

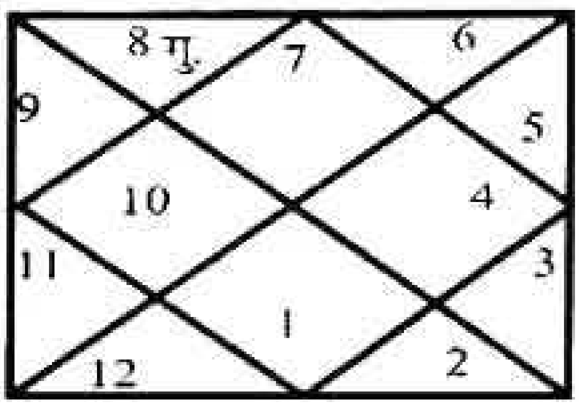
गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**-तुलालग्न के प्रथम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह पंचम स्थान, सप्तम भाव एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। तुलालग्न में यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है। क्योंकि तुलालग्न के लिए बृहस्पति पापी ग्रह है। अशुभ फल प्रदाता है। फलत: ऐसे जातक के पराक्रम में न्यूनता आएगी।

जातक की प्रथम सन्तति की मृत्यु होगी। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। फिर भी अन्तिम रूप से सफल रहेंगे।

2. **गुरु + सूर्य**–सूर्य नीच का होकर एक हजार राजयोग नष्ट करेगा। जातक को प्राईवेट नौकरी करनी पड़ेगी।
3. **गुरु + मंगल**–भाईयों तथा मित्रों से लाभ होगा।
4. **गुरु + बुध**–भाग्य प्रबल रहेगा। बुद्धिबल से लाभ होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–'मालव्ययोग' के कारण जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **गुरु + शनि**–'शश योग' के कारण जातक निश्चय ही राजातुल्य पराक्रमी होगा। धर्म शास्त्र का ज्ञाता होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां राहु व्यक्ति को धर्म का ज्ञाता व तार्किक स्वभाव का बनायेगा।
8. **गुरु + केतु**–जातक कुछ क्रोधी होगा पर गंभीर होगा।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में



तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां द्वितीयस्थ बृहस्पति वृश्चिक राशि में होगा जो इसकी मित्र राशि है। ऐसा जातक वाक्पटु होता है। मीठा एवं नीतिप्रिय वाणी को बोलता है। ऐसा जातक अध्ययन-अध्यापन, वकील, ज्यातिषी, धर्मोपदेशक के रूप में ज्यादा कीर्ति अर्जित करता है।

दृष्टि–द्वितीय भाव में स्थित बृहस्पति की दृष्टि छठे भाव (मीन राशि), अष्टम भाव तुला राशि एवं दसम भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलत: जातक ऋण, रोग व शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा। राज सरकार व राजनीति में भी उसका हस्तक्षेप होगा।

निशानी–जातक विदेशवासी, परस्त्रीगामी एवं साहसी होता है।

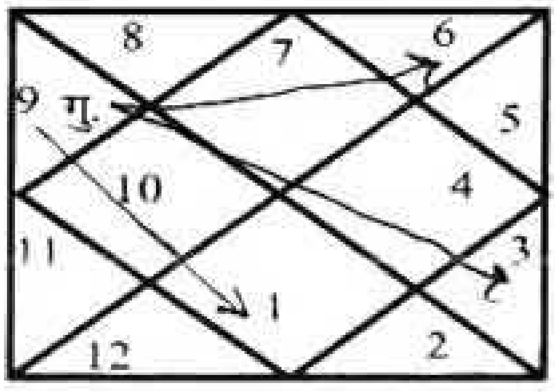
गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**-तुलालग्न के द्वितीय स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह

षष्टम स्थान, अष्टम स्थान एवं राज्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यह युति यहां ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक के शत्रुओं का नाश होगा। जातक की आयु बढ़ेगी। राजपक्ष में प्रभाव पड़ेगा। ऋण-रोग और शत्रु का भय तो रहेगा परन्तु इस शुभ योग के कारण जातक का बचाव होता रहेगा। मुसीबत में मदद मिलती रहेगी।

2. **गुरु + सूर्य**–जातक को स्वतन्त्र व्यापार में लाभ होगा।
3. **गुरु + मंगल**–जातक धनी होगा। भाईयों व मित्रों से लाभ होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक भाग्यशाली होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक को परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा।
6. **गुरु + शनि**–जातक धनी होगा। सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।
7. **गुरु + राहु**–धन के घड़े में छेद है। जो कुछ प्राप्त होगा, नष्ट होता चला जाएगा।
8. **गुरु + केतु**–धन प्राप्ति में संघर्ष है।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में



तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां तृतीय स्थान में बृहस्पति धनु राशि में होकर स्वगृही होगा। ऐसा जातक पराक्रमी होता है। जातक पिता, बड़े भाई, छोटे भाई-बहन व परिवार की सेवा करने वाला, मित्रों में सच्चा मित्र होता है। जातक लेखक, सम्पादक, प्रकाशक, धार्मिक कार्य व जनसम्पर्क से धनोपार्जन करने में सक्षम होगा।

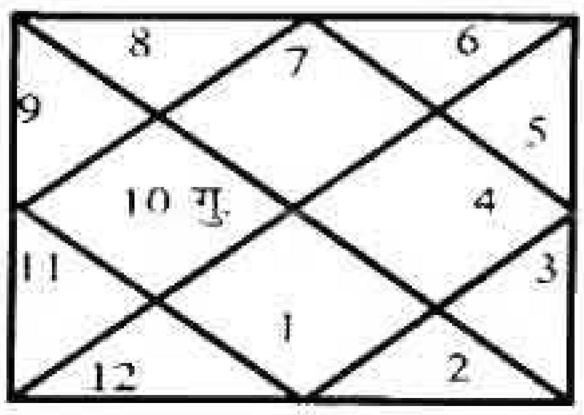
दृष्टि–तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (मेष राशि) भाग्य भवन (मिथुन राशि) एवं व्यय भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक की पत्नी पतिव्रता, धार्मिक होगी। जातक सौभाग्यशाली होगा एवं परोपकार के कार्यों में धन का व्यय करेगा।

निशानी–जातक हमेशा समझौते वादी दृष्टिकोण में विश्वास रखेगा। अपने परम शत्रु से भी सौहार्दपूर्ण व प्रेमपूर्ण तरीके से बात करना चाहेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के तृतीय स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति तुलालग्न के लिए पापी व अशुभ फलकर्त्ता है। परन्तु यहां तृतीय स्थान में धनु राशि में बृहस्पति स्वगृही होगा। जहां से वह सप्तम भाव, भाग्य स्थान एवं लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: आपका पराक्रम तेज रहेगा। विवाह के शीघ्र आपका भाग्योदय होगा। आपकी गणना भाग्यशाली लोगों में होगी। इस गजकेसरी योग के कारण आपको व्यापार-व्यवसाय में भी उचित लाभ होता रहेगा।
2. **गुरु + सूर्य**–जातक पराक्रमी होगा। जनसम्पर्क से लाभ होगा।
3. **गुरु + मंगल**–जातक को मित्रों द्वारा धन मिलेगा। बड़े भाई से लाभ होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक परम सौभाग्यशाली होगा। गुरुजनों से लाभ होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक को परिश्रम का मीठा फल मिलेगा।
6. **गुरु + शनि**–जातक धनी होगा।
7. **गुरु + राहु**–धन के घड़े में छेद मित्रों के कारण होगा।
8. **गुरु + केतु**–भाईयों से मनमुटाव रहेगा।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति मकर राशि में होकर नीच का होगा। बृहस्पति अंशों पर परम नीच का होगा। बृहस्पति केन्द्रस्थ होने के कारण 'केसरी योग' एवं 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक कुल का नाम रोशन करने वाला, रोग व ऋण का नाश करने में समर्थ होगा। फिर भी शत्रुओं के कारण धन व मान की हानि होगी। मातृ पक्ष से कष्ट, पुलिस व अदालत के कार्यों में धन व समय का अपव्यय होगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति की दृष्टि अष्टम भाव (वृष राशि), दशम भाव (कर्क राशि) एवं व्यय भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलत: जातक लम्बी आयु वाला, राज पक्ष में सम्मान पाने वाला एवं धार्मिक कार्य में रुपया खर्च करने वाला उदार हृदय का व्यक्ति होगा।

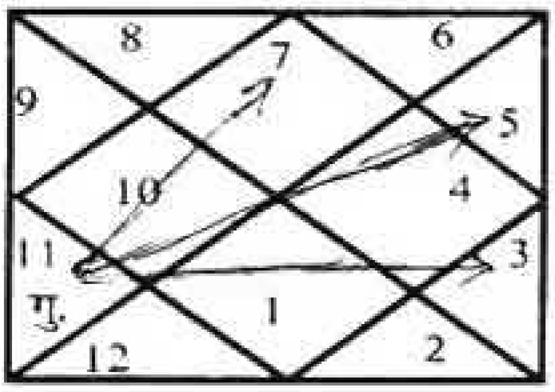
निशानी—जातक दुष्टा स्त्री का पति होगा।

दशा—बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**—तुलालग्न के चतुर्थ स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव, राज्य स्थान एवं व्यय भाव पर होगी। इस युति के कारण माता का सुख मिलेगा, आयु लंबी होगी। धन खर्च बहुत होगा पर खर्चा शुभ होगा। जीवन में कोई कार्य रुका हुआ नहीं रहेगा। अन्तिम सफलता निश्चित है।
2. **गुरु + सूर्य**—जातक पराक्रमी होगा। व्यापार से धन कमाएगा।
3. **गुरु + मंगल**—'रूचक योग' के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। 'यहां नीचभंग राजयोग' भी बनेगा। जातक के पास अनेक वाहन व मकान होंगे।
4. **गुरु + बुध**—जातक भाग्यशाली होगा। बुद्धि बल से धन कमाएगा।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक धनी व एकाधिक वाहनों का स्वामी होगा।
6. **गुरु + शनि**—'शश योग' के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। यहां 'नीचभंग राजयोग' भी बनेगा। जातक के पास अनेक वाहन व मकान होंगे।
7. **गुरु + राहु**—जातक की माता बीमार रहेगी।
8. **गुरु + केतु**—माता का सुख कमजोर रहेगा।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में



तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां पंचम स्थान बृहस्पति कुंभ राशि में होगा। गुरु यहां षष्टम भाव से द्वादश स्थान पर होने के कारण पाप फल से मुक्त होगा। ऐसा जातक बौद्धिक गुणों से भरपूर-चिन्तनशील प्रवृत्ति का होगा। जातक दार्शनिक एवं धार्मिक उपदेशक होगा। जातक भरे-पूरे कुटुम्ब का स्वामी होगा। जातक चुपचाप उन्नति पथ पर आगे बढ़ने वाला, कठोर परिश्रमी होगा।

दृष्टि—पंचमस्थ बृहस्पति की दृष्टि नवम भाव (मिथुन राशि), एकादश भाव (सिंह राशि) एवं लग्न भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक सौभाग्यशाली होगा। स्वयं के पुरुषार्थ से धनार्जन करेगा पर गति धीमी होगी।

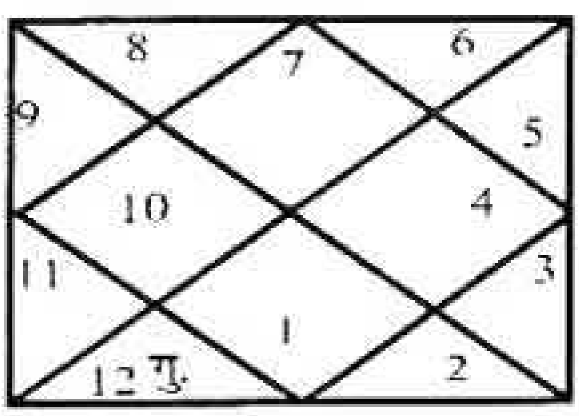
निशानी–जातक प्राय: तीन या पांच पुत्रों से युक्त होगा परन्तु पुत्रों से विचार नहीं मिलेंगे।

दशा–बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी। जातक आगे बढ़ेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के पंचम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां पापी ग्रह व अशुभ फलकर्त्ता होते हुए भी आपको शुभ सन्तति देगा। इसकी दृष्टि भाग्य भाव, लाभ भवन एवं लग्न स्थान पर है। फलत: आपके भाग्य का उदय किसी की मदद से होगा। व्यापार-व्यवसाय में भी आपको लाभ समय-समय पर मिलता रहेगा। आपकी उन्नति चहुंमुखी होगी। एक साथ अनेक कार्यों से आपको लाभ होगा।
2. **गुरु + सूर्य**-जातक को पुत्र अवश्य होगा एवं व्यापार में भी लाभ होगा।
3. **गुरु + मंगल** -जातक धनवान होगा। पुत्रवान होगा।
4. **गुरु + बुध** -जातक को कन्या व पुरुष दोनों सन्तति की प्राप्ति होगी।
5. **गुरु + शुक्र**-जातक को कन्या व पुरुष दोनों सन्तति की प्राप्ति होगी।
6. **गुरु + शनि** -जातक को पांच पुत्र हो सकते हैं।
7. **गुरु + राहु** -संतान प्राप्ति में बाधा सम्भव है।
8. **गुरु + केतु** -एक-दो गर्भपात सम्भव हैं।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति षष्ट्म स्थान में



तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां छठे स्थान में स्थित बृहस्पति मीन राशि में होगा जो इसकी स्वयं की राशि है। बृहस्पति के यहां स्थित होने पर 'पराक्रमभंग योग' की सृष्टि होगी। जातक के मित्र एवं कुटुम्बी विश्वास योग्य नहीं होते। षष्टेश षष्टम में स्वगृही होने से 'हर्षयोग' बना। इसके कारण जातक को नौकरी, व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। पिता पक्ष मजबूत रहेगा। पद-प्रतिष्ठा बरकरार बनी रहेगी।

दृष्टि–छठे भावगत बृहस्पति की दृष्टि दशम भाव (कर्क राशि), व्यय भाव (कन्या राशि) एवं धन भाव (वृश्चिक राशि) पर रहेगी। फलतः जातक धनप्राप्ति के प्रयासों में सफलता प्राप्त करेगा। राजनीति में जातक का वर्चस्व रहेगा एवं परोपकार के कार्यों में भी जातक रुचि लेगा।

निशानी–जातक की स्वगोत्रियों से शत्रुता परन्तु जाति के अतिरिक्त अन्य लोगों से मित्रता रहेगी।

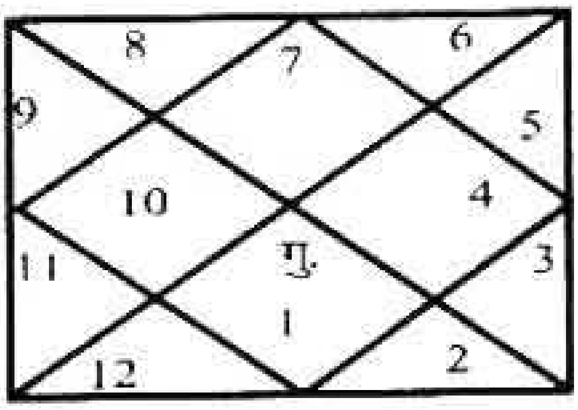
दशा–बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**-तुलालग्न के षष्ट्म स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा उसकी दृष्टि दशम भाव, व्यय स्थान एवं धन स्थान पर होगी, फलतः रोग का नाश होगा। यहां पर क्रमशः 'पराक्रमभंग योग' एवं 'राज्यभंग योग' की सृष्टि दुःखद है। कोई अन्यतम मित्र, जिस पर आप ज्यादा भरोसा करते हैं, धोखा देगा। सरकार से, कोर्ट कचहरी से दण्ड भी मिल सकता है सावधान रहें। फिर भी कुल मिलाकर आपको इस योग के कारण कोई गंभीर नुकसान नहीं होगा। प्रतिष्ठा बनी रहेगी।
2. **गुरु + सूर्य**-राजदण्ड की प्राप्ति सम्भव है।
3. **गुरु + मंगल** -धन का अभाव रहेगा। गृहस्थ सुख में कलह रहेगी।
4. **गुरु + बुध** -भाग्य में रुकावट परन्तु 'नीचभंग राजयोग' के कारण अन्तिम सफलता निश्चित है। 'हर्ष योग' से बृहस्पति का अशुभत्व नष्ट होगा।
5. **गुरु + शुक्र**-शुक्र के कारण 'किंबहुना राजयोग' बना। 'हर्ष योग' के कारण बृहस्पति का अशुभत्व नष्ट होगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **गुरु + शनि** -भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु संघर्ष रहेगा। सन्तति में बाधा का योग बनता है।
7. **गुरु + राहु** -राहु राजयोग देता है परन्तु गुप्त शत्रु हावी रहेंगे।
8. **गुरु + केतु** -शत्रुओं से सावधान रहना अनिवार्य है।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में

तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां सप्तम स्थान में बृहस्पति मेष राशि में होगा जो इसकी मित्र राशि है। इसके साथ ही



'केसरी योग' एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक कुल में श्रेष्ठ, अपने उत्साह एवं परिश्रम के द्वारा सभी कार्यों में सफलता प्राप्त करता है। जातक धार्मिक पुस्तकों का लेखक, कर्मकाण्ड का ज्ञाता, ज्योतिष तन्त्र-मन्त्र शास्त्र का ज्ञाता होता है तथा जनसम्पर्क के माध्यम से धनार्जन करने में कुशल होता है।

दृष्टि–बृहस्पति की दृष्टि लाभ भाव (सिंह राशि), लग्न भाव (तुला राशि) एवं पराक्रम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: जातक महान पराकमी होगा। व्यापार-व्यवसाय व नौकरी के द्वारा लाभ अर्जित करने वाला, पुरुषार्थ के द्वारा सफलता प्राप्त करने में सफल होता है।

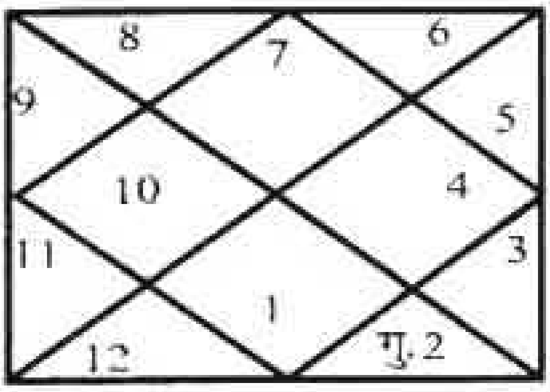
निशानी–जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है। जातक की अन्तिम अवस्था सुखमय होती है।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के सप्तम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान पर होगी। फलत: आपके कारोबार में आपको तरक्की-उन्नति मिलेगी। व्यापार-व्यवसाय में समय-समय पर धन की प्राप्ति होती रहेगी और पराक्रम से, मित्र सर्किल, समाज में कीर्ति व यश की प्राप्ति होगी। बृहस्पति व चंद्रमा दोनों की दशाएं शुभ फल देंगी।
2. **गुरु + सूर्य**–यहां सूर्य उच्च का होगा। 'रविकृत राजयोग' के कारण राजकीय नौकरी का योग बनता है।
3. **गुरु + मंगल**–यहां मंगल स्वगृही होने से 'रूचक योग' बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक भाग्यशाली होगा। भाईयों से लाभ होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक मित्रों व परिजनों की मदद से उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।
6. **गुरु + शनि**–शनि यहां भले ही नीच का है फलत: जातक सुखी भी होगा। सन्तति वाला भी होगा।
7. **गुरु + राहु**–गृहस्थ सुख में बाधा है पर गुरु की वजह से सब कुछ सामान्य रहेगा।

8. **गुरु + केतु** -गृहस्थ सुख में टकराव होगा पर गुरु की वजह से टकराव टल जायेगा।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में



तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है एवं बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां अष्टम भाव में बृहस्पति वृष राशि में होगा जो इसकी शत्रु राशि है। बृहस्पति आठवें जाने से 'पराक्रमभंग योग' की सृष्टि होती है। ऐसे जातक को राजा द्वारा दण्डित होने की सम्भावना रहती है। जातक पण्डितों का शत्रु एवं स्वजाति का द्वेषी होता है। षष्टेश का अष्टम स्थान में होने से 'हर्ष योग' बनता है। जिसके कारण अशुभ फलों की निवृत्ति होकर शुभ फलों की प्राप्ति होती है। जातक को धन, भवन, जमीन-जायदाद, प्रतिष्ठा, अच्छी नौकरी एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

दृष्टि–बृहस्पति की दृष्टि व्यय भाव (कन्या राशि), धन भाव (वृश्चिक राशि), एवं चतुर्थ भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक की आयु दीर्घ होगी। उसे धन की कमी नहीं रहेगी। उसे मातृपक्ष से सहयोग मिलेगा।

निशानी–जातक दीन-दु:खियों की सेवा करेगा।

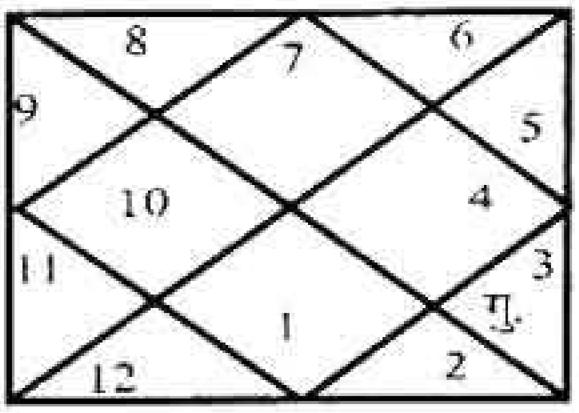
दशा–बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के अष्टम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा उच्च का होगा तथा दोनों ग्रहों की दृष्टि व्यय भाव, धन स्थान एवं सुख स्थान पर होगी। रुपयों की बरकत नहीं होगी तथा सुख प्राप्ति में कुछ न कुछ बाधा आती रहेगी। यहा बृहस्पति के कारण पराक्रभंग योग एवं चंद्रमा के कारण 'राज्यभंग योग' भी बन रहा है। इसका प्रभाव भी 40 प्रतिशत जातक के जीवन पर पड़ेगा अत: सरकारी अधिकारियों से न उलझें तथा मित्रों के साथ व्यवहार सही रखें।
2. **गुरु + सूर्य**–राजदण्ड सम्भव है।
3. **गुरु + मंगल**–धन का अभाव रहेगा। गृहस्थ सुख में बाधा पड़ेगी।
4. **गुरु + बुध**–'भाग्यभंग योग' के कारण भाग्योदय में बाधा आएगी।

5. **गुरु + शुक्र**–'लग्नभंग योग' के कारण परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
6. **गुरु + शनि**–'सुखभंग योग' एवं 'संतानहीन योग' बनता है।
7. **गुरु + राहु**–गुप्त बीमारी रहेगी। बीमारी के प्रति लापरवाह न रहें।
8. **गुरु + केतु**–दुर्घटना योग बनता है। सावधानी अनिवार्य है।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान में



तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां नवम स्थान में बृहस्पति मिथुन राशि में होगा जो इसकी मित्र राशि है। ऐसे जातक का बौद्धिक स्तर उच्च से उच्चतर होगा। जातक धर्माधिकारी या न्यायाधीश होगा। जातक उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा। जातक उच्च श्रेणी का ग्रन्थकार, पत्रकार अथवा राजनीतिज्ञ होाग। जातक धर्मशास्त्र, नीति शास्त्र अथवा व्यवहार-शास्त्र का सच्चा उपदेशक होगा।

दृष्टि–नवम भावगत बृहस्पति की दृष्टि लग्न स्थान (तुला राशि), पराक्रम स्थान (धनु राशि), एवं पंचम भाव (कुंभ राशि) पर होगी। फलत: जातक महान पराक्रमी, बुद्धिमान, एवं उन्नति पथ पर निरन्तर गतिमान होगा।

निशानी–जातक में योगी व भोगी दोनों के गुण होंगे।

दशा–बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के नवम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। चंद्रमा शत्रुक्षेत्री है तथा बृहस्पति पापी है। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम भाव पर है। फलत: जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जाएगा। जातक की उन्नति, भाग्योदय थोड़े संघर्ष के बाद होगा। जातक प्रजावान होगा। संघर्ष के बाद विजय मिलेगी व जीवन सफल रहेगा।
2. **गुरु + सूर्य**–जातक भाग्यशाली होगा। जातक को राजकीय सम्मान मिलेगा।
3. **गुरु + मंगल**–जातक धनवान होगा। गृहस्थ सुख उत्तम होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक महाभाग्यवान होगा। मित्र व जनसम्पर्क से लाभ संभावित है।

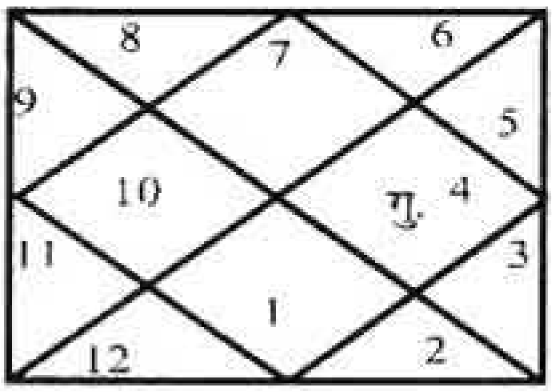
5. **गुरु + शुक्र**–जातक का भाग्य पग-पग पर जातक का साथ देगा।

6. **गुरु + शनि**–जातक उच्च भवन का स्वामी होगा।

7. **गुरु + राहु**–जातक भाग्योदय में रुकावट महसूस करेगा पर अन्तिम सफलता निश्चित है।

8. **गुरु + केतु**–जातक का भाग्योदय कुछ विलम्ब से होगा।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में



तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां दशम भाव में बृहस्पति कर्क राशि में होगा फलत: उच्च का होगा। कर्क राशि के अंशों में बृहस्पति परमोच्च का कहलाता है। बृहस्पति की इस स्थिति के कारण यहां 'हर्ष योग', 'केसरी योग' व 'कुलदीपक योग' क्रमश: उत्पन्न हुए। ऐसा जातक राजा, राजातुल्य ऐश्वर्य व सुखों को प्राप्त करता है। व्यक्ति को पैतृक संपत्ति, उत्तम भवन एवं नौकर-चाकर के सुख की प्राप्ति सहज में ही हो जाती है। जातक समाज का प्रभावशाली व्यक्ति होगा।

दृष्टि–दशमस्थ उच्च के बृहस्पति की दृष्टि धन भाव (वृश्चिक राशि), चतुर्थ भाव (मकर राशि) एवं छठे भाव (मीन राशि) पर होगी। फलत: जातक को माता का सुख, धन प्राप्ति का सुख एवं रोग, ऋण व शत्रु को नाश करने का सुख मिलेगा।

निशानी–जातक विदेश जाकर ज्यादा सुखी होता है।

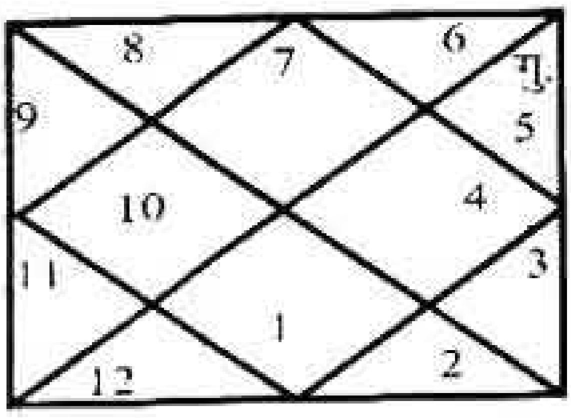
दशा–बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में जातक को राजे ऐश्वर्य, भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के दशम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा स्वगृही एवं बृहस्पति उच्च का होगा। 'किंबहुना योग' के कारण यह इस योग की सर्वोत्तम स्थिति है। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम भाव पर है। फलत: धन की प्राप्ति 24 वर्ष की आयु से होनी शुरू हो जाएगी। जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी। मां का सुख मिलेगा एवं जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होगा।

2. **गुरु + सूर्य**–जातक को राष्ट्रीय स्तर पर राजकीय सम्मान मिलेगा।
3. **गुरु + मंगल**–'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक पराक्रमी राजा जैसा जीवन जीएगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक परम सौभाग्यशाली होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक को उच्च वाहन व पैतृक संपत्ति मिलेगी।
6. **गुरु + शनि**–जातक को माता की संपत्ति मिलेगी। वाहन भी मिलेगा।
7. **गुरु + राहु**–राज्य पक्ष से कष्ट पहुंचेगा।
8. **गुरु + केतु**–राजा से संकट का संदेश आएगा।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में



तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां एकादश भाव में बृहस्पति सिंह राशि में होगा जो इसकी मित्र राशि है। ऐसा जातक शत्रु से धन पाने वाला होता है। जातक साहसी एवं दूसरों की सेवा करने वाला परोपकारी व्यक्ति होता है। जातक प्रतिष्ठावान होता है।

दृष्टि–सिंहस्थ बृहस्पति की दृष्टि यहां तृतीय स्थान (धनु राशि), पंचम भाव (कुंभ राशि), एवं सप्तम भाव (मेष राशि) पर होगी, फलत: जातक पराक्रमी होगा। पर स्त्री व संतान सम्बन्धी कुछ कष्ट पाने वाला होता है।

निशानी–जातक संतान वृद्धि में रुकावट महसूस करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के एकादश स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर यह दोनों शुभ ग्रहों पराक्रम भाव, पंचम भाव एवं सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक का पराक्रम बढ़ेगा। उसे पुत्र सन्तति की प्राप्ति होगी। पत्नी सुंदर मिलेगी। जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होगा।
2. **गुरु + सूर्य**–राजकीय सम्मान मिलेगा। कुटुम्ब पक्ष मजबूत रहेगा।
3. **गुरु + मंगल**–धन की प्राप्ति होगी। व्यापार से लाभ होगा।
4. **गुरु + बुध**–भाग्य मजबूत रहेगा। मित्रों से लाभ होगा।

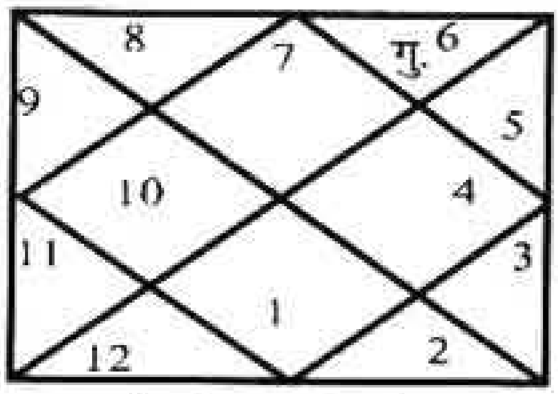
5. **गुरु + शुक्र**–जातक उन्नति पथ पर आगे बढ़ता रहेगा। बुजुर्गों की सलाह लाभप्रद रहेगी।

6. **गुरु + शनि**–जातक उद्योगपति होगा एवं उसे सभी सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी। पुत्र लाभ भी होगा।

7. **गुरु + राहु**–लाभांश में रुकावट है।

8. **गुरु + केतु**–लाभ प्राप्ति में बाधा आएगी।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में



तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां द्वादश भाव में बृहस्पति कन्या राशि में होगा जो इसकी शत्रु राशि है। बृहस्पति की यह स्थिति 'पराक्रमभंग योग' की सृष्टि करती है। ऐसे जातक के मित्र एवं परिजन अविश्वसनीय होते हैं। जातक की मान-प्रतिष्ठा भंग हो सकती है। यहां षष्टेश का बारहवें स्थान पर होने से 'हर्ष योग' बना। इससे बृहस्पति का अशुभत्व समाप्त हो गया फलत: जातक धनी, मानी, सुखी एवं समाज का जाना-पहचाना व्यक्ति होता है। जातक का जनसम्पर्क विस्तृत होता है।

दृष्टि–द्वादश भावगत बृहस्पति की दृष्टि चतुर्थ भाव (मकर राशि), षष्टम भाव (मीन राशि) एवं अष्टम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक ऋण, रोग व शत्रु को नष्ट करने में सक्षम व समर्थ होता है।

निशानी–जातक व्यसन में रुपया खर्च करता है।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

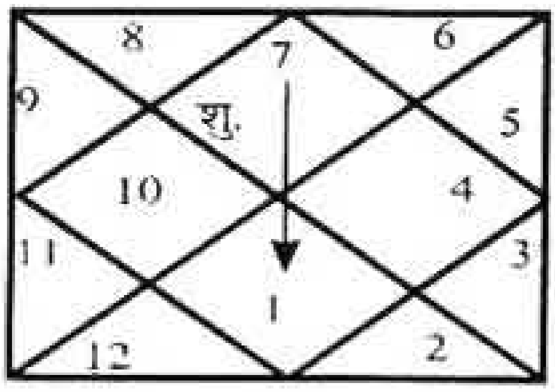
1. **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के द्वादश स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह चतुर्थ भाव, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। तथा 'पराक्रभंग योग' एवं 'राज्यभंग योग' की सृष्टि भी करेंगे फलत: गजकेसरी योग की यहां ज्यादा सार्थकता नहीं है फिर भी सुख में वृद्धि होगी। शत्रुओं का नाश होगा तथा जातक का दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा। जातक को संघर्ष के बाद सफलताएं मिलती रहेंगी। जो कि सफल जीवन के लिए बहुत जरूरी है।

2. **गुरु + सूर्य**–राजदण्ड की सम्भावना है।
3. **गुरु + मंगल**–धन की तकलीफ आएगी। गृहस्थ सुख में बाधा होगी।
4. **गुरु + बुध**–भाग्योदय में रुकावट आएगी।
5. **गुरु + शुक्र**–परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
6. **गुरु + शनि**–शिक्षा में रुकावट, सन्तति में बाधा सम्भव है।
7. **गुरु + राहु**–राहु के कारण जातक चिन्ताग्रस्त रहेगा। नींद कम आएगी।
8. **गुरु + केतु**–केतु के कारण नींद कम आएगी।

❑❑❑

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में



तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है। फलतः दुःस्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलतः शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र यहां तुला राशि में स्वगृही होकर सप्तम भाव (मेष राशि) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। शुक्र यहां केन्द्र में होने से 'कुलदीपक योग' बना। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला यशस्वी होता है।

मालव्य योग–स्वगृही शुक्र लग्न में होने से यह योग बना। यह पंचमहापुरुष योगों में से उत्तम योग है। ऐसा जातक दूसरों को पालने वाला, सुंदर वाहन एवं चौपायों का स्वामी होता है। जातक अपने परिश्रम व पुरुषार्थ से दो मंजिला सुंदर भवन बनाता है। जातक कूटनीतिज्ञ होता है।

निशानी–'भोजसंहिता' के अनुसार जातक दिखने में कामदेव स्वरूप सुंदर, धनी, मानी व अभिमानी होता है। सुंदर पत्नी व बच्चों का स्वामी होता है।

विशेष–जातक अन्य स्त्रियों को अपनी ओर आकर्षित करने में शत-प्रतिशत सफल होता है। यदि पत्नी के अलावा कोई अन्य स्त्री साथ हो तो जातक राजनीति एवं व्यापार के क्षेत्र में अद्वितीय सफलता प्राप्त करता है।

दिशा–शुक्र की दशा में जातक का विशेष भाग्योदय होगा। शनि एवं बुध की दशाएं भी उत्तरोत्तर उत्तम फल देंगी।

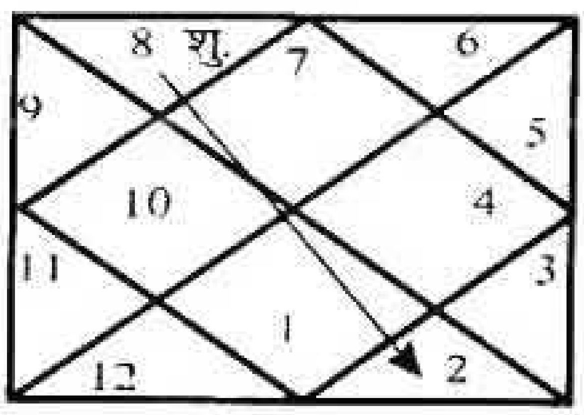
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **किम्बहुना योग**–शुक्र + शनि की युति से यह योग बनेगा। यहां लग्नेश शुक्र स्वगृही एवं योगकारक शनि उच्च का होने से इससे अधिक और क्या? यह

योग बनेगा। जातक राजाओं का राजा एवं अति पराक्रमी व्यक्ति होगा। यहां 'शश योग' एवं 'मालव्य योग' दोनों ही दिव्य योग स्वत: ही मुखरित हो रहे हैं। जातक के पराक्रम का उल्लंघन कोई नहीं कर पाएगा। जातक बड़ी भू-संपत्ति का स्वामी होगा

2. **नीचभंग राजयोग**–शुक्र+सूर्य से यह युति बनेगी। सूर्य यहां नैसर्गिक रूप से पापी एवं नीच का होकर अशुभ फल देने वाला है। परन्तु शुक्र के साथ होने से उसका अशुभत्व नष्ट हो जाएगा। जातक व्यापार-व्यवसाय व नौकरी में लाभ प्राप्त करने में सक्षम होगा।
3. **शुक्र + मंगल**–यह युति चोट, दुर्घटना व भय उत्पन्न करेगी, क्योंकि मंगल दो मारक स्थानों का स्वामी होकर मारकेश है।
4. **शुक्र + बृहस्पति**–बृहस्पति यहां अशुभ फल देने वाला होकर व्यक्ति को रोग-ग्रसित करेगा।
5. **शुक्र + चंद्र**–जातक स्वयं सुंदर होगा, पत्नी भी सुदंर होगी।
6. **शुक्र + बुध**–लग्नेश, भाग्येश की युति जातक को परम सौभाग्यशाली बना देगी।
7. **शुक्र + राहु**–जातक राजा होगा पर हठी व तुनक मिजाजी होगा।
8. **शुक्र + केतु**–जातक का मस्तिष्क चलायमान रहेगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में



तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है। फलत: दु:स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलत: शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र यहां द्वितीय स्थान में वृश्चिक राशिगत होकर अष्टम भाव, अपने घर वृष राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक धनी व्यक्ति होगा। स्त्री व संतान से परिपूर्ण होकर जातक का भाग्योदय 32 वें वर्ष होगा। ऐसा जातक कामी होगा तथा शरीर की पुष्टि हेतु औषधियों का सेवन करेगा या व्यसनी होगा, सुख दु:ख की छाया जीवन में आती रहेगी पर जातक ऐशो-आराम से परिपूर्ण जीवन सुख को भोगने की इच्छा से ग्रसित होगा।

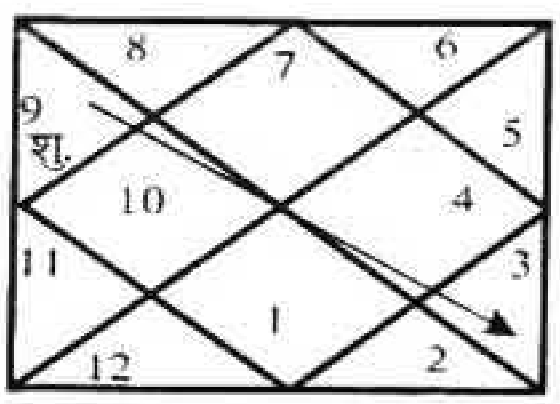
निशानी–जातक प्रजावान होगा पर प्रथम सन्तति विलम्ब से होगी। साठ वर्ष की आयु में जातक गांव का मुखिया होगा।

दिशा–शुक्र की दशा में जातक धनवान होगा। जातक का भाग्योदय बुध या शनि की दशा में होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + मंगल**–यह युति अशुभ है क्योंकि मंगल दो मारक स्थानों का स्वामी होकर मुख्य मारकेश है तथा यहां स्वगृही होने से बलवान भी है। यह युति चोट, दुर्घटना एव भय को जन्म देगी। यह युति यहां निष्फल है।
2. **शुक्र + चंद्र**–चंद्रमा तुलालग्न वालों के लिए अशुभ नहीं है परन्तु द्वितीय भाव में नीच राशिगत होने से जातक की वाणी दूषित एवं षड्यन्त्रकारी होगी। जातक का मन निष्कपट एवं स्वच्छ नहीं होगा।
3. **शुक्र + बुध**–लग्नेश, भाग्येश की युति जातक को धनवान बनाएगी।
4. **शुक्र + सूर्य**–लाभेश, लग्नेश की युति धन स्थान में व्यापार से लाभ दिलाएगी।
5. **शुक्र + गुरु**–पराक्रमेश, लग्नेश की युति मित्रों से लाभ देगी।
6. **शुक्र + शनि**–सुखेश, पंचमेश शनि की युति शुक्र से संतान द्वारा धन लाभ दिलाएगी।
7. **शुक्र + राहु**–धन के घड़े में छेद है, खर्च अधिक होगा।
8. **शुक्र + केतु**–आर्थिक परेशानी रहेगी, पुरुषार्थ का अपव्यय होगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में



तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है फलत: दु:स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलत: शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र यहां तृतीय स्थान में धनु राशि का होगा तथा भाग्य स्थान (नवम भाव, मिथुन राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा जातक पराक्रमी व लक्षाधिपति होते हुए भी दु:खी रहता है। जातक को पिता की संपत्ति (पैतृक धरोहर) मिलती है पर जो लाभ वास्तव में मिलना चाहिए, वो नहीं मिल पाएगा। जातक के अन्य स्त्रियों से भी गहरे सम्पर्क होंगे। आवक के जरिए दो-तीन प्रकार के होंगे।

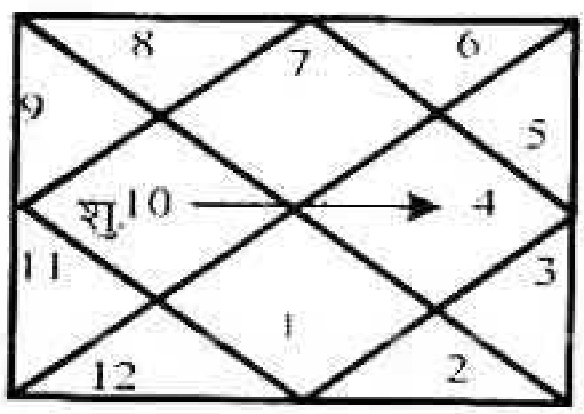
निशानी–जातक के अन्य भाई-बहन जरूर होंगे पर उनसे सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे।

दिशा–शुक्र की दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + बृहस्पति**–बृहस्पति यहां स्वगृही होगा। जातक को बड़े भाई व बहनों का सुख मिलेगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–बहनों का सुख अधिक होगा। जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
3. **शुक्र + सूर्य**–बड़े भाई का सुख कम होगा। भाई-बहन दोनों का सुख मिलेगा।
4. **शुक्र + मंगल**–ससुराल पराक्रमी होगा।
5. **शुक्र + बुध**–मित्रों से भाग्योदय होगा।
6. **शुक्र + शनि**–पुत्र उत्पत्ति के बाद भाग्योदय होगा।
7. **शुक्र + राहु**–परिजनों से धोखा होगा।
8. **शुक्र + केतु**–मित्रों में अविश्वास रहेगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में



तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है, फलतः एक दुःस्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलतः शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र यहां चतुर्थ भाव में मकर राशि का होकर दशम भाव (कर्क राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। शुक्र यहां 'दिग्बली' एवं केन्द्रवर्ती होकर 'कुलदीपक योग' बना रहा है।

ऐसा जातक अपने परिवार व कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला, सबका चहेता व प्यारा होता है।

विशेष–जातक राजनीति व कूटनीति में रुचि रखने वाला। जातक माता-पिता की सेवा करने वाला, जमीन-जायदाद का स्वामी, वाहन एवं गृहस्थ-सुख से सम्पन्न सुखी व्यक्ति होता है।

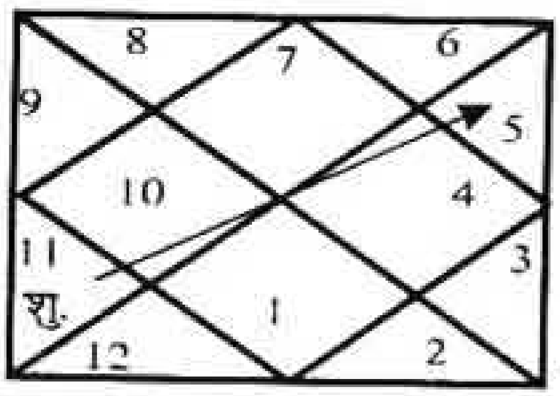
निशानी–जातक का अन्य स्त्रियों से संपर्क रहेगा एवं राज में पाशा रहेगा।

दशा–शुक्र की दशा श्रेष्ठ उन्नति दायक है। जबकि शनि की दशा भाग्योदय कराएगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + शनि**–शनि के कारण 'शश योग' बनेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी।
3. **शुक्र + मंगल**–यहां उच्च का मंगल होने के कारण 'रूचक योग' बनेगा। जातक सेनापति या राजा का मन्त्री होगा। वाहन सुख तेज रहेगा।
4. **शुक्र + सूर्य**–जातक का राजनीति में हस्तक्षेप रहेगा।
5. **शुक्र + गुरु**–बृहस्पति नीच का केन्द्रस्थ होने से जातक पराक्रमी एवं भौतिक ऐश्वर्य से परिपूर्ण होगा।
6. **शुक्र + बुध**–भाग्येश व लग्नेश की युति केन्द्र में सार्थक रहेगी। जातक भाग्यशाली होगा।
7. **शुक्र + राहु**–माता के सुख में कमी रहेगी।
8. **शुक्र + केतु**–वाहन से दुर्घटना का भय रहेगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में



तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है। फलतः एक दु:स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलतः शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र पंचम स्थान में कुंभ राशि का है तथा एकादश स्थान (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। जातक की पत्नी उच्च घराने की होती है। ऐसा जातक चाल-चलन का पक्का, दृढ़ निश्चयी, अचानक लॉटरी, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, विद्या व्यसनी व संतान पक्ष से सुखी होता है। जातक को राजनीति में सफलता मिलती है।

निशानी–यदि किसी पुरुष ग्रह की दृष्टि पंचम भाव पर न हो तो जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। जातक सूफी धर्मात्मा होगा।

दिशा–शुक्र की दशा बहुत उत्तम फल देगी। शनि की दशा भाग्योदय कराएगी एवं बुध की दशा-अन्तर्दशा में विशेष उन्नति होगी।

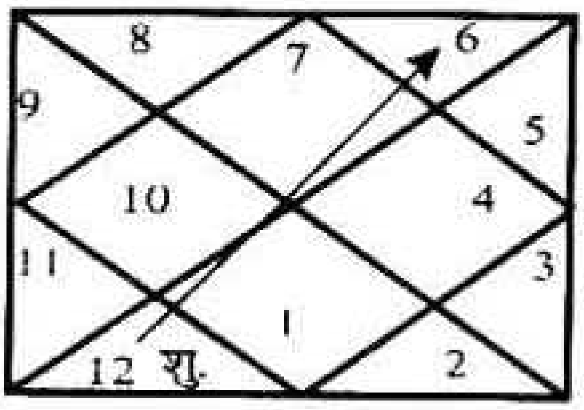
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + शनि**–शुक्र शनि की युति राजयोग कारक है। जातक को सुयोग्य पुत्र रत्नों की प्राप्ति होगी। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगने वाला परम तेजस्वी

एवं यशस्वी जातक होता है।

2. **शुक्र + चंद्र**–जातक को कन्या संतति अधिक होगी। यदि यहां पर शनि, मंगल छठे, आठवें या बारहवें हो तो जातक के संतान नहीं होती।
3. **शुक्र + सूर्य**–जातक की पुत्र+कन्या दोनों संतति होंगी।
4. **शुक्र + बुध**–जातक को कन्या संतति अधिक होंगी।
5. **शुक्र + मंगल**–जातक को पुत्र+कन्या दोनों संतति होंगी।
6. **शुक्र + गुरु**–जातक को मित्रों से लाभ होगा।
7. **शुक्र + राहु**–संतति में बाधा, खासकर पुत्र संतति में बाधा रहेगी।
8. **शुक्र + केतु**–विद्या में रुकावट एवं एक-दो गर्भपात सम्भव है।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति षष्ट्म स्थान में



तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है। फलत: दु:स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है, परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलत: शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र यहां षष्ट्म स्थान में उच्च राशि (मीन) का है तथा उसकी दृष्टि द्वादश स्थान (कन्या) राशि पर है। ऐसा जातक शत्रुओं का मान-मर्दन करने में पूर्ण सक्षम होता है। जातक महत्त्वाकांक्षी होता है।

लग्नभंग योग–लग्नेश छठे होने से यह योग बना। जातक को किए गए प्रयत्न व परिश्रम का पूरा फल नहीं मिलता।

निशानी–जातक की लड़कियां अधिक होंगी व स्त्री को नंगे पांव रहने की आदत होगी।

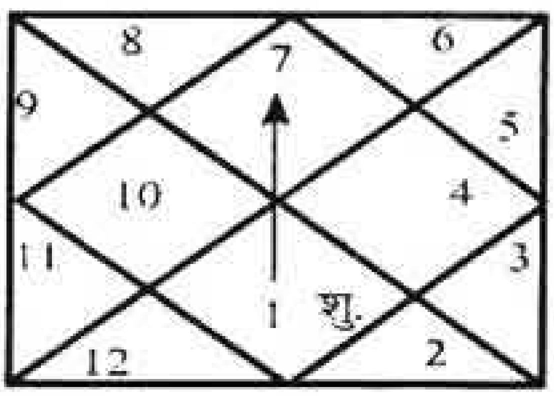
दिशा–शुक्र की दशा कष्टपूर्ण होगी व मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + बृहस्पति**–शुक्र, बृहस्पति की युति से 'किम्बहुना योग' बनेगा। शुक्र उच्च का व बृहस्पति स्वगृही, इससे अधिक और क्या हो? जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–जातक को राज्यपक्ष से नुकसान पहुंचेगा।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र, बुध की युति से यहां 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि होगी। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

4. **शुक्र** + **सूर्य**–जातक को व्यापार में नुकसान होगा।
5. **शुक्र** + **मंगल**–मंगल 'धनहीन योग' बनाएगा। जातक का गृहस्थ जीवन कष्टमय रहेगा।
6. **शुक्र** + **शनि**–जातक को विद्या में बाधा पहुंचेगी। भौतिक सुखों की उपलब्धि भी कष्टपूर्ण रहेगी।
7. **शुक्र** + **राहु**–गुप्त शत्रुओं का प्रकोप रहेगा।
8. **शुक्र** + **केतु**–जातक को गुप्तेन्द्री में रोग होगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में



तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है। फलत: एक दु:स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलत: शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। सप्तम भाव में स्थित शुक्र मेष (शत्रु) राशि में स्थित होकर अपने ही घर तुला राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा जातक सुंदर स्त्री वाला एवं कामुक प्रवृत्ति का जातक होता है। ससुराल व स्त्री से धन लाभ होने पर भी दोनों स्थानों से असन्तुष्ट रहता है।

कुलदीपक योग–शुक्र केन्द्र में होने से यह योग बना। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होता है।

निशानी–स्त्री प्राय: रोगी रहती है। शरीर में गुप्तरोग रहता है।

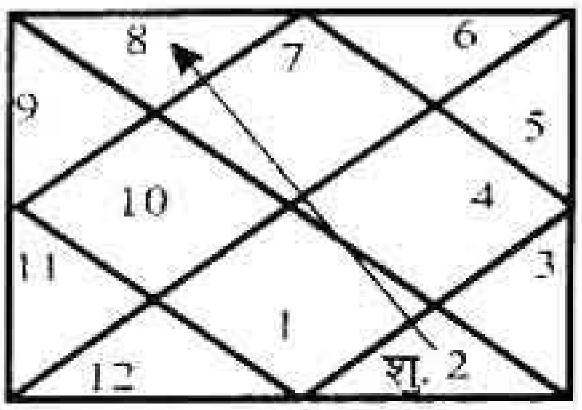
दिशा–शुक्र की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र** + **मंगल**–की युति के कारण जातक के विरोधी बहुत होते हैं। जातक को गुप्तरोग एवं दुर्घटना का भय रहेगा।
2. **शुक्र** + **चंद्र** -जातक का जीवन साथी सुंदर होगा। पत्नी धन की देवी होगी।
3. **शुक्र** + **सूर्य**–जातक को व्यापार में मुनाफा होगा।
4. **शुक्र** + **बुध**–लग्नेश, भाग्येश की युति जातक को सौभाग्यशाली बनाएगी।
5. **शुक्र** + **गुरु**–तृतीयेश+लग्नेश की युति से जातक को मित्रों से लाभ होगा।

6. **शुक्र + शनि**–सुखेश शनि यहां नीच का होगा। उसकी दृष्टि उच्च की होगी तथा जातक खूब धनवान होगा।
7. **शुक्र + राहु**–जातक का गृहस्थ जीवन दु:खमय होगा।
8. **शुक्र + केतु**–जातक का गृहस्थ जीवन विषैला होगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में



तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है फलत: दु:स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलत: शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र अष्टम भाव में स्थित होने से स्वगृही तुला राशि का होगा एवं द्वितीय भाव (वृश्चिक राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसे जातक की स्त्री की जबान का शव्द पत्थर की लकीर होगा। विवाह 25 वर्ष की आयु के बाद होगा विवाह के बाद किस्मत चमकेगी।

सरलयोग–अष्टमेश अष्टम स्थान में स्वगृही होने से यह योग बना। जातक को शत्रु का अशुभ फल न मिलकर, शुभफल ही मिलेगा।

निशानी–अशुभ वचन जो अनायास मुंह से निकलेंगे, सच हो जाएंगे।

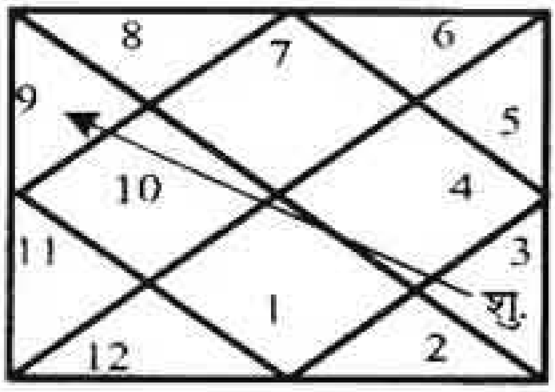
दिशा–शुक्र की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + चंद्र**–राज्यपक्ष से दण्ड मिल सकता है, पर चंद्रमा की वजह से 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
2. **शुक्र + सूर्य**–व्यापार में परेशानी, जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
3. **शुक्र + मंगल**–धन की परेशानी रहेगी। गृहस्थ जीवन कष्टमय होगा।
4. **शुक्र + बुध**–बुध के कारण 'भाग्यभंग योग' बनेगा। जातक भाग्यहीन होगा।
5. **शुक्र + गुरु**–गुरु के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। मित्रों से यश नहीं मिलेगा।
6. **शुक्र + शनि**–शनि के कारण 'सुखभंग योग' व 'संतानहीन योग' बनेगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
7. **शुक्र + राहु**–राहु आयु में हानि करेगा व गुप्त बीमारी देगा।

8. **शुक्र + केतु**–केतु भी यहां कष्ट दायक है। जातक के जीवन में दो बार ऑपरेशन होंगे।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में



तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है फलत: एक दु:स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलत: शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र भाग्य (नवम) स्थान में मिथुन राशि का मित्र क्षेत्र में है। तथा तृतीय भाव (धनु राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक का जन्म, माता-पिता एवं दादा-दादी के लिए शुभ होता है। जातक राजनीति में निर्विघ्न सफलता प्राप्त करता है। जातक देशाटन करने वाला जनता का सेवक, समाज में प्रतिष्ठित एवं पूर्ण यशस्वी व्यक्ति होता है।

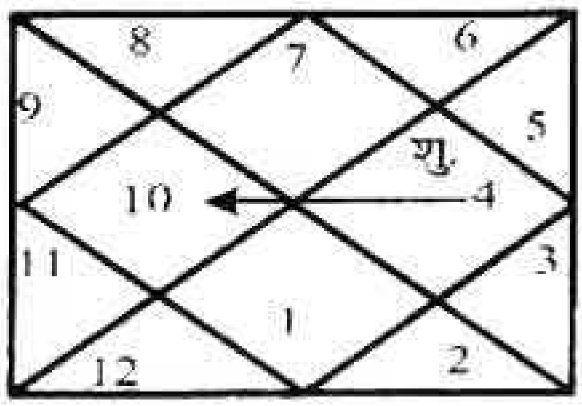
दिशा–शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + बुध**–बुध यहां स्वगृही होने से जातक को राजा तुल्य ऐश्वर्य एवं धनवान बनाएगा।
2. **शुक्र + सूर्य**–लाभेश व लग्नेश की युति भाग्य में वृद्धि करेगी।
3. **शुक्र + चंद्र**–चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। फिर भी जातक को राज्य से सम्मान मिलेगा।
4. **शुक्र + मंगल**–जातक धनवान व भाग्यशाली होगा।
5. **शुक्र + गुरु**–गुरु के कारण जातक को भाईयों का सुख मिलेगा।
6. **शुक्र + शनि**–जातक बड़ी जमीन-जायदाद का स्वामी होगा।
7. **शुक्र + राहु**–जातक के भाग्य द्वार में रुकावट होगी।
8. **शुक्र + केतु**–भाग्योदय हेतु जातक को काफी कष्ट उठाने पड़ेंगे।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में

तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है, फलत: दु:स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलत: शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। दशम स्थान में कर्क राशिगत शुक्र



चतुर्थ भाव (मकर राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। शुक्र की यह स्थिति अत्यन्त शुभ फलदायी है। ऐसा जातक इंसाफ तोलने वाला, न्यायप्रिय, चतुर वक्ता, राजमंत्री अथवा प्रसिद्ध जनसेवक होता है। ऐसा जातक जमीन-जायदाद भूमि से लाभ प्राप्त करने वाला, सुंदर मकान व नौकर-चाकर से युक्त होता है।

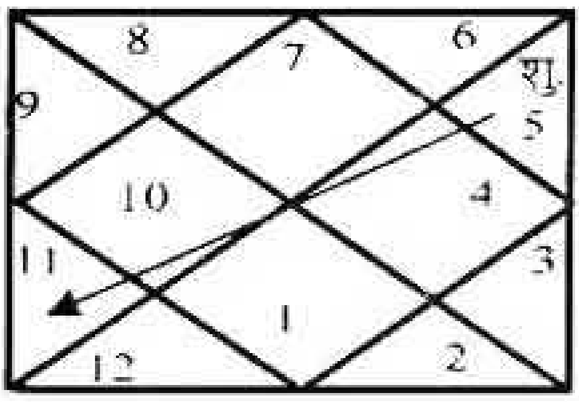
कुलदीपक योग–शुक्र केन्द्र में होने से यह योग बना। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला, सबका चहेता व प्यारा होता है।

दिशा–शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में राजकीय सम्मान व यश मिलेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + चंद्र**–यहां 'यामिनीनाथ योग' के कारण जातक राजातुल्य शक्तिशाली होगा।
2. **शुक्र + सूर्य**–सूर्य की युति से व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।
3. **शुक्र + मंगल**–मंगल धन दौलत को बढ़ाएगा।
4. **शुक्र + बुध**–बुध की युति राज्य में पद दिलाएगी।
5. **शुक्र + गुरु**–गुरु यहां उच्च का होकर 'हंसयोग' बनाएगा। जातक राजा या राजा से कम नहीं होगा।
6. **शुक्र + शनि**–शनि की युति भूमि एवं वाहन सुख की दृष्टि करेगी।
7. **शुक्र + राहु**–राजपक्ष से हानि, पिता से विवाद रहेगा।
8. **शुक्र + केतु**–व्यापार में कष्ट, पिता से मनमुटाव रहेगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में



तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है फलतः दुःस्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलतः शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र एकादश स्थान में शत्रुक्षेत्री सिंह राशि का होकर पंचम भाव (कुंभ राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा जातक राजनीति, कूटनीति एवं युद्धनीति का ज्ञाता होता है। जातक

सुंदर एवं सुयोग्य संतति का स्वामी होता है। जातक ज्योतिष, तन्त्र-मन्त्र एवं अध्यातम विद्या का ज्ञाता होता है। पाराशर ऋषि के अनुसार जातक सुशील, कीर्तिवान व यशस्वी होगा।

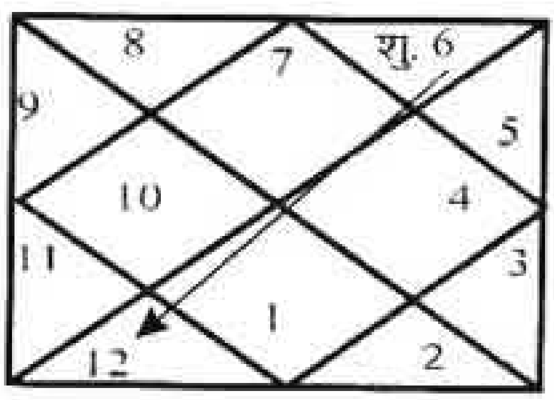
निशानी–स्त्री के प्राय: तीन भाई होते हैं। जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहती है।

दिशा–शुक्र की दशा-अन्तर्दशा व्यापार में लाभ देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–यहां शुक्र शत्रुक्षेत्री पर सूर्य स्वगृही है। जातक को सरकारी ठेके से लाभ होगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–जातक को राज्यपक्ष से लाभ होगा।
3. **शुक्र + शनि**–यहां पर दोनों ग्रह शत्रक्षेत्री हैं। फलत: लाभ प्राप्ति में विवाद रहेगा।
4. **शुक्र + मंगल**–मंगल की युति से जातक व्यापार से धन कमाएगा।
5. **शुक्र + बुध**–बुध की युति सौभाग्य को बढ़ाएगी।
6. **शुक्र + गुरु**–गुरु की युति ज्यादा ठीक नहीं।
7. **शुक्र + राहु**–राहु लाभांश में कटौती करेगा।
8. **शुक्र + केतु**–केतु की यहां उपस्थिति से लाभांश का प्रतिशत घट जाएगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में



तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है फलत: दु:स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलत: शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। लग्नेश द्वादश भाव में स्थित होने से इस कुण्डली के योगकारक ग्रह बुध की राशि में होते हुए भी नीच का होता है। कन्या राशि में स्थित शुक्र यहां स्वगृहाभिलाषी होता हुआ छठे स्थान (मीन राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक सभी प्रकार की सुख-सुविधा व ऐश्वर्य को भोगने वाला होकर राजनीति में अत्यधिक रुचि लेगा, पर राजनीति में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।

यदि सप्तमेश मंगल की स्थिति अच्छी न हो तो जातक के 'द्विभार्या योग' बनता है। जातक कामुक एवं प्रतिपल स्त्री सहवास की कामना रखने वाला, अन्य स्त्रियों में भी ज्यादा रुचि लेता है।

निशानी–ऐसे जातक की स्त्री की सेहत खराब रहती है एवं प्रथम संतति कन्या होती है।

द्वादशशुक्र योग–जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

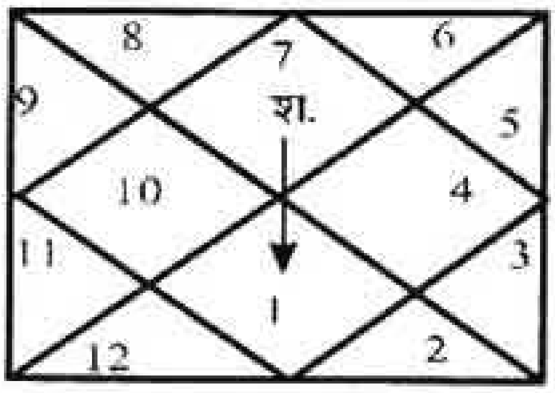
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + बुध**–बुध उच्च का, शुक्र नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि होगी। ऐसे में दोनों ग्रह राजयोग कारक स्थिति बनाएंगे। जातक राजातुल्य, ऐश्वर्य, वैभव एवं संपत्ति को भोगेगा।
2. **शुक्र + मंगल**–मंगल की युति 'धनहीन योग' बनाएगी। गृहस्थ सुख में कमी रहेगी।
3. **शुक्र + सूर्य**–सूर्य के कारण व्यापार में हानि होगी।
4. **शुक्र + शनि**–सुख में कमी, विद्या में बाधा आएगी।
5. **शुक्र + चंद्र**–चंद्रमा की युति राज्यसुख, पिता के सुख में बाधक है।
6. **शुक्र + गुरु**–गुरु भाईयों के सुख में बाधक है।
7. **शुक्र + राहु**–राहु यात्राएं कराएगा। नींद में बाधक है।
8. **शुक्र + केतु**–केतु जातक को दु:स्वप्न देगा।

❑❑❑

तुलालग्न में शनि की स्थिति

तुलालग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में



तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां लग्नस्थ शनि तुला में होगा। तुला राशि में शनि उच्च का होता है। फलत: 'शश योग' की सृष्टि होगी। जातक राजा या राजा का मंत्री होगा। जातक अपने आप में पूर्ण सक्षम व समर्थ व्यक्ति होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ शनि की दृष्टि पराक्रम भाव (धनु राशि), सप्तम भाव (मेष राशि) एवं दशम भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलत: जातक महान पराक्रमी होगा। पत्नी का सुख एवं राज्य सरकार में जातक का अच्छा दबदबा (प्रभाव) रहेगा।

निशानी–जातक पुत्रवान होगा तथा मातृपक्ष से सुखी होगा।

दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा में जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। वाहन सुख व संतति सुख मिलेगा।

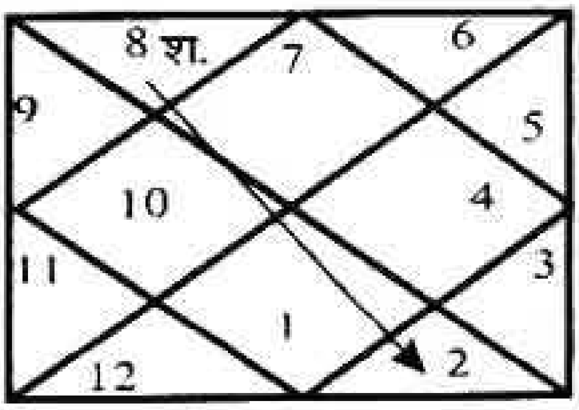
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + सूर्य**–के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा।
2. **शनि + चंद्र**–जातक की पत्नी सुंदर एवं लक्ष्मी स्वरूप होगी।
3. **शनि + मंगल**–जातक अति धनवान होगा पर लड़ाकू होगा।
4. **शनि + बुध**–जातक परम भाग्यशाली एवं धनवान होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**–जातक समाज का अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
6. **शनि + शुक्र**–यहां 'किम्बहुना योग' बनेगा। इससे अधिक और क्या? जातक

निश्चय ही राजा होगा। राजपुरुष होंगे। यहां 'मालव्य योग' व 'शश योग' की संयुक्त सृष्टि होगी।

7. **शनि + राहु**–जातक हठी व जिद्दी नेता होगा। अपना नुकसान खुद करेगा।
8. **शनि + केतु**–जातक जिद्दी होगा।

तुलालग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में



तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां द्वितीय स्थान में शनि वृश्चिक राशि का होगा। यह शनि की शत्रु राशि है। फिर भी जातक धन, मकान, भूमि, विद्या-बुद्धि स्त्री व संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक को पुत्र संतति होगी तथा पुत्र द्वारा धन लाभ भी होगा। जातक के आवक के जरिए मायावी (गुप्त) होंगे।

दृष्टि–द्वितीयस्थ शनि की दृष्टि सुख स्थान (मकर राशि), अष्टम स्थान (वृष राशि) एवं लाभ स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलत: जातक की आयु लंबी होगी। उसे वाहन का सुख मिलेगा। व्यापार में यथेष्ट धन लाभ होगा।

निशानी–जातक को परिश्रम के अनुसार फल मिलेगा।

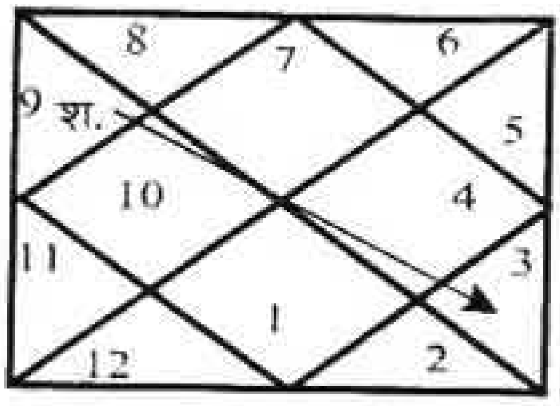
दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा में धन, ऐश्वर्य सुख-संपत्ति एवं उत्तम संतति की प्राप्ति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चंद्र**–जातक की वाणी कड़वी, जहरीली होगी।
2. **शनि + सूर्य**–जातक की वाणी में विरोधाभास होगा।
3. **शनि + मंगल**–शनि के साथ मंगल हो तो जातक हकला कर बोलेगा पर बलवान धने की सुखेश पंचमेश के साथ होने पर 'मातृमूल धनयोग' एवं 'पुत्रमूल धनयोग' के कारण पुत्र से, माता से एवं भूमि से जातक को धन मिलेगा।
4. **शनि + बुध**–जातक सौभाग्यशाली व कूटनीतिज्ञ होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**–जातक की वाणी में विद्वत्ता, गम्भीरता होगी।

6. **शनि + शुक्र**–जातक धनवान होगा। परिश्रम का मीठा फल मिलेगा।
7. **शनि + राहु**–जातक की वाणी कर्कश होगी फलत: धन का नुकसान होगा।
8. **शनि + केतु**–जातक की वाणी में प्रतिशोध होगा।

तुलालग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में



तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां तृतीयस्थ शनि धनु राशि में होगा। यहां शनि आध्यात्मिक ग्रह का चरित्र धारण करेगा। ऐसा जातक धार्मिक होगा एवं सहोदरों का प्रिय होगा। ऐसा जातक पराक्रमी, नौकरों से युक्त, अच्छे मित्रों वाला, सम्पन्न व सुखी होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम भाव अपने स्वयं के घर (कुंभ राशि), भाग्य भवन (मिथुन राशि), एवं व्यय भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलत: जातक को पुत्र से लाभ मिलेगा। जातक विद्यावान व अनुभवी होगा। जातक का भाग्य सदैव जातक का साथ देगा। जातक का रुपया शुभ कार्यों में खर्च होगा।

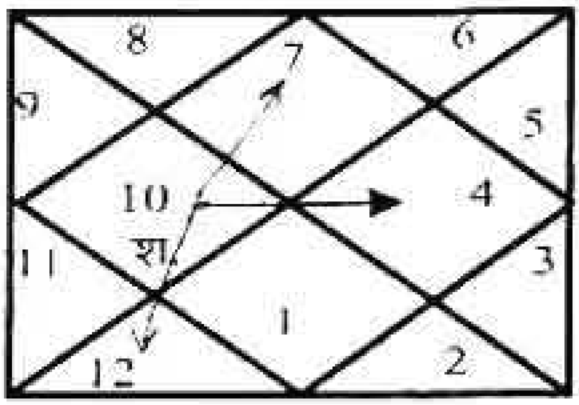
निशानी–जातक के छोटे भाई का नाश होता है। पाराशर ऋषि भी इस बात का समर्थन करते हैं-"अग्रेजातं रविर्दृन्ति, पृष्ठे जातं शनैश्चर:"।

दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा में जातक को भौतिक एवं आध्यात्मिक सुखों की प्राप्ति होती है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + सूर्य**–जातक को छोटे-बड़े दोनों भाईयों का नुकसान होगा।
2. **शनि + चंद्र**–जातक को भाई-बहनों का सुख मिलेगा।
3. **शनि + मंगल**–जातक को भाईयों का सुख मिलेगा पर मन नहीं मिलेगा।
4. **शनि + बुध**–जातक की बहन अधिक होंगी।
5. **शनि + बृहस्पति**–जातक को बड़े भाई का सुख रहेगा।
6. **शनि + शुक्र**–जातक के पुरुषार्थ से पराक्रम बढ़ेगा।
7. **शनि + राहु**–जातक के परिजनों में प्रेम नहीं होगा।
8. **शनि + केतु**–जातक के परिजनों में अविश्वास अधिक होगा।

तुलालग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में



तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां चतुर्थ भाव में शनि मकर राशि का होकर स्वगृही होगा एवं कुण्डली में 'शश योग' का निर्माण करेगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी, साहसी व धनवान होता है।

दृष्टि–चतुर्थस्थ शनि की दृष्टि छठे भाव (मीन राशि) राज्य भाव (कर्क राशि) एवं लग्न स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक रोग व शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होता है। जातक राजनीति में प्रवीण होगा एवं उन्नति पथ की ओर बढ़ता रहेगा।

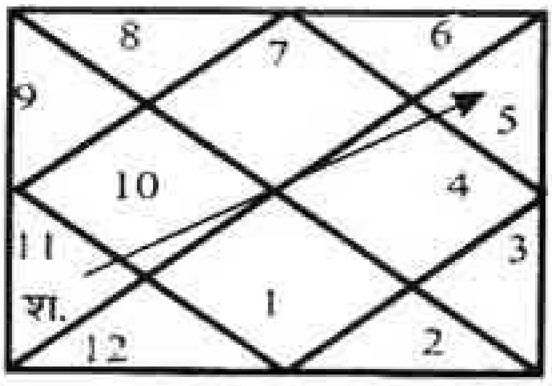
दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा में जातक सभी प्रकार के सुखों को प्राप्त करेगा। जातक को संतति की प्राप्ति होगी। ज्ञानार्जन में विशेष वृद्धि होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चंद्र**–जातक को माता का सुख मिलेगा।
2. **शनि + सूर्य**–जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु से होगा।
3. **शनि + मंगल**–यदि मंगल साथ हो तो 'किम्बहुना योग' नामक 'राजयोग' बनेगा। इससे अधिक और क्या जातक निश्चय ही राजपुरुष होगा।
4. **शनि + बुध**–जातक के पास अनेक वाहन एवं मकान होंगे।
5. **शनि + बृहस्पति**–जातक के अनेक नौकर होंगे पर मित्रवत् होंगे।
6. **शनि + शुक्र**–यहां शुक्र की युति 'कुलदीपक योग' के साथ राजयोग प्रदाता है।
7. **शनि + राहु**–जातक की माता बीमार रहेगी। हृदय रोग संभव है।
8. **शनि + केतु**–जातक की माता को अस्थमा होगा।

तुलालग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में

तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां पंचमस्थ शनि कुंभ राशि में होगा। कुंभ शनि की मूलत्रिकोण राशि है। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है तथा



राजनीति में भाग लेकर उच्च पद को प्राप्त करता है। जातक विद्या, स्त्री-पुत्र, धन इत्यादि सुखों से परिपूर्ण गृहस्थ सुख को भोगता है।

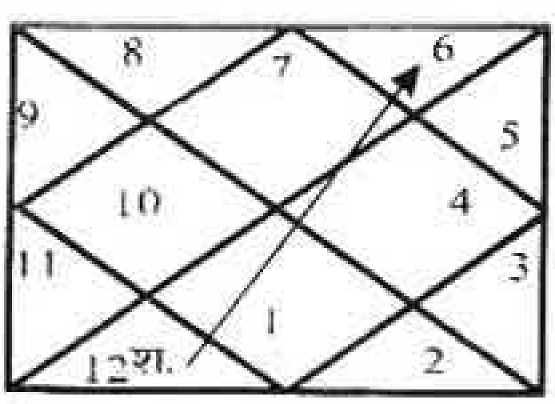
दृष्टि—पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (मेष राशि), लाभ स्थान (सिंह राशि) एवं धन स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी।

निशानी—जातक के प्राय: पांच पुत्र होते हैं।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—पुत्र जरूर होगा। व्यापार में लाभ होगा।
2. **शनि + चंद्र**—पुत्र-पुत्री दोनों होंगे। दो कन्या जरूर होंगी।
3. **शनि + मंगल**—जातक को तीन या पांच पुत्र जरूर होंगे।
4. **शनि + बुध**—जातक को पुत्र-पुत्री दोनों का लाभ होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—जातक के पांच पुत्र होते हैं।
6. **शनि + शुक्र**—जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।
7. **शनि + राहु**—जातक के पुत्र संतति में बाधा आएगी।
8. **शनि + केतु**—जातक के पुत्र संतति विलम्ब से होगी।

तुलालग्न में शनि की स्थिति षष्ट्म स्थान में



तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां छठे भाव में शनि मीन राशि में होगा। मीन राशि शनि की सम राशि है। ऐसा जातक भौतिक सुख-समृद्धि एवं भौतिक उन्नति की प्राप्ति में विश्वास रखते हैं। शनि के छठे जाने से 'सुखभंग योग' एवं 'संततिहीन योग' की सृष्टि हुई है। जातक कानून व गूढ़ शास्त्रों का ज्ञाता होगा। परन्तु भौतिक सुखों व उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु जातक को काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

दृष्टि—छठे भावगत शनि की दृष्टि अष्टम स्थान (वृष राशि), व्यय भाव (कन्या राशि) एवं पराक्रम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: जातक ऋण, रोग व शत्रु से बाधित रहेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

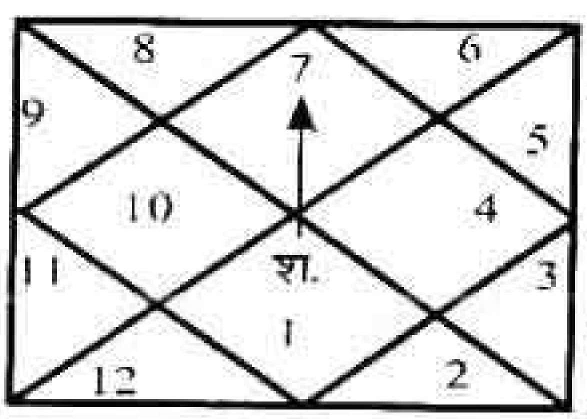
निशानी–ऐसा जातक माता के सुख से हीन अथवा दत्तक पुत्र वाला होता है।

दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फलकारी होती है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चंद्र**–राज्यपक्ष में विरोध मिलेगा। मुकदमें हारेंगे।
2. **शनि + सूर्य**–सरकारी दण्ड मिलेगा।
3. **शनि + मंगल**–भृगुसूत्र के अनुसार 'कुजयुतें देशान्तर संचारी' जातक विदेश में जाकर धन कमाएगा।
4. **शनि + बुध**–'भाग्यभंग योग' के कारण भाग्योदय में अनेक बाधाएं आएंगी।
5. **शनि + बृहस्पति**–हर्ष योग के कारण जातक पराक्रमी होगा।
6. **शनि + शुक्र**–जातक के उत्साह में कमी रहेगी।
7. **शनि + राहु**–शत्रु परेशान करेंगे पर जातक शत्रुओं को नष्ट करने में समर्थ होगा।
8. **शनि + केतु**–गुप्त शत्रु होंगे।

तुलालग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में



तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां सप्तम स्थान में शनि मेष राशि में होगा। जो कि शनि की नीच राशि है। यहां शनि व 20 अंशों में परम नीच का होगा। ऐसे जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती। पाराशर ऋषि कहते हैं-''सभायां मूकवद भवेत्'' कि जातक सभा में गूंगा हो जाता है। जो बात जहां कहनी चाहिए, कह नहीं पाता। जातक परोपकारी होता है पर जीवनसाथी से विचार कम मिलते हैं। गृहस्थ सुख में खटपट होती रहती है।

दृष्टि–सप्तमस्थ नीच के शनि की दृष्टि भाग्य भवन (मिथुन राशि), लग्न स्थान (तुला राशि) एवं चतुर्थ भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक उत्तम वाहन वाला, अच्छे व्यक्तित्व व प्रभाव वाला भाग्यशाली जातक होगा।

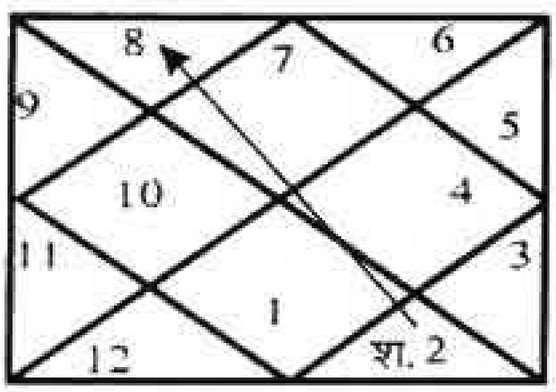
निशानी–जातक प्रेम या अन्तर्जातीय विवाह के लिए उत्सुक रहता है तथा अपने जीवन साथी से असंतुष्ट रहता है।

दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चंद्र**–जातक की पत्नी सुंदर होगी पर क्रोधी स्वभाव की होगी।
2. **शनि + सूर्य**–'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक राजपुरुष होगा। पराक्रमी होगा
3. **शनि + मंगल**–मंगल की युति से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक स्त्री की योनि 'गुप्तांगों' का चुम्बन करता है।
4. **शनि + बुध**–जातक बौद्धिक क्षमता से धनार्जन करेगा।
5. **शनि + बृहस्पति**–जातक को मित्रों व परिजनों से लाभ होगा।
6. **शनि + शुक्र**–शास्त्रकार कहते हैं "शुक्रयुते भग चुम्बन पर:" शनि के साथ शुक्र होने पर जातक अत्यधिक कामी होकर भग चुम्बन करता है।
7. **शनि + राहु**–गृहस्थ सुख में अहम् का टकराव रहेगा।
8. **शनि + केतु**–भृगुसूत्र के अनुसार "केतुयुते स्त्री सम्भोगी" जातक अन्य स्त्रियों के संपर्क में रहता है।

तुलालग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में



तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां अष्टमस्थ शनि वृष राशि में होगा जो कि शनि की मित्र राशि है। शनि की इस स्थिति से 'सुखहीन योग' एवं 'संततिहीन योग' की सृष्टि होती है। ऐसा जातक दीर्घायु को प्राप्त तो करता है परंतु अच्छे मकान, अच्छे वाहन, अच्छी शिक्षा की प्राप्ति हेतु जीवन भर संघर्ष करता रहता है। पर संघर्ष के बाद अन्तिम सफलता निश्चित है। जातक प्राय: क्रोधी अथवा नपुंसक होता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ शनि की दृष्टि राज्य भाव (कर्क राशि), धन भाव (वृश्चिक राशि) एवं पंचम भाव स्वयं की (कुंभ राशि) राशि पर होगी। फलत: जातक राजनीति में सिद्ध हस्त होगा। जातक धनवान होगा एवं पुत्रवान भी होगा।

निशानी–जातक की पीठ पीछे जातक की बहुत बुराई होगी।

दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल, शुभ अशुभ दोनों परिणाम देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चंद्र**–चंद्रमा उच्च का होते हुए भी राजा से भय मिलेगा।

2 **शनि + सूर्य**–राजदण्ड की सम्भावना प्रबल है।

3. **शनि + मंगल**–धन की हानि, गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी।

4. **शनि + बुध**–'भाग्यभंग योग' के कारण भाग्योदय में रुकावटें आएंगी। जातक भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु तरसेगा।

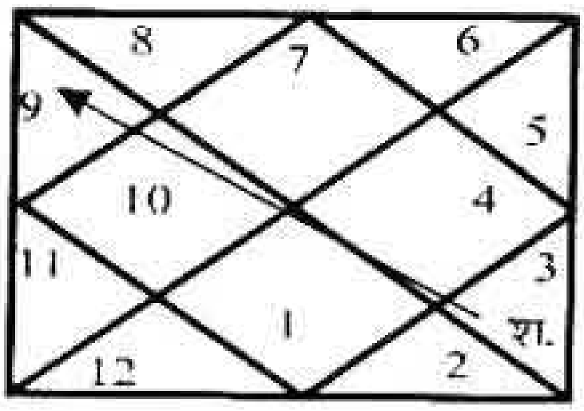
5. **शनि + बृहस्पति**–जातक को भाईयों से विरोध मिलेगा।

6. **शनि + शुक्र**–'लग्नभंग योग' के कारण उत्साह में कमी रहेगी। वीर्य दूषित होगा।

7. **शनि + राहु**–गुप्त बीमारी होगी। बीमारी स्थाई होगी।

8. **शनि + केतु**–हल्की दुर्घटना का भय रहेगा।

तुलालग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में



तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां नवम स्थान में शनि मिथुन राशि में होगा। यह इसकी मित्र राशि है। शनि की यह स्थिति राजयोग प्रदायक है। जातक किस्मत वाला होता है, परिवार की तरक्की करने वाला होता है। जातक को विद्या, बुद्धि, स्त्री सुख, संतान सुख की प्राप्ति सहज में ही हो जाती है। जातक को व्यापार, व्यवसाय, ठेकेदारी के कार्य में लाभ होगा।

दृष्टि–नवम भावगत शनि की दृष्टि लाभ स्थान (सिंह राशि), तृतीय भाव (धनु राशि) एवं छठे स्थान (मीन राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा। मित्रों से लाभ पाने वाला, रोग व शत्रुओं का नाश करने में समर्थ एवं व्यापार (ठेकेदारी) से धन प्राप्त करता है।

निशानी–ऐसे जातक का पुत्र राजातुल्य पराक्रमी होता है।

दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्यौदय होता है। उसे सभी भौत्रिक सुखों की प्राप्ति होती है।

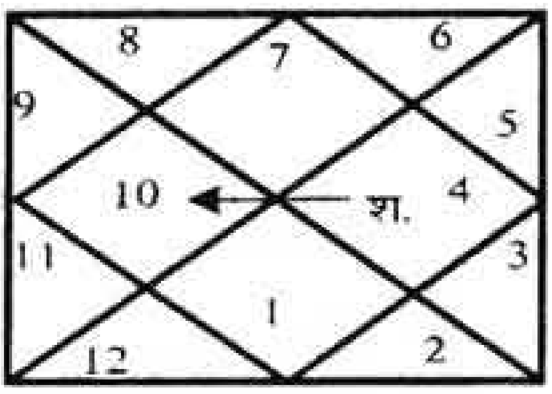
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चंद्र**–जातक राज्यपक्ष में अति प्रभावशाली व्यक्ति होगा।

2 **शनि + सूर्य**–सरकारी क्षेत्र में सम्मान मिलेगा।

3. **शनि + मंगल**–धन की प्राप्ति हेतु किये गये प्रयासों में सफलता तथा भूमि लाभ मिलेगा।
4. **शनि + बुध**–जीवन के 34वें वर्ष में कोई बड़ा धार्मिक कार्य हाथ में होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**–परिजनों-इष्टमित्रों से लाभ संभव है।
6. **शनि + शुक्र**–जातक भाग्यशाली होगा। भाग्य पग-पग पर मदद करेगा।
7. **शनि + राहु**–भाग्योदय में विलम्ब पर सफलता सुनिश्चित है।
8. **शनि + केतु**–विलम्ब से भाग्योदय होगा।

तुलालग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में



तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां दशम स्थान में शनि कर्क राशि में होगा। यह शनि की मित्र राशि है। शनि की यह स्थिति राजयोग प्रदायक है। ऐसा जातक मानसागरी के अनुसार ग्राम का मुखिया, नगर दण्डनायक, न्यायाधीश, सरपंच, राजनेता होता है। ऐसे जातक को माता-पिता का सुख, स्त्री-संतान का सुख, विद्या, ज्ञान व शास्त्रों का अर्जन सहज में ही प्राप्त होता है।

दृष्टि–दशमस्थ शनि की दृष्टि व्यय भाव (कन्या राशि), चतुर्थ भाव (मकर राशि) एवं सप्तम भाव (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक को माता का सुख, वाहन का सुख मिलेगा। जातक परोपकारी होगा। पुरुषार्थ व परोपकार के कार्य में धन का सदुपयोग करेगा।

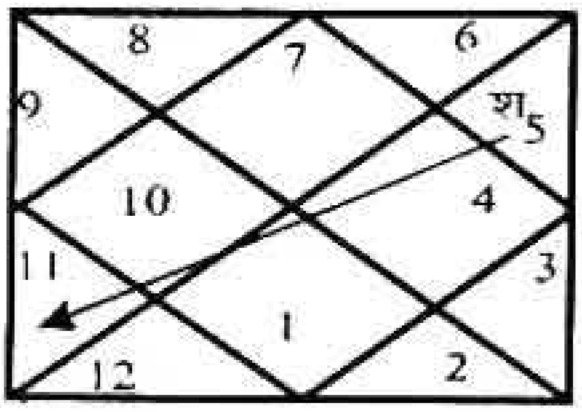
दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा में जातक की नौकरी-व्यवसाय में उन्नति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चंद्र**–जातक परमभाग्यशाली व प्रदेश का प्रमुख व्यक्ति होगा।
2. **शनि + सूर्य**–जातक सरकारी क्षेत्र का प्रधान होगा।
3. **शनि + बुध**–बौद्धिक क्षमता से जातक की उन्नति होगी।
4. **शनि + मंगल**–जातक खूंखार व्यक्तित्व का धनी होगा। मंगल के दिग्बली होने से शक्ति सकारात्मक कार्यों में खर्च होगी।

5. **शनि + बृहस्पति**–गुरु उच्च का होने से 'हंस योग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
6. **शनि + शुक्र**–जातक सुखी होगा। एकाधिक वाहनों का स्वामी होगा।
7. **शनि + राहु**–जातक को राजकार्य में बाधा मिलेगी। धोखा होगा।
8. **शनि + केतु**–सरकारी क्षेत्र में काम आसानी से नहीं होंगे।

तुलालग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में



तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां एकादश स्थान में शनि सिंह राशि में होगा। जो कि शनि की शत्रु राशि है। जातक को उत्तम भवन, उत्तम नौकरी, व्यापार-व्यवसाय की प्राप्ति होगी। जातक राजपूजक होता है। उसको सरकारी अधिकारियों एवं सरकारी ठेकों से लाभ होता है।

निशानी–जातक बहुत पुत्र वाला एवं महाधनी व्यक्ति होगा। ऐसा जातक उम्र से अधिक वय वाला दिखाई देगा।

दृष्टि–एकादश भाव में स्थित शनि की दृष्टि लग्न भाव (तुला राशि), पंचम भाव (कुंभ राशि) अपनी राशि तथा अष्टम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक को उच्च श्रेणी की विद्या, बुद्धि, संतान लंबी आयु एवं उच्च उन्नति की प्राप्ति होगी।

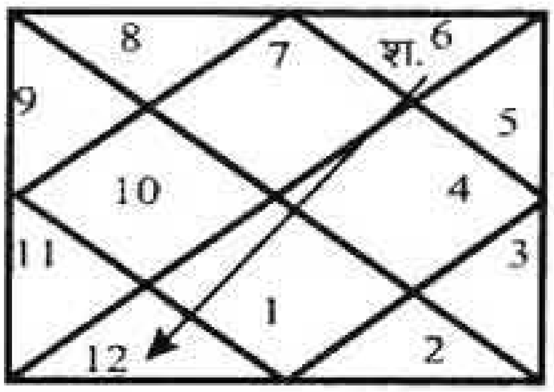
दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भौतिक सुखों व राजकीय सम्मान की प्राप्ति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चंद्र**–जातक उद्योगपति होगा। जातक की संतति भी धनवान होगी।
2. **शनि + सूर्य**–जातक सरकारी क्षेत्र में प्रभावशाली होगा। राजकीय सम्मान मिलेगा।
3. **शनि + मंगल**–जातक को पुत्र से, शिक्षा से लाभ मिलेगा।
4. **शनि + बुध**–जातक का भाग्य बलवान होगा। जातक उद्योगपति होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**–जातक पराक्रमी होगा। मित्रवर्ग श्रेष्ठ होगा।
6. **शनि + शुक्र**–जातक उन्नतिशील होगा। निरन्तर आगे बढ़ेगा।

7. **शनि + राहु** -लाभांश में भारी रुकावट होगी।
8. **शनि + केतु** -लाभ में बाधा आएगी।

तुलालग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में



तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां द्वादश स्थान में शनि कन्या राशि में होगा। यह शनि की मित्र राशि है। हांलाकि शनि की इस स्थिति में 'सुखभंग योग' एवं 'संतानहीन योग' की सृष्टि हुई है। यह स्थिति ज्यादा नुकसानदायक नहीं है। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति में बाधा, घर, धन, वाहन, नौकर-चाकर, सुख मे बाधा महसूस होगी। संतान सुख भी विलम्ब से प्राप्त होगा। जातक को दत्तक पुत्र की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–द्वादशस्थ शनि की दृष्टि धन भाव (वृश्चिक राशि), अष्टम भाव (मीन राशि) एवं भाग्य भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: धन संग्रह में बाधा रहेगी। कुटुम्ब सुख में कमी एवं भाग्योदय में रुकावट महसूस होगी।

निशानी–जातक आलसी होगा।

दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा में जातक परेशान भी होगा और उपलब्धियों को भी प्राप्त करेगा।

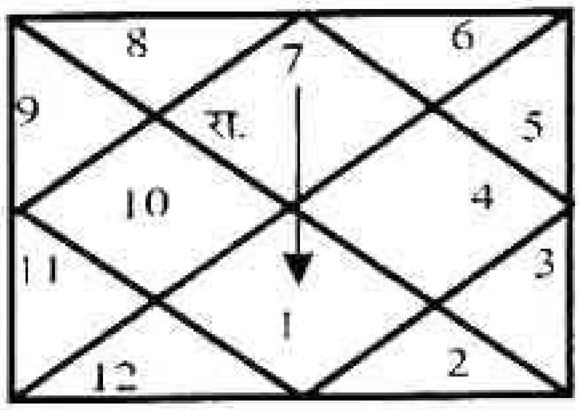
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चंद्र**–जातक को राजदण्ड का भय रहेगा।
2. **शनि + सूर्य**–व्यापार में राजदण्ड मिलेगा।
3. **शनि + मंगल**–'पापयुते नरक प्राप्ति' जातक को अकाल मृत्यु का भय रहेगा।
4. **शनि + बुध**–जातक कर्जदार होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**–जातक का पराक्रम भंग होगा। मानहानि होगी।
6. **शनि + शुक्र**–जातक को जेल जाने का भय रहेगा।
7. **शनि + राहु**–भृगुसूत्र के अनुसार 'पापयुते नेत्रच्छेद' जातक को नेत्र विकार होगा।
8. **शनि + केतु**–जातक को नेत्र विकार होगा।

❑❑❑

तुलालग्न में राहु की स्थिति

तुलालग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में



तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। तुलालग्न में लग्नस्थ राहु मित्र क्षेत्री होगा। ऐसा जातक विषयासक्त, असंयमी, व्यसनी, दुराचारी, लम्पट और स्वेच्छाचारी होता है। इनका पारिवारिक जीवन, गृहस्थ जीवन असंतोष जनक होता है। जातक को शिक्षा नौकरी व व्यवसाय में रुकावटों का सामना करना पड़ेगा।

निशानी–जातक का जन्म ननिहाल या अस्पताल में होता है।

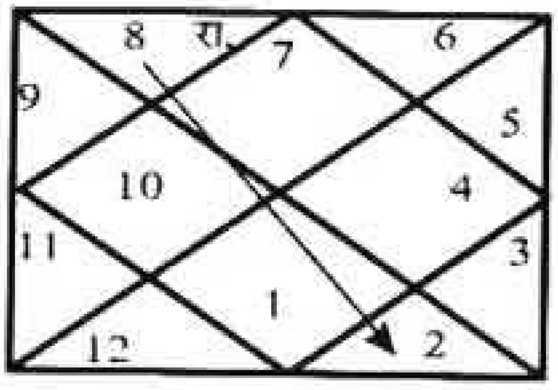
दशा–यदि कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. राहु + **चंद्र**–कार्य में रुकावट, नौकरी में रुकावट होगी।
2. राहु + **सूर्य**–सरकारी पक्ष में रुकावट।
3. राहु + **मंगल**–भाईयों में विवाद।
4. राहु + **बुध**–भाग्य में रुकावट।
5. राहु + **बृहस्पति**–मित्रों से मनमुटाव।
6. राहु + **शुक्र**–परिश्रम का लाभ नहीं।
7. राहु + **शनि**–शिक्षा में रुकावट सम्भव।

तुलालग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में

तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां द्वितीय स्थान में राहु वृश्चिक राशि का होगा। वृश्चिक राशि में राहु



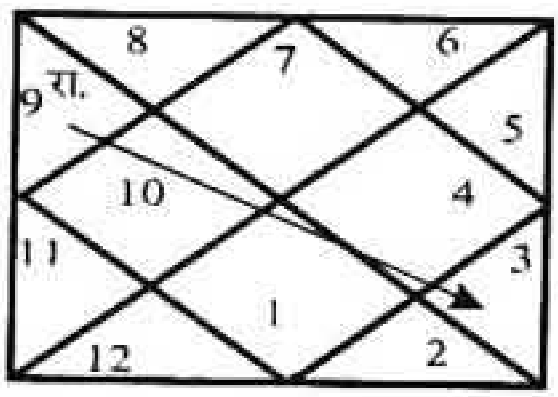
नीच का होता है। यहां राहु की उपस्थिति धन के घड़े में छेद के समान है। जातक में वाणी दोष, गुप्तरोग, कुटुम्ब में असंतोष, प्रारम्भिक विद्या में रुकावट होगी।

दशा—राहु की दशा धन प्राप्ति में बाधक होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. राहु + **चंद्र**—नेत्र विकार सम्भव है।
2. राहु + **सूर्य**—राजदण्ड से धननाश होगा। नेत्र विकार सम्भव।
3. राहु + **मंगल**—धन आएगा पर खर्च होता चला जाएगा।
4. राहु + **बुध**—भाग्य में रुकावटें।
5. राहु + **बृहस्पति**—धन के कारण भाईयों में विवाद सम्भव।
6. राहु + **शुक्र**—परिश्रम के धन में विवाद सम्भव।
7. राहु + **शनि**—विद्या में व्यवधान।

तुलालग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में



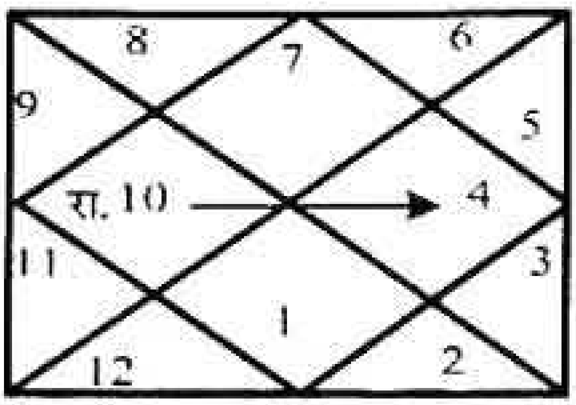
तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां तृतीय स्थान में राहु धनु राशि का होगा। धनु राशि राहु की शत्रु राशि है। ऐसे जातक को धन, यश व कीर्ति अर्जित करने में बाधा होगी परिजनों में, भाईयों में, भागीदारों में अविश्वास की स्थिति रहेगी।

दशा—राहु की दशा से पराक्रम में रुकावट होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. राहु + **चंद्र**—भाई-बहनों में विवाद।
2. राहु + **सूर्य**—सरकारी कर्मचारियों में विवाद।
3. राहु + **मंगल**—एकाध भाई की अकाल मृत्यु।
4. राहु + **बुध**—शिक्षा में रुकावट।
5. राहु + **बृहस्पति**—बड़ों के प्रति अनादर की भावना।
6. राहु + **शुक्र**—परिश्रम में रुकावट।
7. राहु + **शनि**—शिक्षा व संतति में रुकावट।

तुलालग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



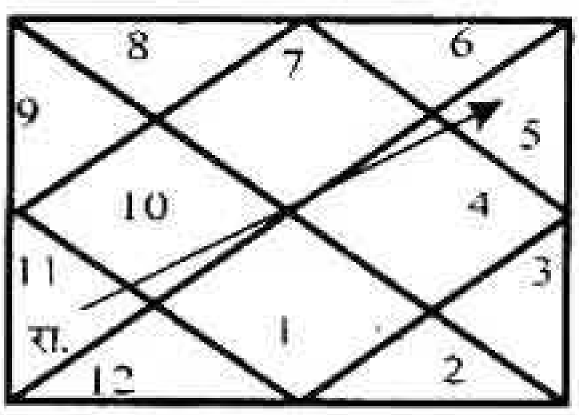
तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां चतुर्थ स्थान में राहु मकर राशि का होगा। मकर राशि राहु की सम राशि है। ऐसे जातक जमीन-जायदाद, आर्थिक मामलों, वैभव, ऐश्वर्य एवं प्रतिष्ठा के मामले में खुश किस्मत नहीं होते। जीवन में प्रगति एवं सामान्य सुख से वंचित रहते हैं। अच्छा घर, अच्छा वाहन, एवं अच्छे नौकर के मामले में भाग्यशाली नहीं होते।

दशा–राहु की दशा में सुख प्राप्ति में बाधा आएगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु + चंद्र**–माता को कष्ट।
2 **राहु + सूर्य**–पिता को कष्ट।
3. **राहु + मंगल**–भाईयों को कष्ट, धन हानि।
4. **राहु + बुध**–उच्च शिक्षा में व्यवधान।
5. **राहु + बृहस्पति**–गुरु से द्वेष, बड़ों का अनादर।
6. **राहु + शुक्र**–वाहन दुर्घटना योग।
7. **राहु + शनि**–वाहन से चोट पहुंचेगी।

तुलालग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में



तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां पंचम स्थान में राहु कुंभ राशि का होगा। कुंभ राशि राहु की स्वराशि है। ऐसे जातक की विद्या में बाधा आती है। बुद्धि एवं प्रतियोगी परीक्षा, लॉटरी सट्टे व शेयर में भाग्य साथ नहीं देता।

राहु की यह स्थिति पुत्र संतान की प्राप्ति में बाधक है।

दशा–राहु की दशा चिन्ताकारक, विद्या-संतान में रुकावट वाली सिद्ध होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु + चंद्र**–कन्या की अकाल मृत्यु।

2 **राहु + सूर्य**–पुत्र संतति का नाश।

3. **राहु + मंगल**–पुत्र व भाई का नाश।

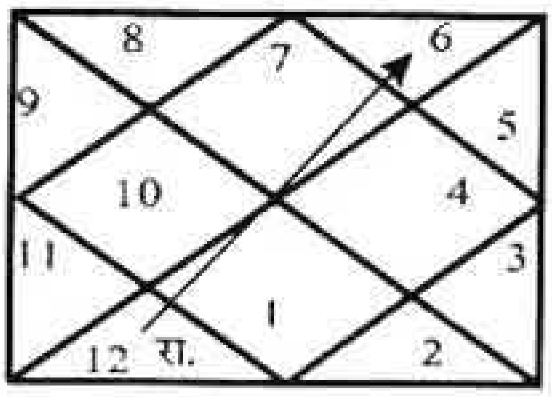
4. **राहु + बुध**–पुत्री का नाश।

5. **राहु + बृहस्पति**–गुरु व ज्ञान का शोषण।

6. **राहु + शुक्र**–गुप्त बीमारी।

7. **राहु + शनि**–शिक्षा में बाधा। सुख में बाधा।

तुलालग्न में राहु की स्थिति षष्ट्म स्थान में



तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां छठे स्थान में राहु मीन राशि का होगा। मीन राशि राहु की प्रिय राशि नहीं है। शास्त्रकारों ने छठे स्थान में राहु की स्थिति को राजयोग कारक माना है। कहा गया है-''भिषा एकादशे राहु राजयोगो प्रकश्यते''ऐसे जातक फलत: ऐसे जातक का जीवन उन्नतिशील, प्रतिष्ठा जनक, आर्थिक एवं भौतिक सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होता है। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम व समर्थ होता है।

दशा–यदि कुण्डली में कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा शुभफल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु + चंद्र**–राज्य सम्मान में बाधा।

2 **राहु + सूर्य**–सरकारी कार्य में रोड़ा।

3. **राहु + मंगल**–भाईयों द्वारा धन नाश।

4. **राहु + बुध**–बहनों का सुख नहीं।

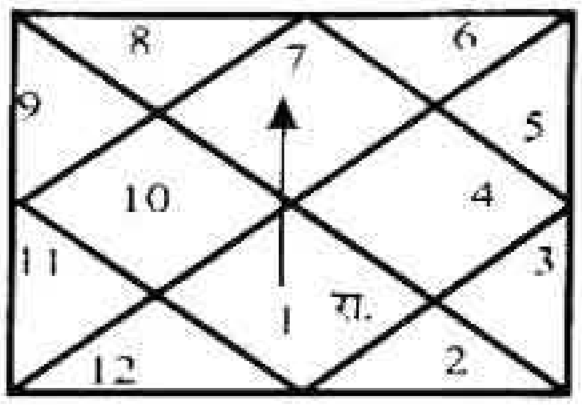
5. **राहु + बृहस्पति**–गुरुजनों का सम्मान।

6. **राहु + शुक्र**–परिश्रम के फल में बाधा।

7. **राहु + शनि**–शिक्षा व सुख में बाधा।

तुलालग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में

तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां सप्तम स्थान में राहु मेष राशि का होगा। मेष राशि राहु की सम राशि



है। ऐसे जातक को धन, पद, प्रतिष्ठा, नौकरी एवं व्यापार में भरपूर सफलता मिलती है। ऐसे जातक राजनीतिज्ञ व कूटनीतिज्ञ होते हैं।

गृहस्थ सुख, पत्नी सुख में राहु की यह स्थिति बाधक होती है। जीवन साथी से मनमुटाव, खटपट, तनाव या विद्रोह की स्थिति बनती है।

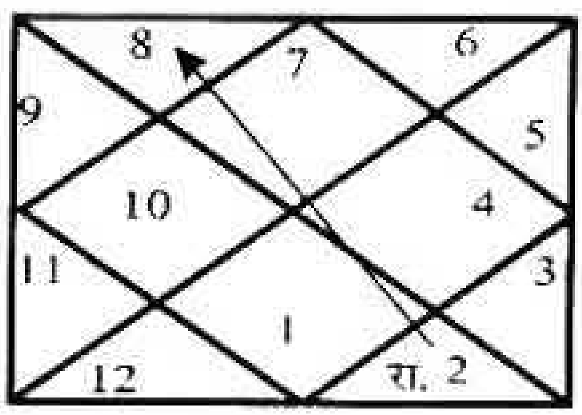
निशानी–जातक स्वेच्छाचारी एवं व्याभिचारी होता है।

दशा–राहु की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु + चंद्र**–पत्नी सुंदर पर गृहस्थ सुख में विवाद रहेगा।
2. **राहु + सूर्य**–राज्यपथ में लाभ पर नौकरी में विवाद रहेगा।
3. **राहु + मंगल**–भाईयों से लाभ पर व्यक्तिगत विवाद रहेगा।
4. **राहु + बुध**–बुद्धि में लाभ पर बुद्धि कुण्ठित होगी।
5. **राहु + बृहस्पति**–भाईयों से लाभ, ज्ञान से लाभ पर कुतर्क अधिक।
6. **राहु + शुक्र**–परिश्रम का पूरा लाभ पर खुद के निर्णय कई बार गलत होंगे।
7. **राहु + शनि**–सुख प्राप्ति पर उपकरण (रास्ता) गलत। विदेशी पढ़ाई व स्त्री में रुचि, अर्न्तजातीय विवाह।

तुलालग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में



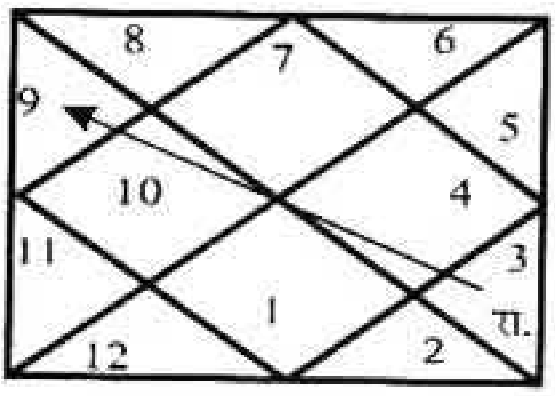
तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां अष्टम स्थान में राहु वृष राशि का होगा। वृष राशि में राहु उच्च का कहलता है। यहां राहु की स्थिति दीर्घायु व उत्तम स्वास्थ्य घातक है। राहु गुप्त रोग देता है। अचानक दुर्घटना की स्थिति बनती है। जातक के पैरों में कष्ट हो सकता है। यदि लापरवाही रही तो लाइलाज बीमारी होगी।

दशा–राहु की दशा-अन्तर्दशाा कष्ट पूर्ण होगी। यदि कुण्डली में कालसर्पयोग है तो आयु के लिए घातक दशा होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. राहु + **चंद्र**–दुर्घटना भय, जलभय रहेगा।
2. राहु + **सूर्य**–दुर्घटना भय, अग्निभय रहेगा।
3. राहु + **मंगल**–दुर्घटना भय, रक्तचाप रहेगा।
4. राहु + **बुध**–भाग्योदय में भयंकर बाधा होगी।
5. राहु + **बृहस्पति**–पिता, श्वसुर, बड़े भाई की चिंता होगी।
6. राहु + **शुक्र**–परिश्रम के लाभ में रुकावट।
7. राहु + **शनि**–शिक्षा व संतति में बाधा। पुत्र की दुर्घटना सम्भव है।

तुलालग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में



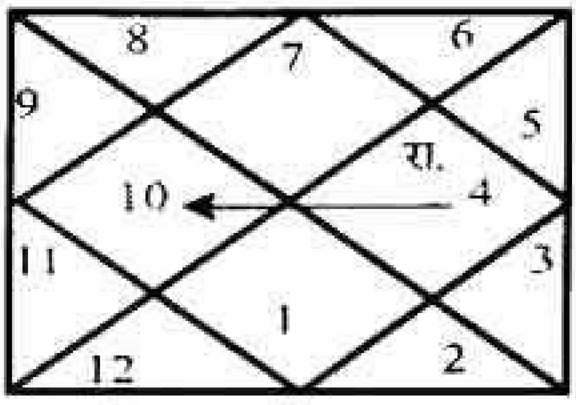
तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां नवम स्थान में राहु मिथुन राशि का होगा। मिथुन राशि में राहु स्वगृही राशि कहा गया है। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होता है। राहु राक्षसों का सेनापति है अतः ऐसा जातक साहस, वीरता में अजेय होता है। जातक बुद्धिमान, राजनीतिज्ञ व कूटनीतिज्ञ होता है।

दशा–राहु की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा उसे वैभव, पद-प्रतिष्ठा, व धन की प्राप्ति होगी। यदि कुण्डली में कालसर्प योग न हो तो दशा शुभफल ही देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. राहु + **चंद्र**–भाग्योदय के निर्णय में विवाद रहेगा।
2. राहु + **सूर्य**–व्यापार के निर्णय में विवाद होगा।
3. राहु + **मंगल**–भाईयों के निर्णय में विवाद रहेगा एवं सगाई के निर्णय में विवाद रहेगा।
4. राहु + **बुध**–विद्या सम्बन्धी निर्णय में विवाद रहेगा।
5. राहु + **बृहस्पति**–गुरुजनों के निर्णय में विवाद रहेगा।
6. राहु + **शुक्र**–स्वयं के निर्णय विवादास्पद होंगे।
7. राहु + **शनि**–संतति के निर्णय में विवाद रहेगा।

तुलालग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में



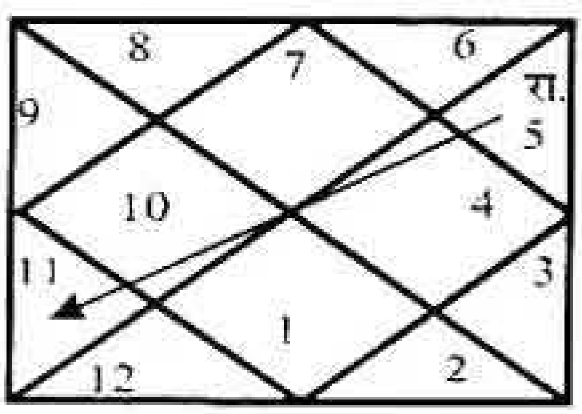
तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां दशम स्थान में राहु कर्क राशि का होगा। कर्क राशि राहु की शत्रु राशि है। राहु की केन्द्रगत यह स्थिति जातक को पराक्रमी प्रभावशाली व्यक्तित्व प्रदान करती है। जातक हठी, अति अभिमानी एवं समाजसेवी होता है परन्तु नौकरी, व्यवसाय, व्यापार एवं राजकार्य में बाधा महसूस होगी।

दशा–राहु की दशा-अन्तर्दशा में मिले-जुले फल मिलेंगे। यदि कुण्डली में कालसर्प योग है तो नौकरी एवं सुख-संसाधनों की प्राप्ति में विशेष संघर्ष की दशा होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु + चंद्र**–राज्य व नौकरी पक्ष ठीक पर बाधाएं निरन्तर रहेंगी।
2. **राहु + सूर्य**–सरकारी क्षेत्र में कष्ट पहुंचेगा।
3. **राहु + मंगल**–पत्नी व भाईयों में विवाद रहेगा।
4. **राहु + बुध**–भाग्य में बाधा बनी रहेगी।
5. **राहु + बृहस्पति**–'हंसयोग' के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा, परंतु परिजनों में विवाद रहेगा।
6. **राहु + शुक्र**–जातक उन्नति पथ पर ठोकर खाकर आगे बढ़ेगा।
7. **राहु + शनि**–सुख प्राप्ति एवं शिक्षा में बाधा। संतति आज्ञा में नहीं रहेगी।

तुलालग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में



तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां एकादश स्थान में राहु सिंह राशि का होगा। सिंह राशि राहु के परम शत्रु सूर्य की राशि है। शास्त्रकारों ने एकादश स्थान में स्थित राहु को राजयोग कारक माना है। जातक महान् पराक्रमी एवं शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है। जातक परिश्रम एवं बौद्धिक चातुर्य के माध्यम से जीवन के कंटकाकीर्ण मार्गों में सफलता प्राप्त करता है।

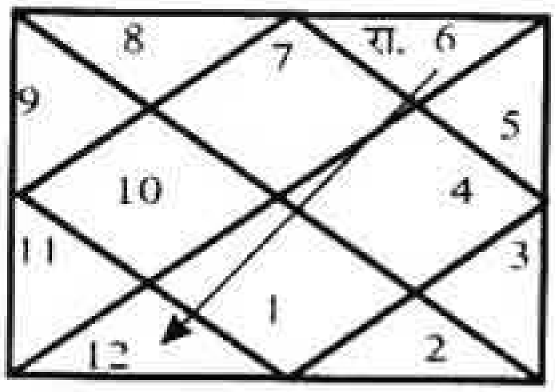
दशा–राहु की दशा-अन्तर्दशा में शुभफलों की प्राप्ति होगी। यदि कुण्डली में कालसर्प योग है तो दशा एकदम नेष्ट अशुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु + चंद्र**—जातक लोकप्रिय व्यापारी होगा।
2. **राहु + सूर्य**—जातक राज्य सरकार से फायदा उठाएगा।
3. **राहु + मंगल**—जातक को पत्नी के नाम के व्यापार से लाभ मिलेगा।
4. **राहु + बुध**—जातक उद्योगपति होगा पर स्थिति संघर्षशील रहेगी।
5. **राहु + बृहस्पति**—जातक के परिजनों में विवाद रहेगा।
6. **राहु + शुक्र**—उन्नति में बाधा पर अन्त में लाभ होगा।
7. **राहु + शनि**—सुख व संतति में बाधा पर अन्त में लाभ होगा।

तुलालग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में

तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां द्वादश स्थान में राहु कन्या राशि का होगा। कन्या राशि में राहु स्वगृही माना गया है। ऐसा जातक विदेशों में कमाता है। Export-Import का काम इनके अनुकूल रहता है। जातक की आर्थिक, सामाजिक व व्यवसायिक स्थिति अच्छी होती है। ऐसा जातक कभी भी निराश व हताश नहीं होता। जातक का आत्मबल एवं बुद्धिबल बढ़ा-चढ़ा होता है।



दशा—राहु की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी। यदि कुण्डली में कालसर्पयोग है तो यह दशा अशुभ फल देगी।

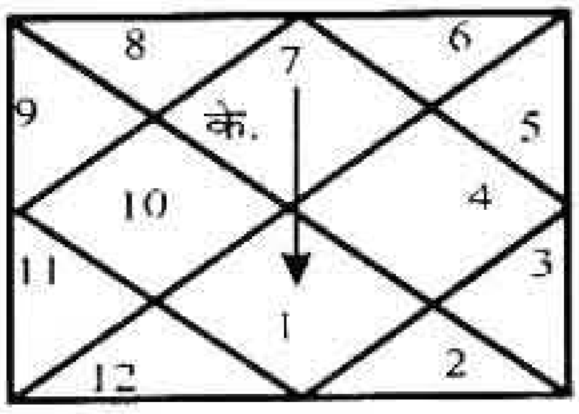
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु + चंद्र**—नेत्र विकार, पीड़ा।
2. **राहु + सूर्य**—नेत्र विकार, पीड़ा, सरकारी नुकसान।
3. **राहु + मंगल**—धन का अपव्यय अधिक। पत्नी से झगड़ा।
4. **राहु + बुध**—भाग्योदय होगा पर संघर्ष का साथ, यात्रा ट्रेवल्स-ऐजेन्सी से लाभ होगा।
5. **राहु + बृहस्पति**—भाईयों से मनमुटाव या सुख नहीं मिलेगा।
6. **राहु + शुक्र**—परिश्रम का लाभ कठिनता से मिलेगा।
7. **राहु + शनि**—शिक्षा व संतति में विलम्ब होगा।

❑❑❑

तुलालग्न में केतु की स्थिति

तुलालग्न में केतु की स्थिति प्रथम भाव में



तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने-सामने रहते हैं। जातक में पद-प्रतिष्ठा ऊंचा स्थान प्राप्त करने की महत्त्वाकांक्षा रहेगी। जातक उन्नति मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए चेष्टावान्, प्रयत्नशील रहेगा। उसमें उसे सफलता भी मिलेगी। जातक बुजुर्गों के मार्गदर्शन में आगे बढ़ेगा।

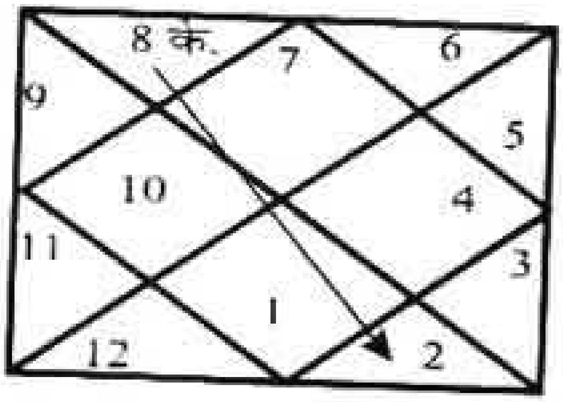
निशानी–जातक संयुक्त परिवार में रहना पसन्द करेगा।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा उन्नति दायक साबित होगी। यदि कुण्डली में कालसर्प योग न हो तो केतु शुभ रहेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–कार्य में रुकावट, नौकरी में रुकावट होगी।
2. **केतु + सूर्य**–सरकारी पथ में रुकावट।
3. **केतु + मंगल**–भाईयों में विवाद।
4. **केतु + बुध**–भाग्य में रुकावट।
5. **केतु + बृहस्पति**–मित्रों से मनमुटाव।
6. **केतु + शुक्र**–परिश्रम का लाभ नहीं।
7. **केतु + शनि**–शिक्षा में रुकावट सम्भव।

तुलालग्न में केतु की स्थिति द्वितीय भाव में



तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने-सामने रहते हैं। यहां द्वितीय स्थान में केतु वृश्चिक राशि में होगा वृश्चिक राशि में केतु उच्च का होता है। केतु की यह स्थिति धन के घड़े में छेद को बताती है। जातक कमाएगा बहुत पर धन की बरकत नहीं होगी। जातक की वाणी दूषित होगी। धनेश मंगल की स्थिति आर्थिक स्थिति को सुस्पष्ट करेगी। अन्यथा आर्थिक संघर्ष का संकेत स्पष्ट है।

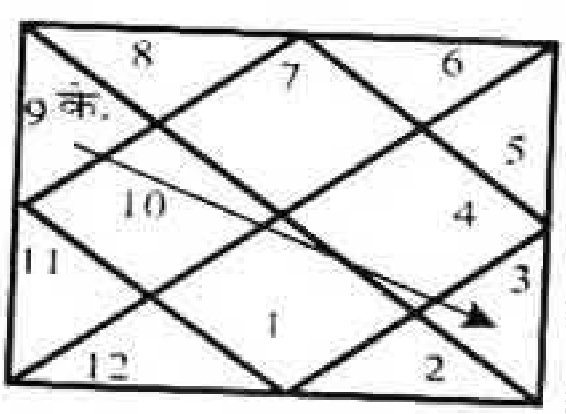
निशानी–वाणी में थोड़ी कटुता रहेगी।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा संघर्ष की संकेतक है। यदि कुण्डली में कालसर्प योग बना है तो यह दशा कष्टदायक रहेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–नेत्र विकार सम्भव है।
2. **केतु + सूर्य**–राज दण्ड से धन नाश होगा। नेत्र विकार सम्भव है।
3. **केतु + मंगल**–धन आएगा पर खर्च होता चला जाएगा।
4. **केतु + बुध**–भाग्य में रुकावटें।
5. **केतु + बृहस्पति**–धन के कारण भाईयों में विवाद सम्भव।
6. **केतु + शुक्र**–परिश्रम के धन में विवाद सम्भव।
7. **केतु + शनि**–विद्या में व्यवधान।

तुलालग्न में केतु की स्थिति तृतीय भाव में



तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने-सामने रहते हैं। यहां तृतीय स्थान में केतु धनु राशि का होगा। धनु राशि में केतु स्वग्रही होता है। केतु की

यह स्थिति व्यक्ति के पराक्रम को बढ़ाती है। जातक धार्मिक अभिरुचि से ओतप्रोत होता है। जातक को आध्यात्मिक मित्रों की तलाश रहेगी। जाताक भाई-बहनों, परिजनों से अच्छा सम्बन्ध बनाने हेतु लालायित रहेगा।

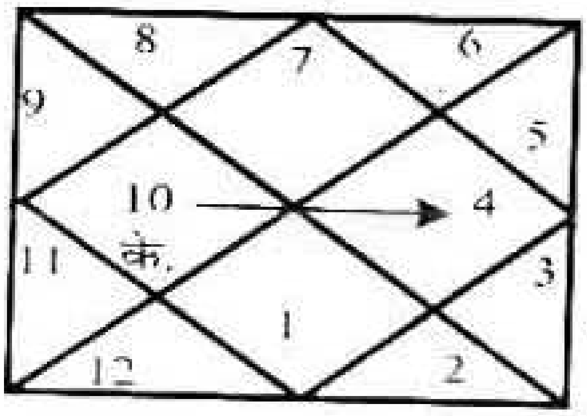
निशानी–जातक धार्मिक ग्रन्थों का अध्येता होगा।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा कीर्ति में वृद्धि करेगी। परंतु कुण्डली में यदि कालसर्प योग है तो दशा प्रतिकूल रहेगी। पराक्रम भंग होगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–भाई-बहनों में विवाद।
2. **केतु + सूर्य**–सरकारी कर्मचारियों से विवाद।
3. **केतु + मंगल**–एकाध भाई की अकाल मृत्यु।
4. **केतु + बुध**–शिक्षा में रुकावट।
5. **केतु + बृहस्पति**–बड़ों के प्रति अनादर की भावना।
6. **केतु + शुक्र**–परिश्रम में रुकावट।
7. **केतु + शनि**–शिक्षा व सन्तति में रुकावट।

तुलालग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ भाव में



तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनो आमने-सामने रहते हैं। यहां चतुर्थ स्थान में केतु मकर राशि का होगा। मकर राशि केतु की मूलत्रिकोण राशि है। केतु की यह स्थिति मातृसुख में बाधक है। शास्त्रों में पांच प्रकार की माताएं कहीं गई हैं। राजा की पत्नी, (राजमाता), पिता की पत्नी (जन्म देने वाली माता), स्वसुर की पत्नी (सासु मां), गुरु की पत्नी (गुरु मां) एवं वृद्ध मित्र की पत्नी माता तुल्य कहीं गई हैं। इनको लेकर कष्ट अथवा जमीन-जायदाद को लेकर कष्ट हो सकता है।

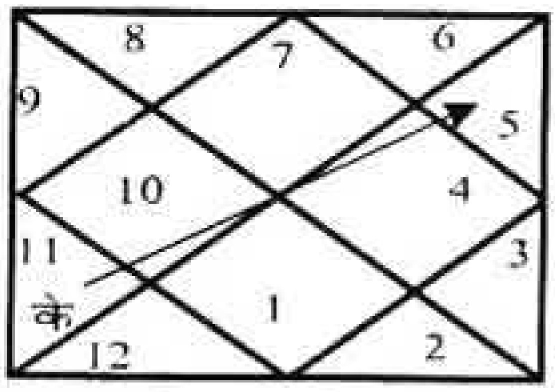
निशानी–वाहन को लेकर खर्चा होता रहेगा।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा मध्यम फल देगी। परंतु कुण्डली में यदि कालसर्प योग है तो पूर्णतः अनिष्ट फल देगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–माता को कष्ट।
2. **केतु + सूर्य**–पिता को कष्ट।
3. **केतु + मंगल**–भाईयों को कष्ट, धन हानि।
4. **केतु + बुध**–उच्च शिक्षा में व्यवधान।
5. **केतु + बृहस्पति**–गुरु से द्वेष, बड़ों का अनादर।
6. **केतु + शुक्र**–वाहन दुर्घटना योग।
7. **केतु + शनि**–वाहन से चोट पहुंचे।

तुलालग्न में केतु की स्थिति पंचम भाव में



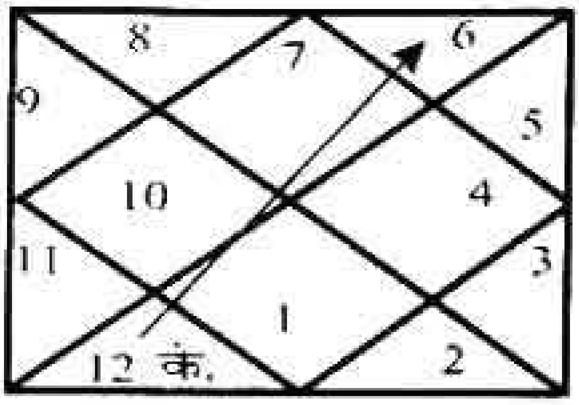
तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनो आमने-सामने रहते हैं। यहां पंचम स्थान में केतु कुंभ राशि का होगा। कुंभ राशि केतु की मित्र राशि है। ऐसे जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री की प्राप्ति में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। संतान के मामले में एक दो गर्भपात होते हैं। विद्या प्राय: अधूरी छूट जाती है।

दशा–केतु की दशा प्रतिकूल फल को देने वाली है। यदि कुण्डली में कालसर्प योग की स्थिति हो तो यह प्रतिकूलता ज्यादा बढ़ जाएगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–कन्या की अकाल मृत्यु।
2. **केतु + सूर्य**–पुत्र संतति का नाश।
3. **केतु + मंगल**–पुत्र व भाई का नाश।
4. **केतु + बुध**–पुत्री का नाश।
5. **केतु + बृहस्पति**–गुरु व ज्ञान का शोषण।
6. **केतु + शुक्र**–गुप्त बीमारी।
7. **केतु + शनि**–शिक्षा में बाधा, सुख में बाधा।

तुलालग्न में केतु की स्थिति षष्ट्म भाव में



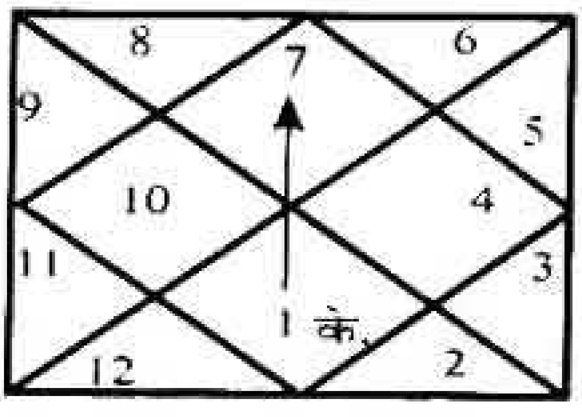
तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने-सामने रहते हैं। यहां षष्ट्म स्थान में केतु मीन राशि का होगा। मीन राशि केतु की स्वराशि है। ऐसे जातक के स्वजन ही जातक के शत्रु होते हैं। जातक के जीवन में गुप्त शत्रुओं की बाहुल्यता रहेगी। गुप्त रोग भी जातक को परेशान करते रहेंगे। जातक उद्विग्न रहेगा। दिमागी शान्ति भंग रहेगी।

दशा—केतु की दशा-अन्तर्दशा अशांति देगी। यदि कुण्डली में कालसर्प योग है तो अशांति चरम सीमा पर रहेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु + चंद्र**—राज्य सम्मान में बाधा।
2. **केतु + सूर्य**—सरकारी कार्य में रोड़ा।
3. **केतु + मंगल**—भाईयों द्वारा धन नाश।
4. **केतु + बुध**—बहनों का सुख नहीं।
5. **केतु + बृहस्पति**—गुरुजनों का अपमान।
6. **केतु + शुक्र**—परिश्रम के फल में बाधा।
7. **केतु + शनि**—शिक्षा व सुख में बाधा।

तुलालग्न में केतु की स्थिति सप्तम भाव में



तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनो आमने-सामने रहते हैं। यहां सप्तम स्थान में केतु मेष राशि का होगा। मेष राशि केतु की मित्र राशि है। जातक के विचार जीवन साथी से नहीं मिलेंगे। गृहस्था सुख की समरसता हेतु जातक को एक

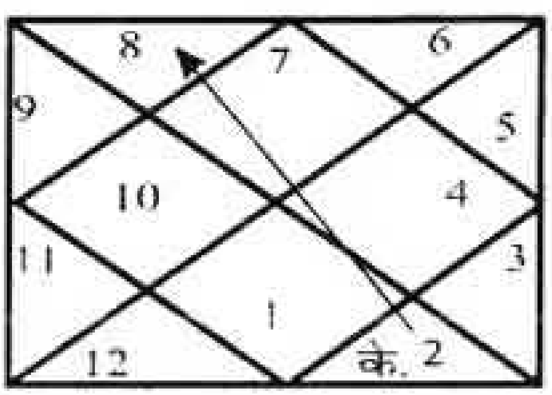
तरफा समझौता (Adjustment) करना होगा। गुप्त समझौते के लिए भी केतु की यह स्थिति ठीक नहीं है।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फलकारी रहेगी। यदि कुण्डली में कालसर्प योग हो तो केतु की दशा ज्यादा कष्टदायक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–पत्नी सुंदर व गृहस्थ सुख में विवाद।
2 **केतु + सूर्य**–राज्यपक्ष से लाभ पर नौकरी में विवाद।
3. **केतु + मंगल**–भाईयों से लाभ पर व्यक्तिगत विवाद रहेगा।
4. **केतु + बुध**–बुद्धि से लाभ पर बुद्धि कुण्ठित।
5. **केतु + बृहस्पति**–भाईयों से लाभ, ज्ञान से लाभ पर कुतर्क अधिक।
6. **केतु + शुक्र**–परिश्रम का पूरा लाभ पर खुद के निर्णय कई बार गलत होंगे।
7. **केतु + शनि**–सुख प्राप्ति पर उपकरण (रास्ता) गलत। विदेशी पढ़ाई व स्त्री में रुचि, अर्न्तजातीय विवाह।

तुलालग्न में केतु की स्थिति अष्टम भाव में



तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने-सामने रहते हैं। यहां अष्टम स्थान में केतु वृष राशि का होगा। वृष राशि में केतु नीच का कहा गया है। केतु की यह स्थिति स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल है। अचानक दुर्घटना से चोट पहुंच सकती है। गुप्त बीमारी भी सम्भव है। संतान के जन्म के बाद जातक की आयु को खतरा नहीं है।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल है। यदि कुण्डली में कालसर्प योग हो तो केतु ज्यादा कष्टदायक रहेगा।

विशेष–यदि जातक के मकान की छत पर कुत्ता रोए तो केतु अनिष्ट फल देगा। लाल किताब वालों ने केतु को कुत्ता कहा है। भूरे रंग का कुत्ता।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–दुर्घटना भय, जलभय।

2 **केतु + सूर्य**–दुर्घटना भय, अग्नि भय।

3. **केतु + मंगल**–दुर्घटना भय, रक्तस्राव।

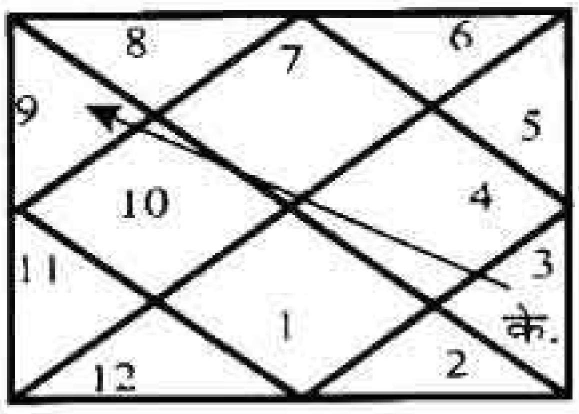
4. **केतु + बुध**–भाग्योदय में भयंकर बाधा।

5. **केतु + बृहस्पति**–पिता, श्वसुर, बड़े भाई की चिंता।

6. **केतु + शुक्र**–परिश्रम के लाभ में रुकावट।

7. **केतु + शनि**–शिक्षा व संतति में बाधा। पुत्र की दुर्घटना संभव है।

तुलालग्न में केतु की स्थिति नवम भाव में



तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने-सामने रहते हैं। यहां नवम स्थान में केतु मिथुन राशि का होगा। मिथुन राशि में केतु नीच का कहा गया है। नवम स्थान भाग्य का द्वार है। केतु यहां भाग्योदय में बाधा डालता है। नवम स्थान में केतु हो व्यक्ति की संतान बलवान एवं उन्नतिशील होती है।

निशानी–यदि ऐसे व्यक्ति की नीयत में बेईमानी आ जाए तो वह कभी दौलतमंद नहीं बन सकता।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी। यदि कुण्डली में कालसर्प योग हो तो केतु की दशा भाग्योदय में पूर्ण बाधक का कार्य करेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–भाग्योदय के निर्णय में विवाद रहेगा।

2 **केतु + सूर्य**–व्यापार के निर्णय में विवाद रहेगा।

3. **केतु + मंगल**–भाईयों के निर्णय में विवाद रहेगा एवं सगाई के निर्णय में विवाद रहेगा।

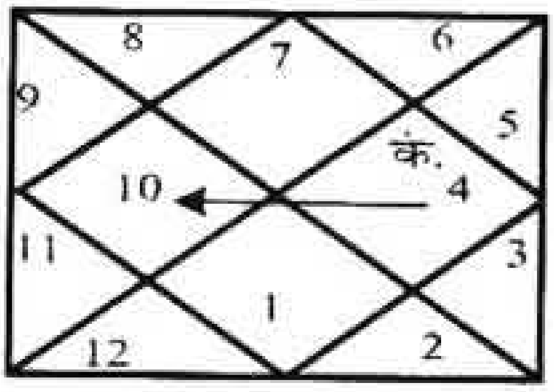
4. **केतु + बुध**–विद्या सम्बन्धी निर्णय में विवाद रहेगा।

5. **केतु + बृहस्पति**–गुरुजनों के निर्णय में विवाद रहेगा।

6. **केतु + शुक्र**–स्वयं के निर्णय विवादात्मक होंगे।

7. **केतु + शनि**–संतति के निर्णय में विवाद रहेगा।

तुलालग्न में केतु की स्थिति दशम भाव में



तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया को राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने-सामने रहते हैं। यहां दशम स्थान में केतु कर्क राशि का होगा। जो इसकी शत्रु राशि है। ऐसे जातक को राजकीय व्यक्ति अथवा किसी सरकारी अधिकारी द्वारा धोखा हो सकता है । पिता की संपत्ति में बाधा या पिता की अकृपा संभव है। शास्त्रों में पांच प्रकार के पिता कहे गए हैं। जन्म देने वाला पिता, अन्न देने वाला राजा पिता कहा गया है। भय से बचाने वाला संकट के समय में मदद करने वाला व्यक्ति पिता होता है। सासु का पति भी पिता एवं ज्ञान देने वाला मार्गदर्शक गुरु को भी पिता ही कहा गया है। इनमें से किसी का भी असन्तुष्ट होना केतु की यह स्थिति बताती है।

निशानी–जातक अपनी किस्मत से असन्तुष्ट रहेगा।

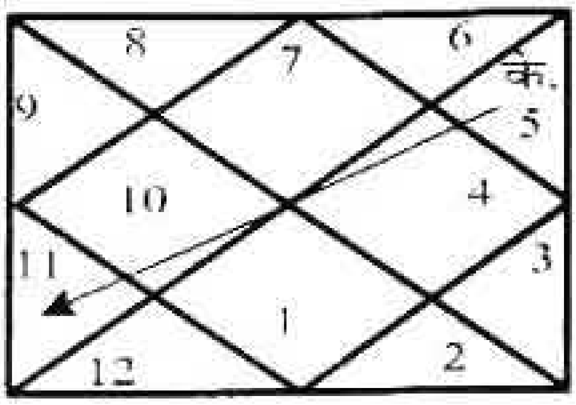
दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा अशुभ ही रहेगी। यदि कालसर्प योग है तो यह दशा ज्यादा अशुभ होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–राज्य व नौकरी पक्ष ठीक पर बाधाएं निरन्तर रहेगी।
2. **केतु + सूर्य**–सरकारी क्षेत्र में कष्ट पहुंचेगा।
3. **केतु + मंगल**–पत्नी व भाईयों से विवाद रहेगा।
4. **केतु + बुध**–भाग्य में बाधा बनी रहेगी।
5. **केतु + बृहस्पति**–'हंसयोग' के कारण जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा।
6. **केतु + शुक्र**–जातक उन्नति पथ पर ठोकर खाकर आगे बढ़ेगा।
7. **केतु + शनि**–सुख प्राप्ति एवं शिक्षा में बाधा। संतति आज्ञा में नहीं रहेगी।

तुलालग्न में केतु की स्थिति एकादश भाव में

तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने-सामने रहते हैं। यहां एकादश स्थान में केतु सिंह राशि



का होगा। जो कि केतु की शत्रु राशि कही गई है। ऐसे जातक के भाग्योदय में बाधा, व्यापार-व्यवसाय की उन्नति में लगातार रुकावट के संकेत केतु की यह स्थिति देती है। सरकारी ठेके एवं धार्मिक कार्यो में यश नहीं मिलगा।

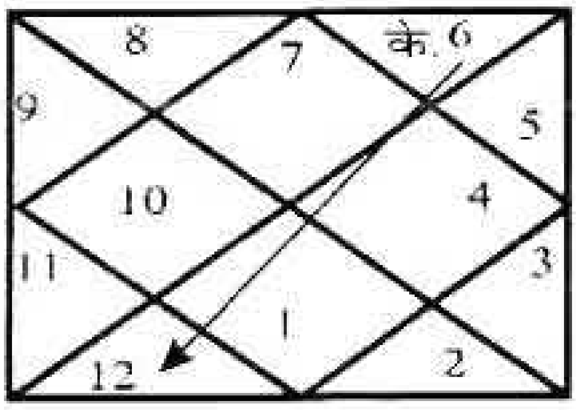
निशानी–जातक अपने व्यापार, कारोबार, नौकरी से असंतुष्ट रहेगा।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा अशुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–जातक लोकप्रिय व्यापारी होगा।
2 **केतु + सूर्य**–जातक राज्य सरकार से फायदा उठाएगा।
3. **केतु + मंगल**–जातक को पत्नी के नाम के व्यापार से लाभ होगा।
4. **केतु + बुध**–जातक उद्योगपति होगा पर स्थिति संघर्षशील रहेगी।
5. **केतु + बृहस्पति**–जातक के परिजनों में विवाद रहेगा।
6. **केतु + शुक्र**–उन्नति में बाधा पर अन्त में लाभ।
7. **केतु + शनि**–सुख व संतति में बाधा पर अंत में लाभ।

तुलालग्न में केतु की स्थिति द्वादश भाव में



तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने-सामने रहते हैं। यहां द्वादश स्थान में केतु कन्या राशि का होगा। कन्या राशि केतु की मूलत्रिकोण राशि है। केतु की यह स्थिति अनवरत यात्रा को बताती है एवं यात्राओं में लाभ होने का, यश-कीर्ति मिलने का संकेत भी देती है। जातक धार्मिक कार्य, परोपकार के कार्य, समाज-सेवा में बढ़-चढ़कर रुचि लेगा। जातक की बुद्धि तीव्र होगी। जातक 'प्लानिंग मास्टर' होगा।

निशानी–जातक को विदेशी व्यापार से लाभ होगा।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा में आध्यात्मिक लाभ होगा। यदि कुण्डली में कालसर्प योग की स्थिति है तो दशा अशुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–नेत्र विकार, पीड़ा।
2. **केतु + सूर्य**–नेत्र विकार, पीड़ा, सरकारी नुकसान।
3. **केतु + मंगल**–धन का अपव्यय अधिक, पत्नी से झगड़ा।
4. **केतु + बुध**–भाग्योदय होगा पर संघर्ष के साथ, यात्रा ट्रेवल-ऐजेन्सी से लाभ होगा।
5. **केतु + बृहस्पति**–भाईयों से मनमुटाव या सुख नहीं।
6. **केतु + शुक्र**–परिश्रम का लाभ कठिनता से मिलेगा।
7. **केतु + शनि**–शिक्षा व संतति से विलम्ब होगा।

❑❑❑

शुक्रवार व्रत कथा

शुक्रवार का उपवास शुक्र ग्रह की शांति हेतु किया जाता है, दूसरी ओर यह व्रत संतोषी माता के निमित्त सर्व मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए भी किया जाता है। शुक्रवार को मां संतोषी का भी वार कहा जाता है। इस व्रत को चाहे संतोषी मां को प्रसन्न करने के लिए किया जाए अथवा शुक्र ग्रह की शांति के लिए, यह दोनों ही स्थितियों में सर्व मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाला है।

शुक्र का तांत्रिक मंत्र—ॐ शुं शुक्राय नमः।

विधि विधान—शुक्रवार का व्रत अन्य व्रतों की अपेक्षा ब्रह्ममुहूर्त में किया जाता है। प्रातः काल सूर्योदय के पूर्व उठकर स्नानादि से निवृत्त हो पूर्व दिशा की ओर मुख करके शुक्र के तांत्रिक मंत्र का ग्यारह बार जाप करें। व्रत के पूजन व प्रसाद में सफेद वस्तुओं का पूजन करें। इस व्रत में खट्टी चीजें नहीं खानी चाहिए तथा भोजन एक ही समय करना चाहिए।

व्रत कथा—एक समय की बात है कि एक नगर में कायस्थ ब्राह्मण तथा वैश्य जाति के तीन लड़कों में परस्पर गहरी मित्रता थी। उन तीनों मित्रों का विवाह हो गया था। ब्राह्मण तथा कायस्थ के लड़कों का गौना हो गया था परन्तु वैश्य के लड़के का अभी गौना नहीं हुआ था।

एक दिन कायस्थ के लड़के ने कहा कि हे मित्र तुम भी मुकलावा करके अपनी स्त्री को ले आओ। स्त्री के बिना घर अत्यधिक सूना लगता है। यह बात वैश्य के लड़के को अच्छी लगी।

वह कहने लगा कि मैं अभी जाकर मुकलावा लेकर आता हूं। ब्राह्मण के लड़के ने कहा कि मित्र तुम अभी अपनी स्त्री को लेने मत जाओ क्योंकि शुक्र अस्त हो रहा है। जब उदय हो जाए तब जाकर ले आना।

परन्तु वैश्य का लड़का अपनी जिद पर अड़ गया तथा किसी प्रकार से नहीं माना। उसके घरवालों ने भी उसे बहुत समझाया किंतु सबकी बातें अनसुनी करके वह अपनी स्त्री को लेने के लिए ससुराल चला गया।

उसको आया देखकर ससुराल वाले भी चकराए। दामाद का स्वागत सत्कार करने के बाद उन्होंने उसके आने का कारण पूछा। वैश्य पुत्र ने कहा कि मैं अपनी स्त्री को लेने के लिए आया हूं। ससुराल के व्यक्तियों ने भी उसे अनेक प्रकार से समझाया किंतु वह अपनी बात पर अडिग रहा।

जब वैश्य पुत्र नाना प्रकार से समझाने पर भी न माना तो ससुराल के व्यक्तियों ने लाचार होकर अपनी पुत्री को विदा कर दिया। वैश्य पुत्र पत्नी को रथ में बिठाकर चल दिया। थोड़ी दूर जाने के बाद मार्ग में रथ का पहिया टूट गया तथा बैल का पैर भी टूट गया।

उसकी पत्नी भी गिरकर घायल हो गई तथा रास्ते में डाकुओं ने उनके वस्त्राभूषण छीन लिए। इस प्रकार अनेक कष्टों को सहते हुए वे पति-पत्नी घर पहुंचे तो घर आते ही वैश्य पुत्र को सर्प ने काट लिया। वैध ने भी कह दिया कि यह तीन दिन बाद मर जाएगा। जब उसके दोनों मित्रों को यह सूचना प्राप्त हुई तो उन्होंने कहा कि यदि वह पुन: अपनी स्त्री के साथ ससुराल जाए तथा शुक्रोदय पर लौटे तो निश्चय ही विघ्न टल जाएगा।

सेठ ने अपने पुत्र तथा वधू को तत्काल ही ससुराल पहुंचा दिया। वहां पर पहुंचते ही वैश्य पुत्र की मूर्छा दूर हो गई तथा वह साधारण उपचार के द्वारा ही स्त्रस्थ हो गया।

ससुराल वाले अति प्रसन्न हुए तथा वैश्य पुत्र अपनी ससुराल में स्वास्थ्य लाभ करता रहा इसके पश्चात् शुक्र उदय होने पर अपनी स्त्री को लेकर पुन: घर लौट गया।

अथ शुक्रवार की आरती

आरती लक्ष्मण बालजती की। असुर संहारन प्राणपति की।।
जगमग ज्योति अवधपुरी राजे। शेषाचल पर आप विराजे।।
घंटाताल पखावज बाजै। कोटि देव आरती साजै।।
क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै। तीन लोक जाकि शोभा राजै।।
कंचन थार कपूर सोहाई। आरती करत सुमित्रा माई।।
प्रेम मगन होय आरती गावैं। बसि बैकुण्ठ बहुरि नहीं आवैं।।
भक्त हेतु हरि लाड़ लड़ावैं। जब घनश्याम परम पद पावैं।।

शुक्रस्तवराजः

अस्य श्रीशुक्रस्तवराजस्य प्रजापतिर्ऋषि:, अनुस्टुप् - छन्द: ।
शुक्रो देवता, शुक्रप्रीर्त्थं जपे विनियोग:।।
नमस्ते, भार्गव श्रेष्ठ, दैत्य - दानव - पूजित:।
वृष्टि रोध प्रकंत्रे, च, वृष्टि कत्रे, नमो नम:।।
देवयानि, पित: तुभ्यम्, वेद वेदांग पारग।
परेण, तपसा, शुद्ध:, शंकर:, लोक सुन्दर:।।
प्राप्त:, विद्यां, जीवनाख्यां, तस्मै, शुक्रात्मने नम:।
नम:, तसमै भगवते भृगु पुत्राय् वेधसे।।
तारा मण्डल, मध्यस्थ, स्व भासा - सित - अम्बर।
यस्य - उदये, जगत् - सर्वम्, मंगल - अर्ह, भवेत् - इह।।
अस्तम्, य: - ते, हिं-अरिष्टम्, स्यात् - तस्मै, मंगल रूपिणे।
त्रिपुरा - वासिन:, दैत्यान्, शिव - बाण - प्रपीडितान्।।
विद्यया, अजीवय:, शुक्र: नमस्ते, भृगु नन्दन।
ययाति, गुरवे, तुभ्यम्, नमस्ते, कवि, नन्दन।।
बलि राज्य प्रद: जीव:, तस्मै, जीवात्मने, नम:।
भार्गवाय, म:, तुभ्यम्, पूर्व गीर्वाण वन्दित:।।
जीव पुत्राय्, य:, विद्याम्, प्रादात् तस्मै, नम: नम:।
नम: शुक्राय काव्याय्, भृगुपुत्राय्: धीमहि।।
नम:, कारण रूपाय्, नमस्ते, कारणात्मने।
स्तवराजम् इमम्, पुण्यम्, भार्गवस्य, महात्मन:।।
य:, पठेत्, श्रेणुयात्, वा, अपि, लभते, वाञ्छितम्, फलम्।
पुत्रकाम:, लभेत्, पुत्रान्, श्रीकाम:, लभते वियम्।।
राज्य काम: लभेत् राज्यम् स्त्री काम:, स्वियम्, उत्तमाम्।

भृगूवारे, प्रयत्नेन, पठितव्यम्, समाहितैः।।
अन्य वारे, तु, होरायाम्, पूजयेत् भृगु नन्दनम्।
रोगार्तः, मुच्यते रोगात्, भयार्तः मच्यते भयात्।।
यत् - यत् प्रार्थयते, जन्तुः तत् - तत् प्राप्नोति सर्वदा।
प्रातः काले प्रकर्तव्या भृगु पूजा प्रयत्नत।।
सर्व पाप विनिर्मुक्त प्राप्नुयात् शिव सन्नि धिम्।।

नोट–सभी प्रकार के ऐश्वर्य तथा पूर्ण रति सुख प्राप्ति हेतु नित्य 108 पाठ करने चाहिए।

शुक्र मंत्र

अन्नात्परिस्रुत इति मंत्रस्य पराशरऋषि: शक्वरीछन्द: शुक्रोदेवता रसं ब्रह्मणो इति बीजं शुक्रपीत्यर्थे जपे विनियोग: ॐ पराशरऋषये नम: शिरसि १ॐ शक्वरी छनदसे नम: इति मुखे २.ॐ शुक्रदेवतायै नम: हृदये ३. ॐ रसंब्रह्मा इति बीजाय नम: गुह्ये ४ इति ऋष्यादिन्यास:। 'ॐ अन्नातपरिस्रुत:' इत्यङगुष्ठाभयां नम: १ 'ॐ रसंब्रह्मणा व्यपिबत्' इति तर्जनीभ्यां नम: २. 'ॐ क्षत्रं पय:' इति मध्यामाभ्यां नम: ३. 'ॐ सप्रजापति:' इत्यनामिकाभ्यां नम: ४. 'ॐ इति ऋष्यादिनन्यास:। 'ॐ अन्नातपरिस्रुत: ' इत्यङगुष्ठाभ्यां नम: १ 'ॐ रसंब्रह्मण व्यपिबत्' इति तर्जनीभ्यां नम: २ ' ॐ क्षत्रं पय: ' इति मध्यामायां नम: ३. 'ॐ सोमप्रजापति: 'इत्यनामिकाभ्यां नम: ४. 'ऋतेनसत्यमिन्द्रयं विपानर्ठ, शुक्रमन्धस: 'इति कनिष्ठिकाभयां नम: ५. 'इन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोमृतंमधु' इति करतलकरपृष्ठाभयां नम: ६. इति करन्यास:।

'ॐ अन्नात्परिस्रुत: 'इति हृदयाम नम: १ ' ॐ रसब्रह्मणाव्यापिबत्' इति शिरसे स्वाहा २ ' ॐ क्षत्रंपय:' इति शिखायै वषट ३.' ॐ सोमंप्रजापति:' इति कवचाय हुम ४' ' ॐ ऋतेन-सत्यमिन्द्रियं विपानर्ट, शुक्र मन्धस: इति नेत्रयायं वीषट् ५ ' ॐ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतंमधु' 'इत्यस्राय फट्' ६ इति हृदयादिन्यास:।

'ॐ अन्नात्परिस्रुत:'ति शिरसि १ ॐ रसब्रह्मणा इति ललाटे २ 'ॐ व्यपिबतक्षत्रम्' इति मुखे ३ 'ॐ पय: सोमम्' इति हृदये ४ 'ॐ प्रजापति: 'इत नाभौ ५ 'ॐ ऋतेन सत्यम्' इति कट्याम् ६ 'इन्द्रियं विपानम्' इति गुदे ७ ॐ शुक्रम्' इति वृषणयों: 'ॐ अंधस' इत्पुर्वो: १ 'ॐ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पय: ''इति जानुनो: ११ 'ॐ अमृतम्' इति पादयो: १ ' ॐ मधु' इति सर्वाङ्गे २ इति मंत्रन्यासं कृत्वा ध्यायेत्-ॐ श्वेताम्बर: श्वेतवपु: किरीटी चतर्भुजौ दैत्यगुरु: प्रशान्त:।

तक्षाक्षसूत्रश्च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च व्रिभद्वरदोऽस्तु मह्यम १ इति ध्यात्वा जपेत्-ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रण व्यपिबत् क्षत्रवय: सोमं प्रजापति:।

शुक्र: ध्यानाम्–श्वेताम्बर: श्वेतवपु: किरीटी चतुर्भुजों दैत्यगुरु: प्रशान्त: तथाऽससुत्रञ्च कमण्डलुश्च, दण्डश्च विप्रदवरदोऽस्तु मह्यम्।।

यह शुक्र परम तेजस्वी श्वेत वस्त्रों को धारण किए हुए हैं। श्वेत शरीर वाला है। श्वेत चमकीला मुकुट पहने हुए है। चार हाथ वाला है। दैत्यों का गुरु है शान्त है। रूद्राक्ष की माला पहने हुए है। हाथ में कमण्डल है, एक हाथ में दण्ड है। तत्काल वर देने वाला है। मुझे भी वरदायक फलदायक हो जावे। ऐसे तेजस्वी शुक्र का हम ध्यानपूर्वक आह्वान करते हैं।

आह्वान–

शुक्र हाटक नामाग्नि, समिधा-उदुम्बर

(उभटा) फल-खारक, मिश्री

सोमतुल्योदितिप्राज्ञो दानवानां च पुरोहितः। त्राता च सर्वदैत्यानां शुक्रमावहयाम्यहम्॥1॥

भोभो भोजकटेजात शुक्रश्वेताश्ववाहनः। समागच्छश्चतुवाहु भृगुगात्रविभूषणः ॥2॥

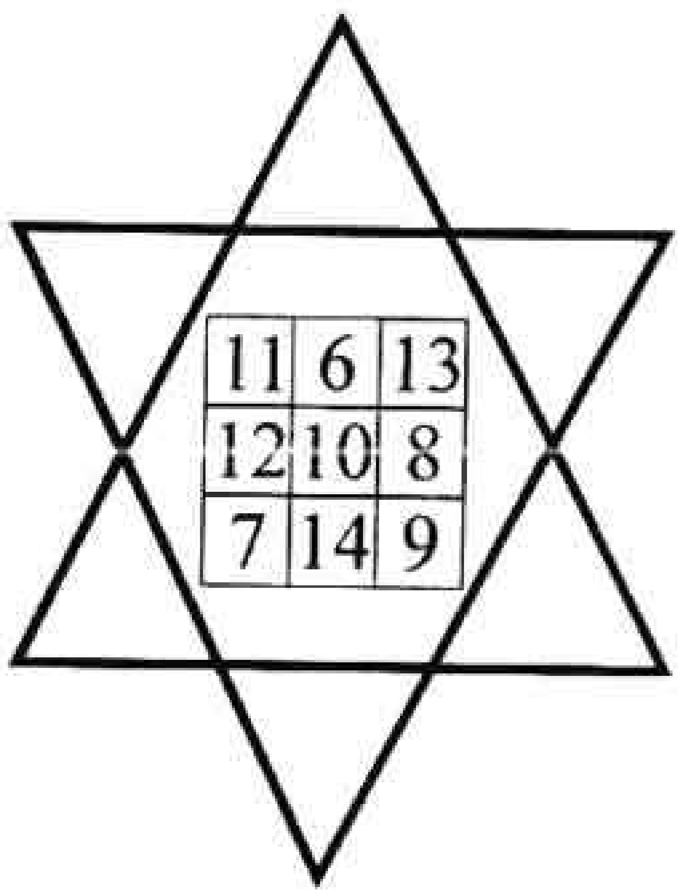
परिधाक्षा बलिहस्त कमण्डलु धरप्रदः। पूर्वपत्रेति शुक्रश्च प्राचयां शुक्रं निधापयेत्॥3॥

ॐ शुक्रज्योतिश्चचित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च।

ज्योतिष्मांश्च शुक्रश्च ऋतपाश्चातय ठ हाः॥17॥ 80॥

1. शुक्र ग्रह का वैदिक मन्त्र–ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रह्मणा व्यपि वत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ठ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु ॥19/75॥ पूर्वे शुक्रं स्थापयामि-

2. शुक्र का यन्त्र–



3. तान्त्रिक मन्त्र-ॐ द्राँ द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।'

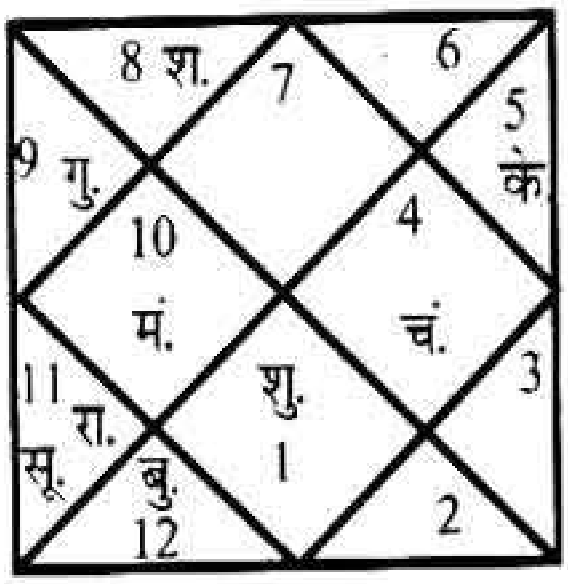
4. शुक्र गायत्री–ॐ भृगुवंशजाताय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः कविः प्रचोदयात्

विशेष–शुक्र के मन्त्रों के सोलह हजार (16,000) जाप से शुक्र प्रसन्न हो जाता है।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

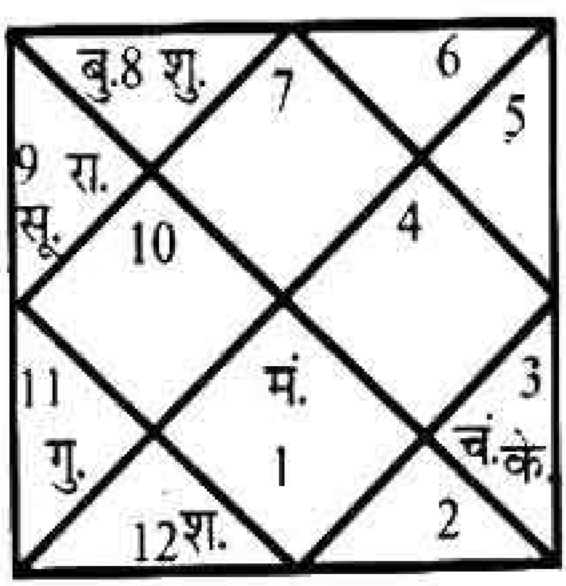
चैतन्य महाप्रभु





जन्मतिथि-27.2.1488, समय - 8.45 सायं, स्थान-नदिया।

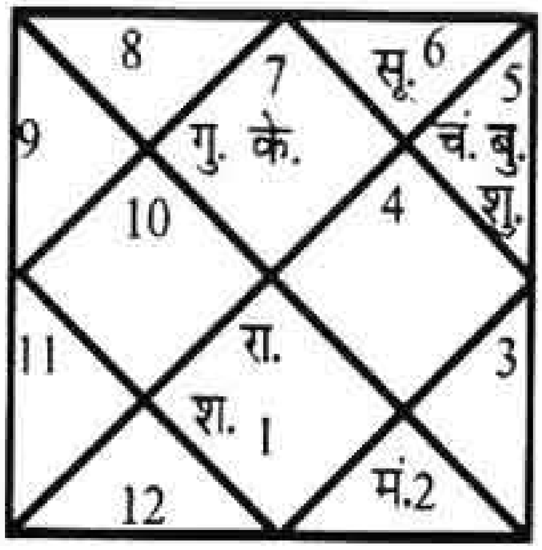
महर्षि रमण





जन्मतिथि-30.12.1879, समय - 1.30 सायं, स्थान-मदुरै।

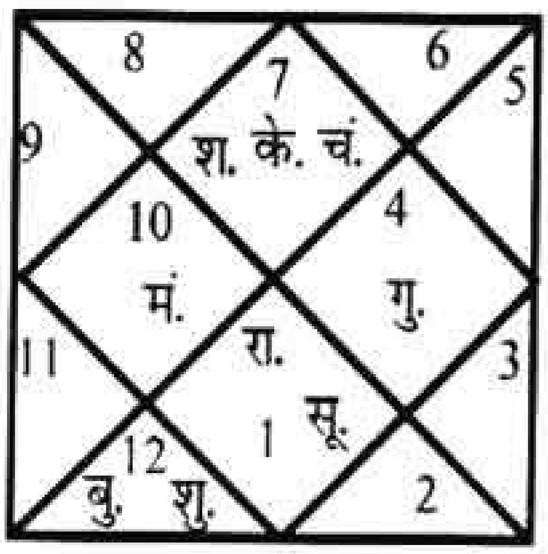
श्री राम शर्मा आचार्य





जन्मस्थान-आंवल खेड़ा (आगरा), जन्म 20.9.1911, प्रात: 9.50

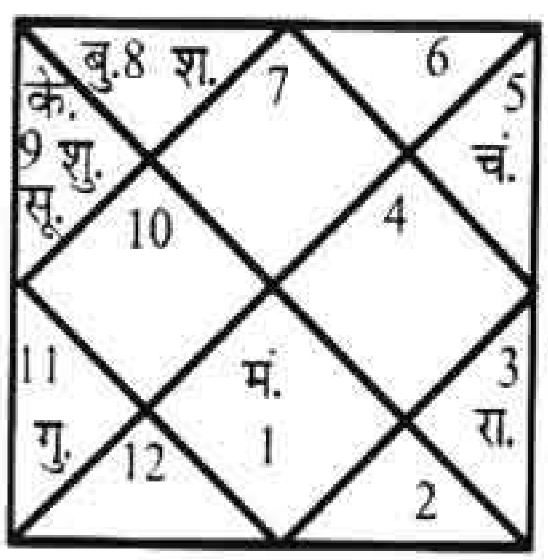
लंकापति रावण





जन्म समय-7.30 बजे सायं, लंकेश रावण भगवान श्रीराम के समकालीन थे। इसलिए उनकी कुण्डली के बहुत से ग्रह श्रीराम की कुण्डली से मिलते हैं।

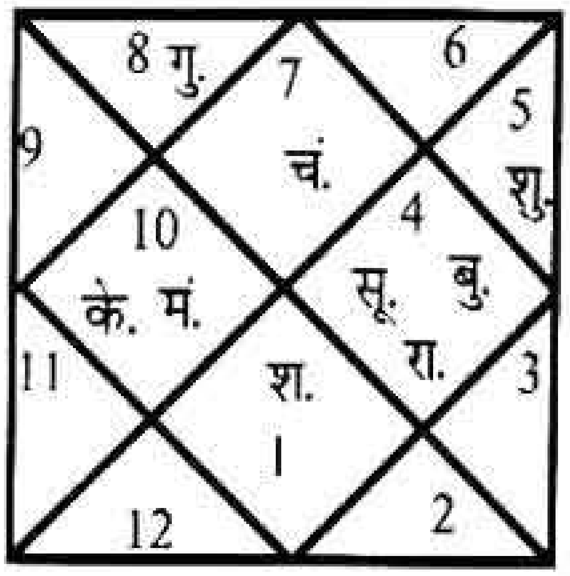
अटल बिहारी वाजपेयी (पूर्व प्रधानमंत्री)





जन्म-25.12.1926, जन्म समय- 2.30 रात्रि, ग्वालियर।

सन्त गोस्वामी तुलसीदास





महान् सन्त, कवि गोस्वामी तुलसीदास का ज्योतिषीय परिचय

भारतवर्ष के पवित्र तीर्थ प्रयागराज के पास बांदा जिले में राजापुर नामक एक गांव में सरयू पारीण ब्राह्मण श्री आत्माराज दुबे एवं उनकी धर्मपत्नी हुलसी के गर्भ से महान् सन्त गोस्वामी तुलसीदास का जन्म संवत् 1554 श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन तदनुसार 19.7.1497 को प्रातः 11 बजे हुआ। जन्मते समय बालक के मुख से रोने की जगह 'राम' शब्द निकला। जन्म के समय मुख में दांत थे। मां के गर्भ में बारह महीने रहने के कारण जन्म के समय शिशु का वजन भी बहुत भारी था। तुरन्त सारे गांव-देहात में इस अद्भुत बालक के जन्म की चर्चा शुरू हुई। लोगों ने इसका नाम 'रामबोला' रखा। इस बालक के जन्म से ठीक दसवें दिन माता की मृत्यु हो गई। दासी चुनियां ने इस बालक का पालन पोषण किया। तुलसीदास तुला राशि के हिसाब से इनका जन्म नाम था। जब तुलसीदास लगभग साढ़े पांच वर्ष के हुए तो चुनियां का भी देहांत हो गया। जनश्रुति है कि जगत् जननी पार्वती ने ब्राह्मणी का वेश धारण कर इस अनाथ बालक को खाना खिलाया। ज्योतिषशास्त्र कहता है कि चंद्रमा से चौथे पापग्रह हो तो बालक माता के दूध से नहीं बकरी के दूध से पालित होगा।

विक्रम संवत् 1561 माघ शुक्ल पंचमी शुक्रवार को ठीक सात वर्ष की आयु में इस बालक को यज्ञोपवीत संस्कार श्री नरहरि जी महाराज ने अयोध्या में किया। विद्याध्ययन के रूप में रामबोला नामक इस बालक को नरहरि महाराज ने रामचरित्र मानस पढ़ाया। इसके बाद रामबोला ने काशी में शेष सनातन जी के पास रहकर वेद-वेदांग का अध्ययन पंद्रह वर्ष तक किया। तत्पश्चात् गुरु आज्ञा लेकर प्रयाग लौट आए।

यहां पर वे सबको रामकथा बड़े प्रेम से सुनाने लगा। संवत् 1583 ज्येष्ठ शुक्ल 13 गुरुवार को भारद्वाज गोत्र में उत्पन्न सुंदरी नामक कन्या से उनका विवाह 29 वर्ष की आयु में हुआ। क्योंकि मांगलिक प्रभाव वाली कुण्डलियों को 28 वर्ष बाद विवाह का सुख मिलता है। तुलसीदास जी की कुण्डली पूर्ण रुप से त्रिबल मांगलिक थी।

वे अपनी पत्नी के प्यार में पागल थे। एक बार उनकी पत्नी वर्षा ऋतु में मायके चली गई। अंधेरी रात्रि में तुलसीदास जी भी ससुराल पहुंच गए तथा घर की छत पर सांप को रस्सी समझ कर सीधा छत पर पहुंच गए। पत्नी ने इस पर उन्हें बहुत धिक्कारा और कहा-

''हाड़मांस की देह मम, तापर जितनी प्रीति।
तिसु आधी जो राम प्रति, अवसि मिटिहिं भवभीति।''

तुलसीदास को ये शब्द बाण की तरह चुभ गये, सप्तमेश शनि नीच का काम कर गया और वहीं से गृहस्थ धर्म त्यागकर साथ साधु वेश ग्रहण कर काशी चले गए। वे वहां घर-घर रामकथा कहने लगे। एक बार काशी के मरघट पर रामकथा सुनने से एक प्रेत की मुक्ति हुई। उस प्रेत ने उन्हें हनुमान जी का पता बताया। तुलसीदास जी अपने साधना बल एवं राम भक्ति बल के प्रभाव से हनुमान जी से मिले और हनुमान जी से श्री रघुनाथ जी के दर्शन की प्रार्थना की। हनुमान जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि तुम्हें चित्रकूट के रामघाट पर रघुनाथ जी के दर्शन होंगे। तुलसीदास ने अपना आसन चित्रकूट में जमाया और श्री राम तुलसीदास के सामने बालक रूप में प्रकट होकर चन्दन मांगा, पर तुलसीदास जी इतने मोहित हो गए कि श्रीराम को चन्दन देना ही भूल गए। जनश्रुति में दोहा प्रचलित है।

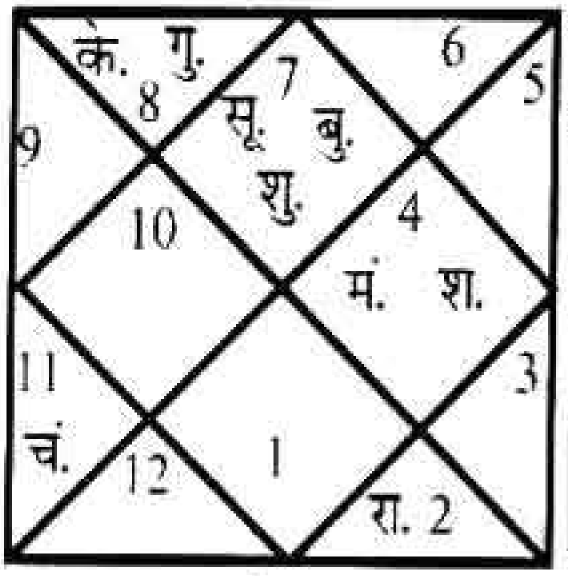
''चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर।
तुलसीदास चन्दन घिसे, तिलक करें रघुवीर।।''

संवत् 1628 में श्री हनुमान जी आज्ञा से तुलसीदास जी अयोध्या गए। वहां प्रयागराज में कुंभ मेला था। वहीं इन्हें भारद्वाज ऋषि याज्ञवलक्य मुनि के दर्शन हुए और इनमें कवित्व शक्ति का स्फुरण हुआ। स्वप्न में भगवान् शंकर ने उन्हें आदेश दिया तुम ग्रामीण (बृज) भाषा में काव्य-रचना करो। विक्रम संवत् 1631 में रामनवमी के दिन प्रात: काल में श्री तुलसीदास ने 77 वर्ष की आयु में श्रीरामचरित मानस की रचना प्रारम्भ की। दो वर्ष, सात महीने, छब्बीस दिन के अन्तराल में संवत् 1633 के मार्ग-शीर्ष शुक्ल पक्ष रामविवाह के दिन सातों काण्ड पूरे हो गए। रामकथा का श्रवण करते-करते श्री तुलसीदास जी ने 126 वर्ष की आयु में परिपूर्ण करके विक्रम संवत् 1880 श्रावण शुक्ल तृतीया शनिवार को असीघाट पर राम-राम जपते हुए अपनी शरीर का त्याग किया तथा हिन्दी साहित्य में अजर-अमर हो गए।

संत शिरोमणि तुलसीदास की कुण्डली में चारों केन्द्र भरे हुए होने से 'आसमुद्रात् योग' बना फलत: उनकी कीर्ति दिग्दिन्तर में सात समुद्र पार फैली। पूरे विश्व में संत शिरोमणि तुलसीदास के सानी कोई भक्त कवि नहीं हुआ। जिनकी पूजा भगवान श्रीराम के समकक्ष की जाती है। भक्ति रस में डूबी उनकी चौपाईयां आज भी अमोघ मन्त्र की तरह साधकों के कष्ट-रोग व शोक को दूर करने में अमृत तुल्य उपादेय का काम करती हैं। संत श्री तुलसीदास का जन्म राहु की महादशा में

हुआ तथा उनकी मृत्यु भी राहु की महादशा में हुई इस प्रकार उन्होंने विंशोत्तरी दशा क्रम का एक परिभ्रमण पूरा करके 120 वर्ष की आयु गणना पर सत्यता की मोहर लगा दी।

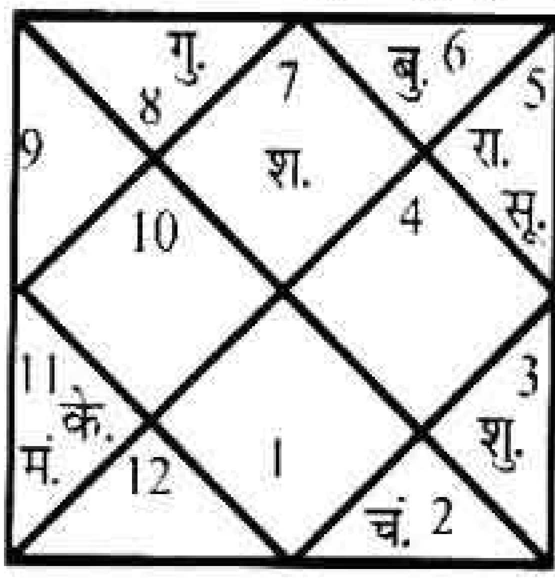
श्रीमती हिलेरी क्लिंटन

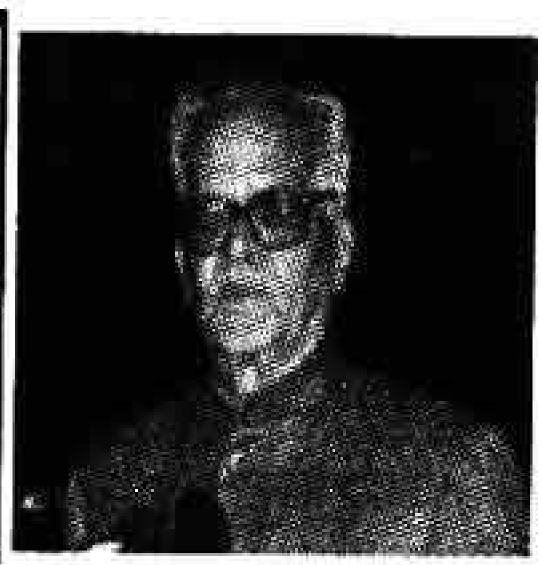




जन्म स्थान-शिकागो, जन्म तिथि-26.10.1947, जन्म समय-8.00 प्रातः।

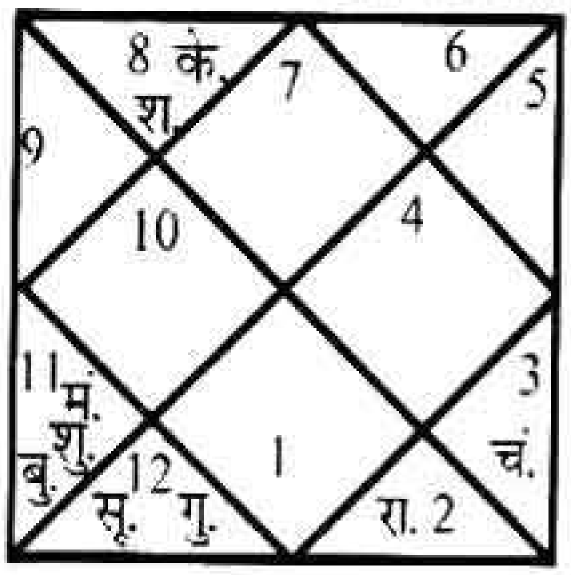
श्री रामनिवास मिर्धा





जन्म स्थान-कुचेरा (नागौर), जन्म तिथि-24.8.1924।

श्री रोमेश भण्डारी

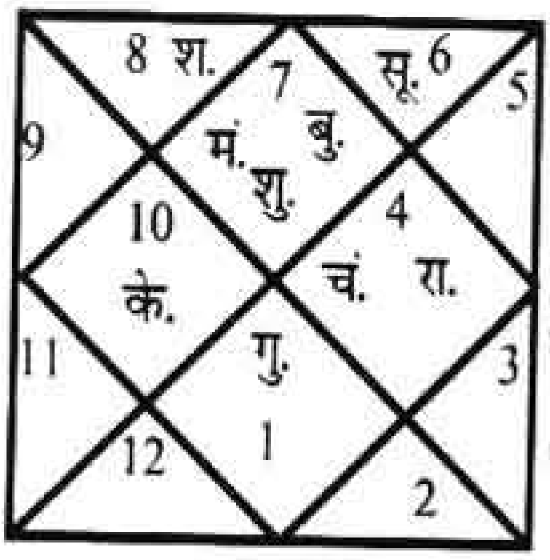




राज्यपाल, जन्म तिथि-29.3.1928, जन्म समय-20.30, जन्म स्थल-पटियाला।

महात्मा गांधी

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और राजयोग



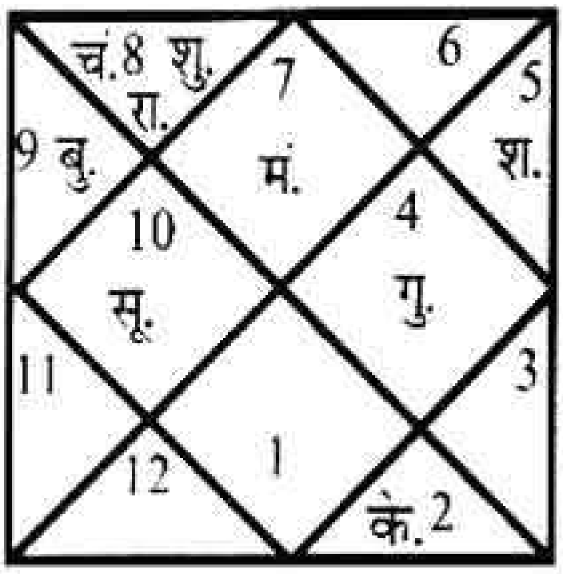


चारों केंद्र में शुभ या पाप ग्रह हुए तो 'चतुः सागर' नाम का राजयोग होता है। भाग्येश बुध राजयोग कारक होकर लग्न में है। मंगल उच्च का शुक्र स्वगृही लग्न में है। सूर्य तुला या बारहवें स्थान में हो तो मानसागरी के अनुसार एक हजार राजयोग नष्ट करता है। फलत: महात्मा गांधी किसी ऊंचे सरकारी पद पर आरूढ़ न हो सके क्योंकि दशम भाव में राहु भी है। परंतु राष्ट्रपिता के रूप में उन्होंने मरणोपरांत जो ख्याति प्राप्त की, उस दृष्टि से इस कुंडली में उपस्थित 'चतुः सागर' योग सार्थक होकर मुखरित हुआ।

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को प्रात: 8.25 मिनट पर पोरबन्दर कच्छ) गुजरात में हुआ। उनकी कुण्डली में राहु दशमेश चंद्रमा के साथ दशम भाव ं स्थित है। किसी भी जन्म कुण्डली के दूसरे, तीसरे, आठवें और बारहवें भाव का सम्बन्ध जातक को जेल अवश्य ले जाता है जब खासकर राहु का सम्बन्ध इन भावों में हो। महात्मा गांधी की कुण्डली में द्वितीय व द्वादश भाव में अशुभ ग्रह बैठे हैं। फलत: महात्मा गांधी आजादी के लिए अनेक बार जेल गए।

महात्मा गांधी की कुण्डली में सबसे अहम् घटना है उनकी गोली मारकर हत्या करना। यहां अष्टमेश शुक्र है। मुख्य मारकेश मंगल द्वितीयेश, बुध भी होकर अष्टमेश के साथ है। इन दोनों की अशुभता बढ़ाने के लिए व्ययेश बुध भी इनके साथ युति कर बैठा। फलत: जातक अष्टमेश, द्वितीयेश, व्ययेश की युति ही उनकी हत्या के लिए जिम्मेदार है। इनकी मृत्यु 1947 में परम पापी बृहस्पति की महादशा में हुई क्योंकि यहां बृहस्पति तृतीयेश व षष्टेश होकर वक्री है तथा मुख्य मारकेश मंगल की राशि में है। 'आंशिक कालसर्प योग' के कारण वे जीवन भर तनाव में रहे।

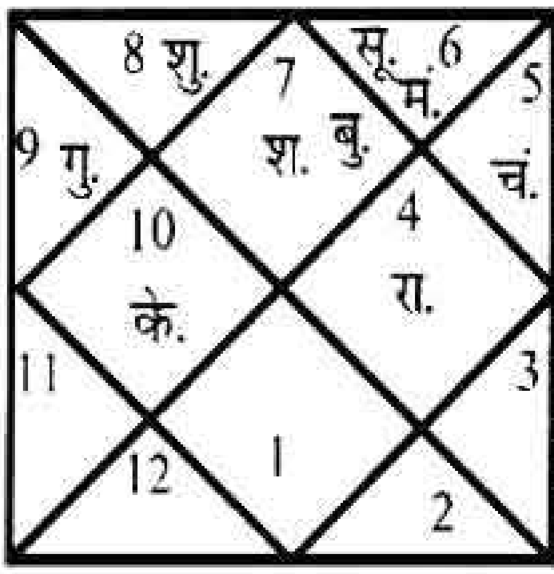
ननी पालकीवाला





जन्म-16.1.1920, जन्म समय- 00.45 रात्रि, जन्म स्थान-जवसारी

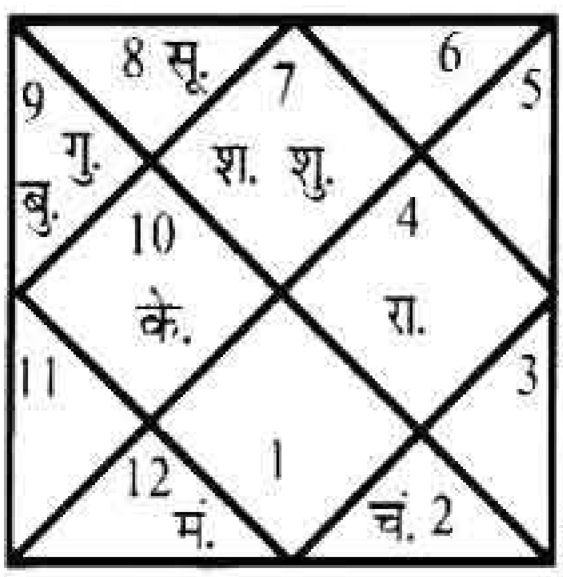
बारोनेस मार्गेट थेचर





जन्म तिथि-13.10.1928, जन्म समय-9.00, जन्म स्थल-लंदन (यू.के.)

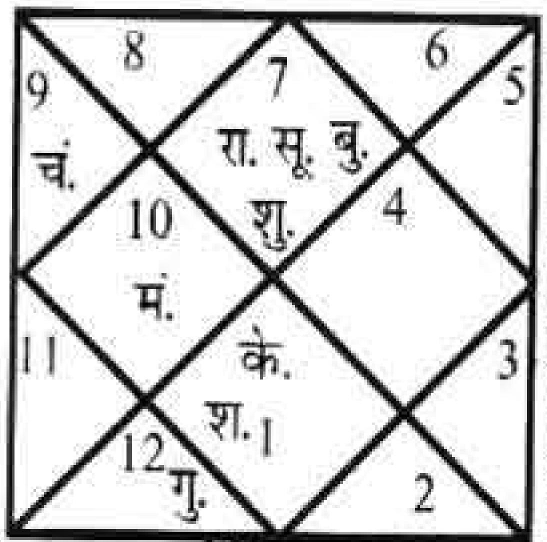
स्व. माधवराव सिन्धिया





जन्म तिथि-9.3.1945, जन्म समय-00.00 रात्रि, जन्म स्थान-ग्वालियर

श्री गोपीनाथ मुण्डे





(पुणे, उपमुख्यमंत्री) महाराष्ट्र 18.10.1939 समय 7.30 प्रात: मुम्बई।

प्रस्तुत कुण्डली महाराष्ट्र के पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता श्री गोपीनाथ मुंडे की है। इनका जन्म 18 अक्टूबर 1939 को प्रात: 7.30 पर बम्बई में हुआ। इनका जन्म "तुलालग्न" लग्न में शुक्र व सूर्य के साथ हुआ, फलत: ये जन्म से ही सिद्धांतवादी एवं स्वाभिमानी व्यक्ति थे। इनका जन्म केतु की दशा में हुआ। फलत: बचपन व युवावस्था संघर्ष में ही व्यतीत हुई।

इनकी कुंडली में राजयोग का प्रबल कारक ग्रह मंगल है जोकि दिग्बली एवं उच्च का होकर केंद्र में बैठा है। इस मंगल के कारण इस कुंडली में "रुचक योग" नामक राजयोग की सृष्टि हुई है जो कि पंचमहापुरूष योगों में से एक योग है। सन् 1995 के लगते ही इनका यह राजयोग प्रबल रुप से प्रभावी हुआ। कोई स्वप्न में ही नहीं सोच सकता था कि बंबई में कभी भाजपा का शासन होगा एवं गोपीनाथ मुंडे उसके उपमुख्यमंत्री बनेंगे।

"श्रीचंडमार्तड पंचांग" ने दीपावली 1994 को ही लिख दिया था कि आगामी चुनावों में शिवसेना एवं भाजपा गठबंधन उभरेगा। जब 18 मार्च 95 को ये पंक्तियां अक्षरश: सत्य हुई तो ये शब्द सोने से भी अनमोल हो गए।

उपरोक्त कुंडली हमें मराठी पत्रिका "ग्रहांकित" के फरवरी अंक से प्राप्त हुई। इस दृष्टि से इस समय श्री मुंडे को राहु की महादशा में बुध का अंतर चल रहा है। भाग्येश है तथा लग्न में "बुधादित्ययोग" करके बैठा है, फलत: बलवान् है। यह दशा श्री मुंडे के भाग्योदय की दशा है, जो कुछ इनको जीवन में अब तक न मिला, इस दशा में मिला।

राष्ट्रपति हिटलर (तानाशाह)

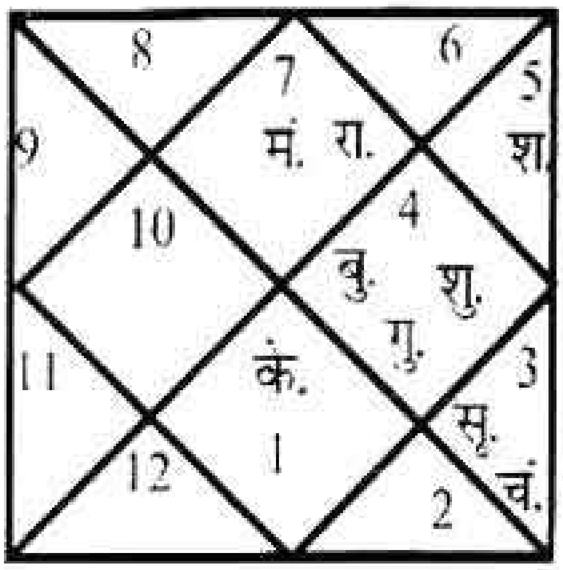
जन्म-20.4.1889, जन्म समय-18.30 प्रात, जन्म स्थान-जर्मनी

एकाधिक ग्रह जन्म लग्न को देखने से राजयोग हुआ।

सर्वैर्गगन-भ्रमणैर्दृष्टे लग्ने भवेन्महिपाल:।

बलिभि: सौख्यार्थ-युतो विगतभयो दीर्घजीवी च।

–मानसागरी, श्लोक 88/पृ. 233

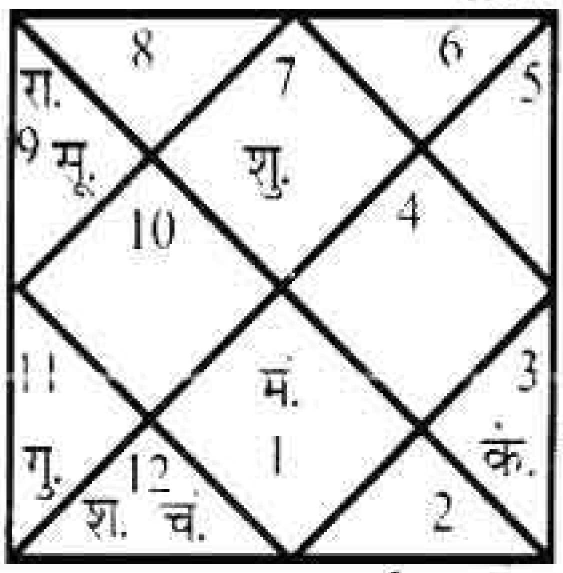




जन्म लग्न को संपूर्ण ग्रह देखते हो तो बलवान सौख्य व अर्थ से युक्त भयरहित राजयोग होता है। लग्नेश लग्न को देखने से 'लग्नाधिपतियोग' बना। उच्च का सूर्य, स्वगृही मंगल ने सप्तम में बैठकर जबरदस्त राजयोग की सृष्टि की है। उच्च का सूर्य एवं स्वगृही मंगल वाला व्यक्ति जीवन में किसी से भी दबता नहीं। कठोर अनुशासन एवं हुक्म चलाना इनकी जन्मजात प्रवृत्ति होती है। तानाशाह हिटलर की यही सबसे बड़ी विशेषता थी।

हिटलर की कुंडली में तृतीय स्थान से नवम भाव वाला **'वासुकी नामक कालसर्पयोग'** बना जिसके कारण अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए।

स्टालिन





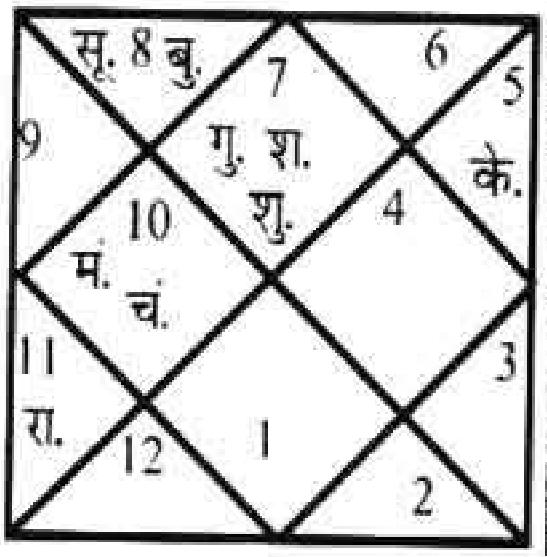
जन्म तिथि-31.12.1878, जन्म समय-02.00 (रात्रि), जन्म स्थान-सोवियत रूस।

प्रस्तुत कुंडली सोवयत गणराज्य (रूस) के महान् नेता स्टॉलिन की है। मानसागरी श्लोक 2 पृष्ठ 220 के अनुसार-

एक: शुक्रो जनमसमये लाभसंस्थे च केन्द्र
जातो वै जन्मराशौ यदि सहजगते प्राप्ते वा त्रिकोणे।
विद्या विज्ञान युक्तो भवति नरपति: विश्वविख्यात कीर्ति:
दानी मानी च शूरो हमगणसहित: मद्गजै से व्यमान:॥

केंद्र में तुला का अकेला शुक्र राजयोग करता है। फिर स्वगृही मंगल दशम भाव, लग्न एवं स्वराशि वृश्चिक को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। गुरु एवं शनि ने परस्पर राशि परिवर्तन किया। गुरु स्वग्रहाभिलाषी है तथा क्रमश: भाग्यस्थान एवं लग्नस्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।

सम्राट महान् अकबर





जन्म स्थान-अमरकोट (पाकिस्तान), जन्म तिथि-24.11.1542, जन्म समय-दोपहर 12.30।

मुगल सम्राट हुमायूं के पुत्र अकबर 14 वर्ष की छोटी आयु में ही हिन्दुस्तान के बादशाह बन गये। अकबर के मुख्य संरक्षक बेहराय खान ने सन् 1556 को पानीपत के युद्ध में हेमु को हटाकर अकबर को बादशाह घोषित कर किया। उस समय अकबर की मंगल महादशा चल रही थी। मंगल के कारण 'रुचकयोग' शनि के कारण 'शशयोग' व 'पद्मसिंहासन योग' ने अकबर को चक्रवर्ती सम्राट बना दिया।

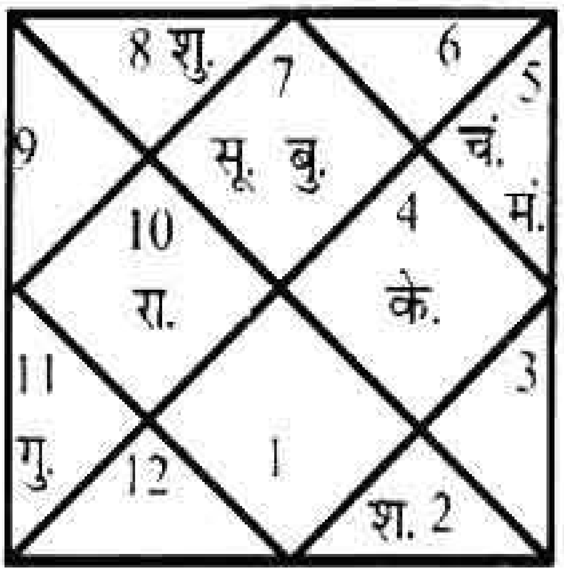
इसकी कुंडली की प्रमुख बात है कि अकबर की अनेक पत्नियां होते हुए भी उसके पुत्र नहीं था। पंचमस्थ राहु 'कालसर्पयोग' के कारण पुत्र संतति से बाधक था। फलत: जातक अनेक धार्मिक अनुष्ठान हुए। अकबर नंगे पांव दिल्ली में अजमेर गया और पुत्र के लिए दुआ मांगी। शिवलिंग की स्थापना की तब एक पुत्र हुआ-जहांगीर। अकबर का शासन (1556-1605) तक चला। उसने दिने-ईलाही धर्म चलाया एवं फतेपुर सीकरी का निर्माण किया। उसने राजपूत कन्याओं से विवाह किया तथा अपने दरबार में 'राजज्योतिषी' का पद स्थापित किया। अकबर ने भास्कराचार्य की 'लीलावती' का उर्दू व फारसी में अनुवाद किया। अकबर के समय में 'ताजिक नीलकण्ठी' का भरपूर प्रचार हो चुका था।

केंद्र या त्रिकोण में बुध, बृहस्पति, शुक्र इनमें से कोई भी ग्रह हो तो धर्म, धन, विद्या, यश, कीर्ति, लाभ देने वाला राजयोग होता है।

केन्द्रत्रिकोणे बुधजीवशुक्रा: स्थितान्तराणां यदि जन्मकाले।
धर्मार्थ-विद्या-यश-कीर्ति-लाभ: शांत, सुशील स नराधिप: स्यात्॥

जन्म समय बुध, बृहस्पति और शुक्र केंद्र या त्रिकोण में हों तो धर्म, अर्थ, विद्या, यश, कीर्ति, लाभ, शांत स्वभाव और सुंदर शील इनसे युक्त राजयोग होता है। लग्न में शनि उच्च का, गुरु, एवं स्वगृही तथा चतुर्थ में उच्च का मंगल ने इन्हें बादशाह के पद पर पहुंचाया एवं कीर्ति प्रदान की। पंचम भाव में राहु के कारण कुपुत्र से ये जीवन भर दु:खी रहे। इस कुंडली में एकादश स्थान से लेकर 'विषधर नामक पूर्ण कालसर्पयोग' है। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव इनके संपूर्ण जीवन पर पड़ा।

सम्राट औरंगजेब

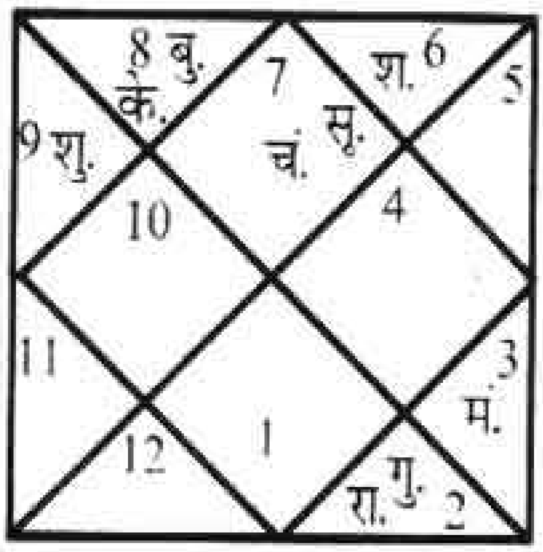




जन्म समय-7.18 प्रात:, जन्म तिथि-14.10.1618 जन्म स्थान-उज्जैन (म. प्रदेश)।

मुगल सल्तनत का अन्तिम शासक औरंगजेब का जन्म 14.10.1618 प्रात: 7. 18 मिनट पर तुलालग्न के 19 अंशों में हुआ। इतिहास में औरंगजेब का कृतघ्न पुत्र तथा अभागा पिता के रूप में याद किया जाता है। मंगल की महादशा तथा राहु व शनि के अन्तर में औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहां को आगरा किला में कैद कर खुद शासक बन बैठा। इतना ही नहीं अपने पिता को नित-नई यातनाएं देकर अन्न व दाल के लिए तरसा-तरसा कर मार डाला। पंचम स्थान में गुरु होने के कारण इसके पांच पुत्र थे। औरंगजेब ने अपने दो पुत्रों की खुद ही हत्या कर दी, एक पुत्री को देश निकाला दे दिया। ईस्वी सन् 1662 व 1680 के मध्य औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता चरम सीमा पर पंहुची। उसने हिन्दुओं पर 'जजिया कर' लगाया। यह अपने प्र-पितामह अकबर की नीतियों के खिलाफ था। यह 90 वर्ष तक जिया 1705 में बीमार पड़ा। गृहकलह के चलते इसके पुत्र ने ही इसे क्रूर यातना के साथ मारा। इसके 17 पोते थे। सब इसके दुश्मन थे। पर इसका कोई भी वंशज गद्दी पर काबिज नहीं हुआ। मुगल साम्राज्य बिखर गया। इसकी मृत्यु 1707 में हुई। फिर 1719 में मोहम्मद शाह नामक अन्य व्यक्ति दिल्ली की गद्दी पर बैठा। वीर दुर्गादास राठौड़ (जोधपुर) एवं छत्रपति शिवाजी ने औरंगजेब से लोहा लिया। मुगल साम्राज्य के बाद हिन्दुस्तान पर अंग्रेजों का शासन आया।

अंग्रेजों से लोहा लेने वाली रणचण्डी रानी लक्ष्मीबाई





शुक्र, बुध, बृहस्पति-इनमें से कोई भी ग्रह केंद्र में हो और दशम मंगल में हो तो 'कुलदीपक' नाम का राजयोग होता है। ऐसा मानसागरीकार कहते हैं। परंतु यहां मंगल भाग्य भाव में बैठा अपनी उच्च राशि को देख रहा है। फलतः झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई के आत्मबल का कोई मुकाबला नहीं था, उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में वो टक्कर ली कि अंग्रेजों के दांत खट्टे हो गए।

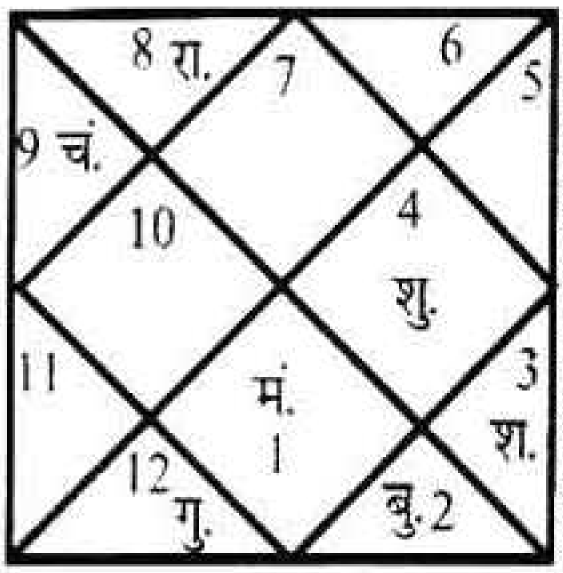
उच्च का शनि लग्न में चंद्रमा के साथ होने पर उच्च श्रेणी का 'शश नामक' राजयोग बनाया। पर शनि+चंद्र के कारण ग्रहण योग बना, लग्न में बुध+केतु दो परस्पर शत्रुग्रहों की युति से 'शास्त्रहंता योग' बना। गुरु के साथ राहु होने के कारण चांडाल योग की सृष्टि हुई, अपनों ने ही धोखा दिया और महारानी अंतिम समय तक बड़ी बहादुरी से लड़ती हुई वीरगति को प्राप्त हुई। विश्व के इतिहास में महारानी लक्ष्मीबाई जैसा व्यक्तित्व आज तक नहीं हुआ। इस कुंडली में अष्टम भाव से द्वितीय तक की ग्रह स्थिति के कारण 'आंशिक कालसर्पयोग' की सृष्टि हुई जिसका प्रभाव इनके जीवन पर अमिट छाप छोड़ गया।

पंचमेश शनि बारहवें होने से पुत्र पर आयुष्य का संकट आया। जिसका मुकाबला महारानी ने बड़ी वीरता से किया। तुला का सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। इसलिए महारानी राजसिंहासन प्राप्त नहीं कर पाई।

करिश्मा कपूर

शुक्र ने दी करिश्मा को बेपनाह खूबसूरती एवं सफलता

करिश्मा अपने जीवन के 28वें खूबसूरत वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। 25 जून, 1975 को सुप्रसिद्ध फिल्म स्टार रणधीर कपूर एवं अभिनेत्री बबीता के कोख से 'तुला लग्न' और 'धनुराशि' में जन्मी करिश्मा का घरेलू नाम 'लोलो' था। 50 से अधिक महत्वपूर्ण मैग्जीन के मुखपृष्ठ पर छपी करिश्मा ने प्रिन्ट मीडिया एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया को अपनी खूबसूरती व ग्लैमर के चकाचौंध से मोहित कर रखा है। तुला





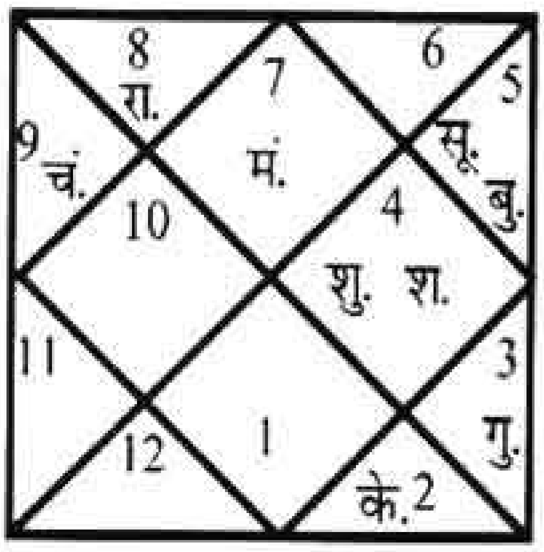
लग्न के माध्यम से कुदरत ने उसे सुंदरता के सांचे में ढाला। वही लग्नेश शुक्र ने केंद्रस्थ होकर करिश्मा की सुंदरता, सौन्दर्य एवं अभिनय की प्रतिभा में चार चांद लगा दिये। शुक्र चंद्रमा की राशि में है और चंद्रमा धनुराशि में है, जिसका स्वामी बृहस्पति इनकी कुण्डली में स्वगृही है। नवमांश में बृहस्पति, चंद्र एवं मंगल वर्गोत्तमी है।

अभिनय का गुण करिश्मा को परम्परागत पैतृक धरोहर के रुप में प्राप्त था। फिर भी इन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत बकायदा संगीत एवं नृत्य कॉलेज में ग्रेजुएशन प्राप्त करके प्रारम्भ की। सन् 1994 में 19 वर्ष की आयु में ही इन्होंने फिल्मी दुनिया में प्रवेश कर लिया। इस समय मंगल की दशा चल रही थी। इनकी अभिनय प्रतिभा ने सफलता के चरण छू लिए। 21 वर्ष की आयु में ही करिश्मा को 'सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री' का फिल्म अवार्ड-'राजा हिन्दुस्तानी' के रिलीज होने पर मिला। यही से इनके उत्तरोतर उत्तम कैरियर की शुरुआत सोने की कलम से लिखी गई करिश्मा को राहु की महादशा लगी। राहु जो इनके धन स्थान में है यात्रा कराने लगा तथा यात्राओं के द्वारा धन बरसने लगा। वृश्चिक का राहु, मंगल तुल्य कार्य करने लगा। मंगल जिसके कारण इनकी कुंडली में 'मालव्य नामक' महान् राजयोग बना। करिश्मा को 1997 में लक्स जी सिने से फिर श्रेष्ठ अभिनेत्री अवार्ड से नवाजा गया और इसके साथ ही पुन: फिल्मफेयर अवार्ड सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री 'दिल तो पागल है' में मिला। इस समय मंगल में चंद्रमा का अन्तर चल रहा था। इसके साथ ही 'साजन चले ससुराल', 'जीत, 'राजा हिन्दुस्तानी, 'युद्ध' की बाक्स ऑफिस सफलता ने बालीवुड की दुनिया में तहलका मचा दिया। 22 वर्ष की आयु तक पहुंचते-पहुंचते करिश्मा को इतनी उत्साहवर्धक सफलताएं मिली जितनी किसी को भी उम्मीद नहीं थी। सितारों ने अपना काम किया। करिश्मा अब नई फिल्मों को साइन करने के लिए 75 लाख से एक-एक करोड़ रुपये की डिमाण्ड करने लगी। हर माह अब उनकी नई फिल्मों के कान्ट्रेक्ट होने लगे। ज्यादा समय विदेशी शूटिंग में बीतने लगा। इन्हीं दिनों करिश्मा व अभिषेक बच्चन के प्रेम प्रसंग सूर्खियों में छपने लगे। अमिताभ बच्चन ने एक भव्य समारोह के अन्दर करिश्मा के सगाई के साथ विवाह

की घोषणा कर दी परंतु किस्मत को कुछ और मंजूर था। राहु की महादशा में शनि के अन्तर ने यह सगाई तोड़ दी। करिश्मा की कुंडली पूर्णत: मांगलिक है। ऐसा होना इसके लिए एक शुभ घटना थी क्योंकि मांगलिक कुंडली वालों का एक सगाई होकर टूटना या विवाह होकर छूटना आने वाले जीवन साथी के लिए शुभ संकेत है।

करिश्मा को इस समय राहु की महादशा में शनि और उसमें सूर्य का प्रत्यन्तर चल रहा है फलत: यह शत्रुदशा है इस समय कुछ बदनामी भी होगी तथा सफलता भी संदिग्ध रहेगी। यह समय 9.8.2003 तक है इसके बाद शनि में चंद्रमा का प्रत्यन्तर लगेगा। चंद्रमा दशमेश है और गुरु की राशि में बैठा हुआ भाग्यभवन की पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। यह समय 25.12.2003 तक हैं जिसमें करिश्मा के लिए सफलता के नये द्वार खुलेंगे।

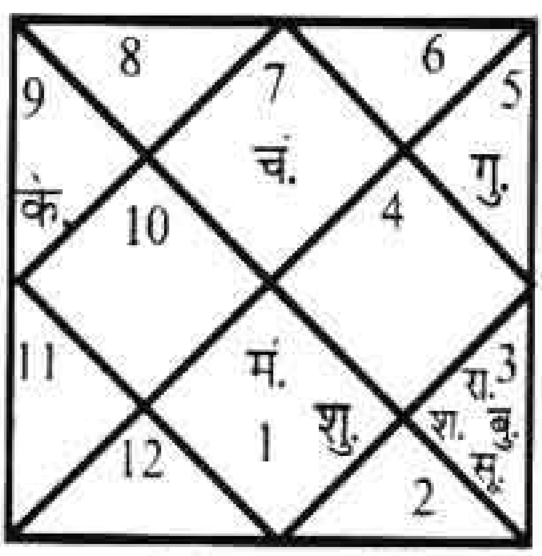
स्व. राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा





जन्म तिथि-19.8.1918, प्रात: 10.30, जन्म स्थान-भोपाल (म.प्र.)

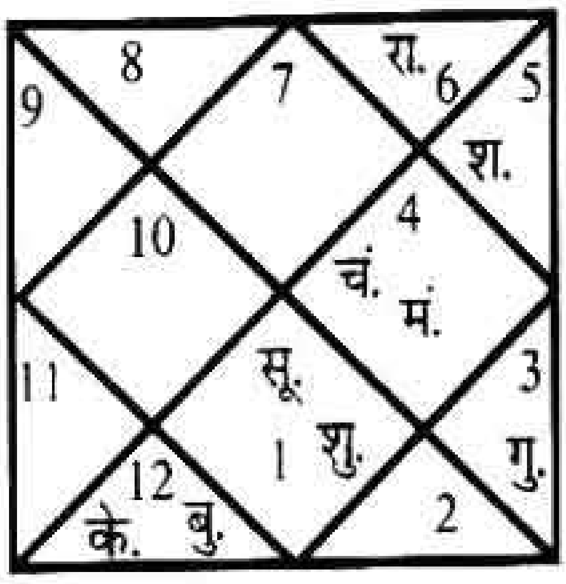
प्रधानमंत्री श्रीलंका श्रीमती चन्द्रिका कुमार तुंगे





जन्म स्थान-श्रीलंका जन्म तिथि-29.6.1945, जन्म समय-दोपहर 14.30

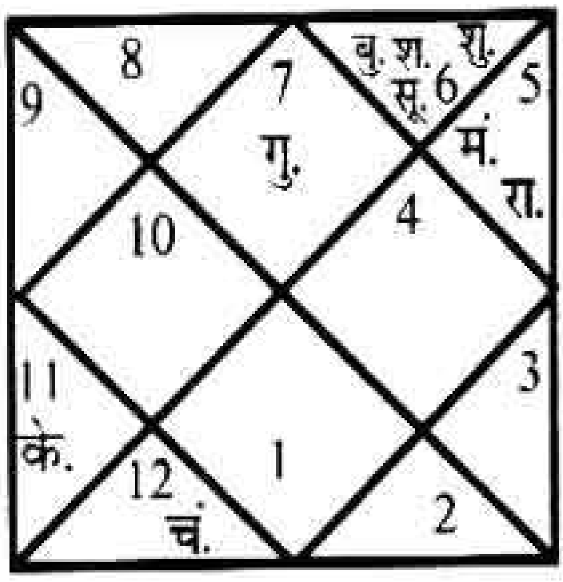
लारा दत्ता





भारत सुन्दरी, जन्म तिथि-6.4.1978, जन्म समय-सायं 19.30

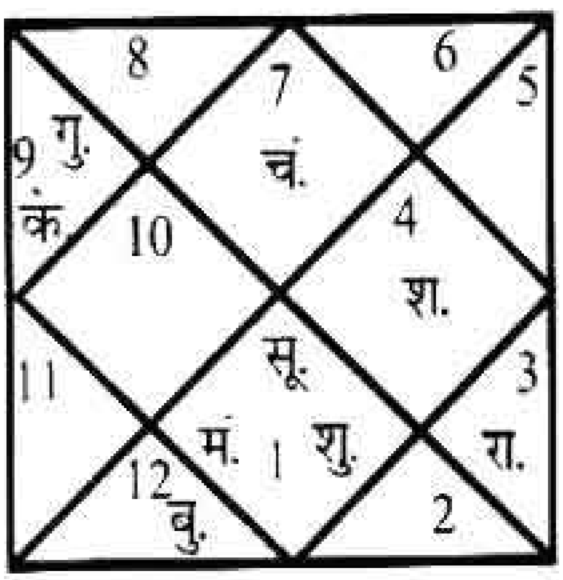
अभिनेता देवानन्द





जन्म स्थान-गुरदासपुर, जन्म तिथि-26.9.1923, जन्म समय-दोपहर 9.30

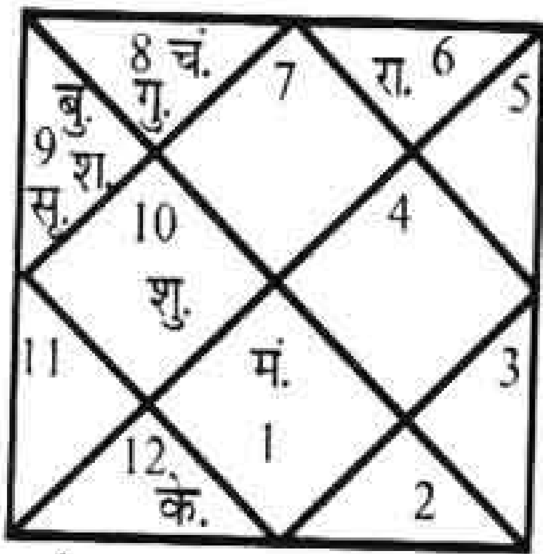
चार्ली चैप्लीन (हास्य अभिनेता)





जन्म स्थान-लन्दन, जन्म तिथि-16.4.1889, जन्म समय-20.00

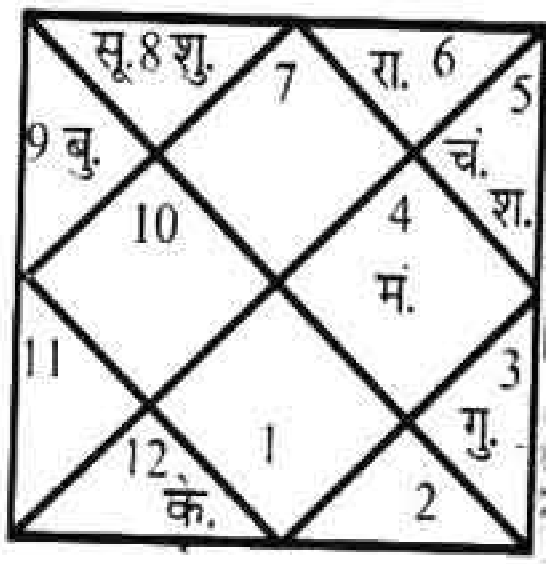
श्री कपिलदेव





क्रिकेट कैप्टन, जन्म स्थान-चंडीगढ़, जन्म तिथि-6.9.1959, जन्म समय-2.20 रात्रि।

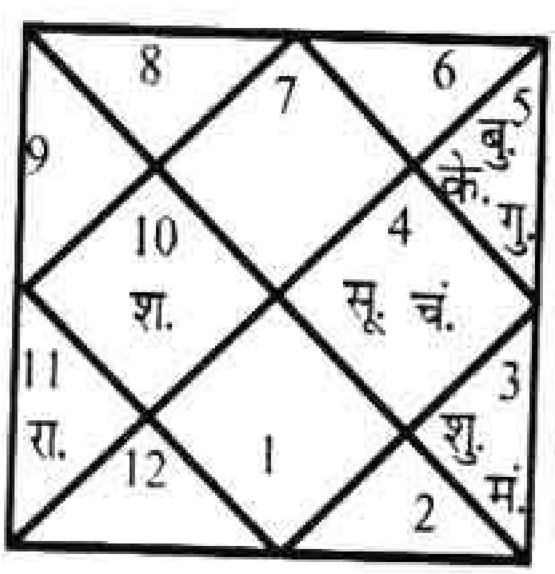
श्री अजीत आगरकर





जन्म तिथि-4.12.1977

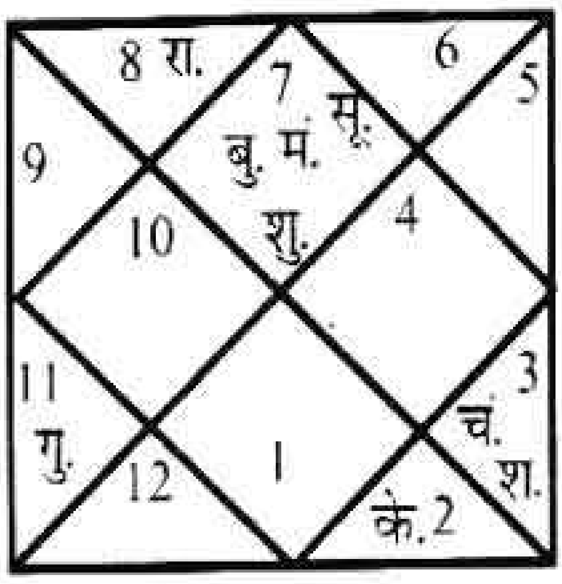
अभिनेत्री मीना कुमारी





जन्म स्थान-मुम्बई, जन्म तिथि- 1.12.1932, जन्म समय-11.55

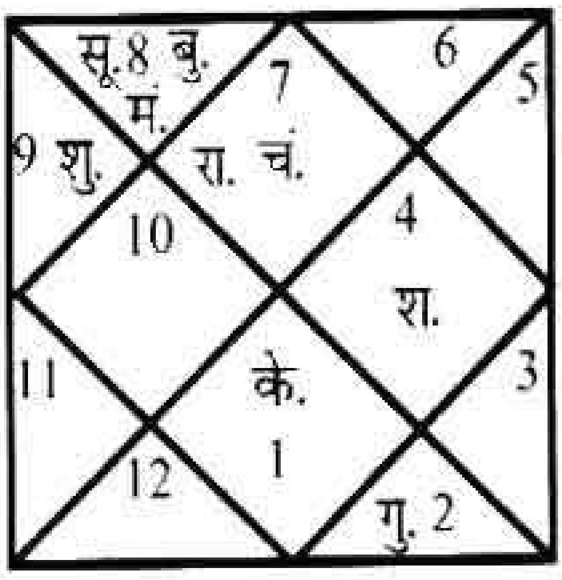
अभिनेत्री तब्बू





जन्म स्थान-मुंबई, जन्म तिथि- 4.11.1974, जन्म समय-7.00 प्रातः

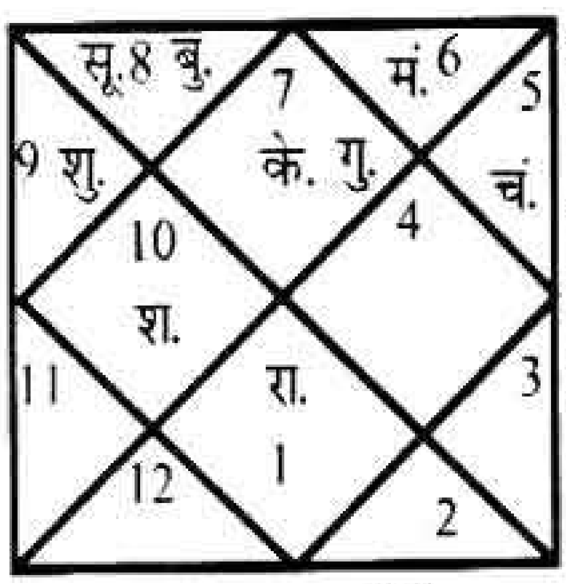
फिल्म अभिनेत्री रिंकी खन्ना





जन्म स्थान-दिल्ली, जन्म तिथि-20.11.1976, जन्म समय-4.46 प्रातः

विंस्टन चर्चिल

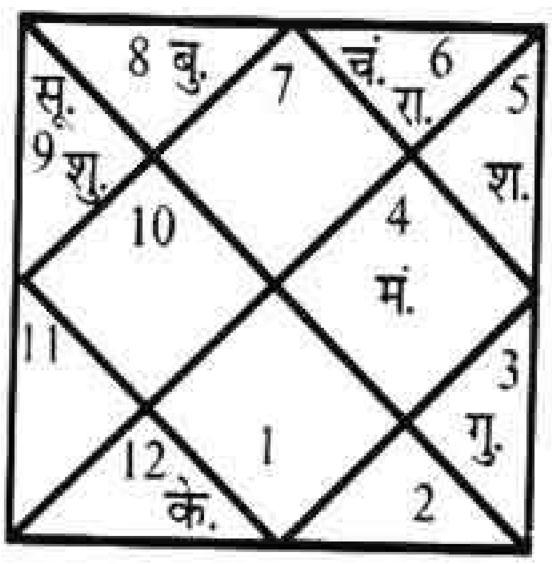




जन्म स्थान-लन्दन, जन्म तिथि-30.11.1874, जन्म समय-5.00

प्रस्तुत कुंडली के प्रधानमंत्री सर विस्टन चर्चिल की है। ज्योतिष शास्त्रानुसार लग्न से या अन्य किसी भी स्थान से क्रमशः सब ग्रह होने से 'एकावली नामक' श्रेष्ठ राजयोग होता है। जैसा कि राष्ट्रपति अय्यूब खान, प्रधानमंत्री मोरार जी देसाई, गृहमंत्री यशवंतराव चव्हाण की कुंडली में यही योग मुखरित हुआ। यहां लग्नस्थ बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से भाग्यस्थान को देख रहा है। लग्नेश शुक्र ने बृहस्पति के साथ राशि परिवर्तन योग बनाया है। राजयोगकारक शनि स्वगृही होकर केंद्रस्थ में बैठा राजयोग बना रहा है तथा अपनी उच्च राशि (लग्न) को पूर्ण ताकत प्रदान कर रहा है। इसी प्रकार मंगल बुध के घर में तथा बुध मंगल के घर में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठा है।

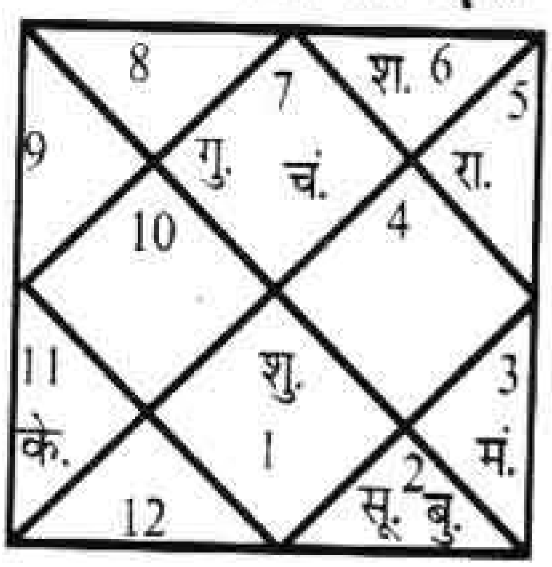
बिपाशा बसु (अभिनेत्री)





जन्म तिथि–1 जनवरी 1978।

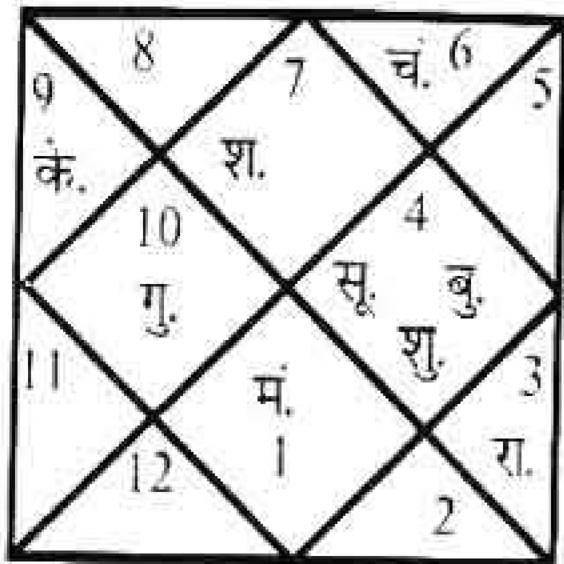
स्व. श्री एन. टी. रामाराव





जन्म स्थान-निम्माकर (आंध्र प्रदेश), जन्म 28.5.1923 सायं: 16.23।

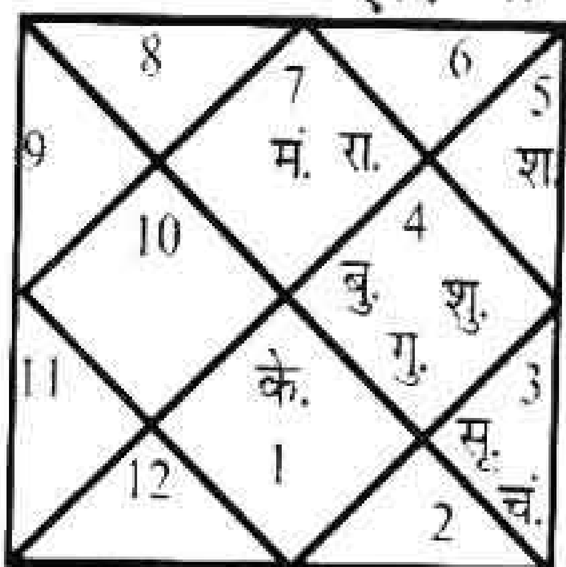
फिदेल कास्ट्रो





जन्म तिथि-13.8.1926, जन्म समय-11.10, जन्म स्थान-हवाना (क्यूबा)

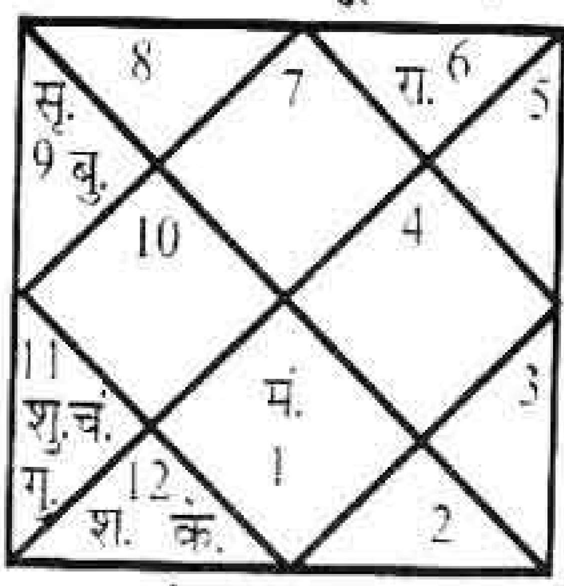
एस. वी चव्हान





जन्म स्थान-पैथन (महाराष्ट्र), जन्म तिथि- 14.7.1920, जन्म समय- दोपहर 12.30

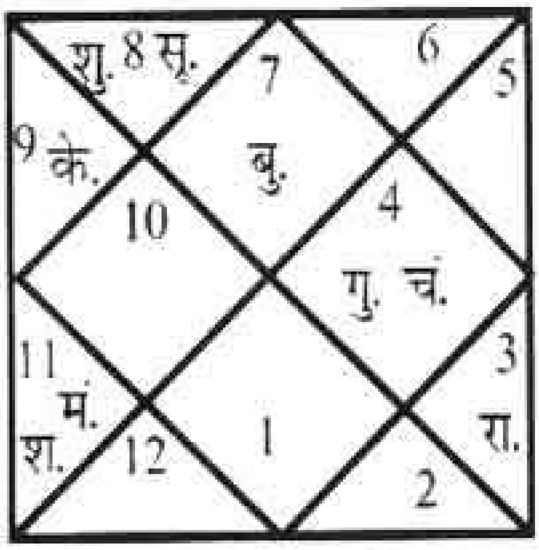
न्यूटन (वैज्ञानिक)





जन्म स्थान-इंग्लैण्ड, जन्म तिथि- 25.12.1642, जन्म समय-2.00 प्रात:।

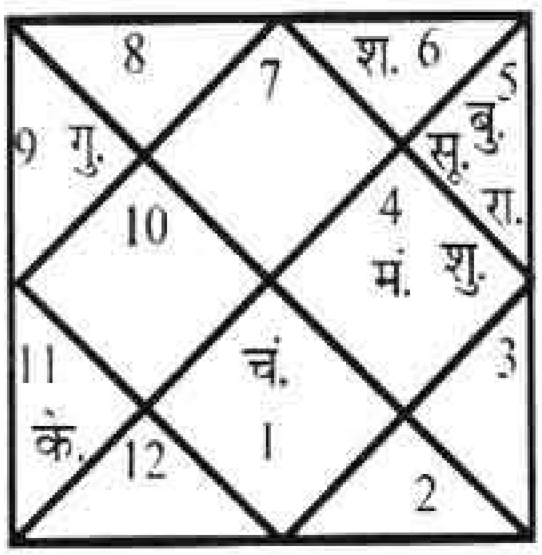
हरिवंश राय बच्चन (कवि)





जन्म स्थान-प्रयाग, जन्म तिथि-29.11.1907, जन्म समय-5.30 प्रातः।

जहांगीर (प्रेमी) सम्राट

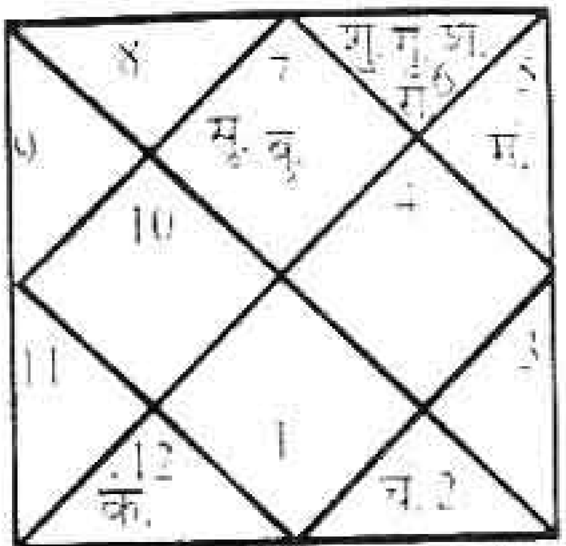




जन्म तिथि-30.8.1559, जन्म समय-14.20, जन्म स्थान-आगरा (उत्तर प्रदेश)

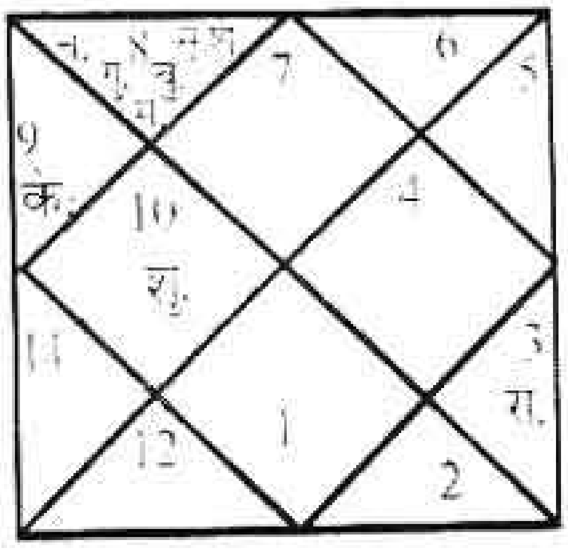
जहांगीर नामा के अनुसार 30 अगस्त 1559 को राजधानी आगरा में तुलालग्न के 24 अंशों में जहांगीर का जन्म जोधाबाई के कोख से हुआ। जहांगीर अकबर का नालायक बेटा था। उसने पिता के खिलाफ विद्रोह किया। रसिक मिजाज का होने के कारण उसने अपनी दासी नूरजहां से विवाह पिता की मर्जी के खिलाफ किया। जहांगीर के कमजोर नेतृत्व से मुगल सल्तनत का पतन शुरू हुआ। जहांगीर के भी पंचमस्थ केतु के कारण संतान समस्या रही। इसके भी अनेक पत्नियां थी। पत्थर-पत्थर को भगवान की तरह पूजने के बाद दुआ कामयाब हुई और इसके भी एक पुत्र हुआ-शाहजहां। इसे बचपन में चेचक हो गई थी। पर बच गया। इसे लोग 'शाहशूजा' के नाम से भी पुकारते थे। शाहजहां अपने पिता की नालायक औलाद निकला। इसने भी अपने पिता के खिलाफ तलवार उठाई।

श्री नाथूराम मिर्धा



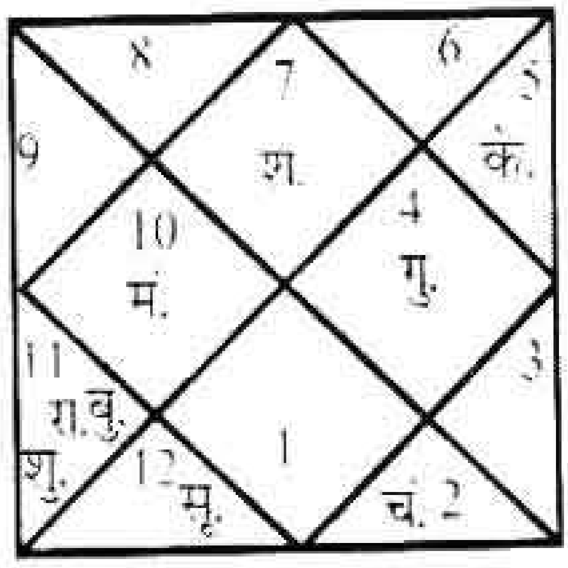
जन्म-20.10.1921, जन्म समय-7.00 प्रात, जन्म स्थान-कुचेरा (नागौर)

स्व. हैदरअली



जन्म तिथि-8.12.1722

पं. कुंजीलाल दुबे (विधानसभाध्यक्ष) और राजयोग



जन्म तिथि-9.3.1896, जन्म समय-21.30 (रात्रि), जन्म स्थान-मध्यप्रदेश

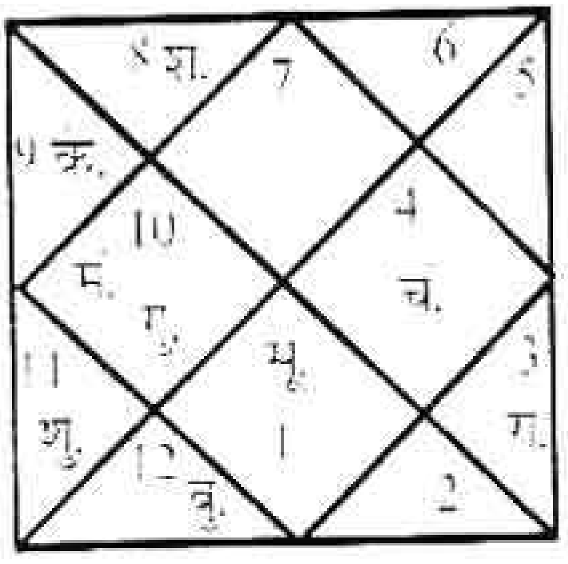
प्रस्तुत कुंडली मध्य प्रदेश के विधानसभाध्यक्ष पं. कुंजीलाल दुबे की है। शास्त्रकार कहते हैं कि-

जनयति नृपमेकोऽप्युच्चगो मित्रदृष्टः।
प्रचुरधनसमेतं मित्रयोगाच्च सिद्धम्॥

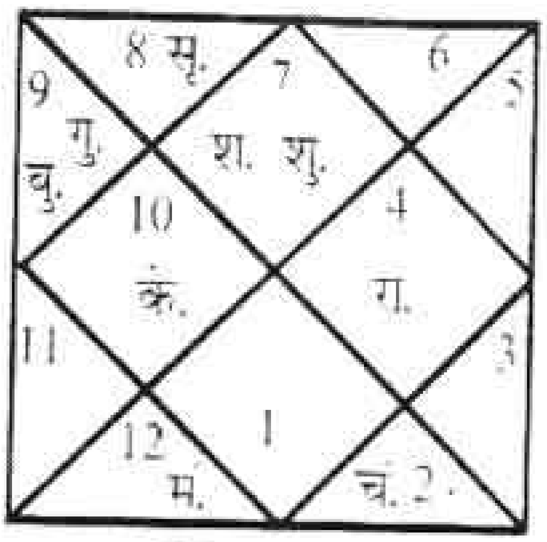
-सर्वार्थ चिंतामणि श्लोक 5/पृ. 165

एक भी ग्रह उच्चगत मित्र ग्रह हो तो बहुत धनसहित मित्र मंडली में संपन्न ऐसा राजयोग होता है परन्तु यहां तो शनि, मंगल चंद और गुरु चार ग्रह उच्च के हैं उच्चाभिलाषी हैं। अत: यह बहुत ही यशस्वी एवं प्रतिष्ठावर्द्धक राजयोग की दृष्टांत कुंडली है।

एलिजाबेथ टेलर (हॉलीवुड)



श्री खेत सिंह राठौड़



कानून मंत्री (राजस्थान), जन्म तिथि-11.12.1924, प्रात: 3.30

❑❑❑